ISSN: 2348-1390

NEW MAN

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES

VOL. 8 ISSUE 4 APRIL 2021

A REFEREED AND INDEXED E-JOURNAL

IMPACT FACTOR: 4.321 (IIJIF)

Chief Editor

Dr. Kalyan Gangarde

Associate Editor

Dr. Sadhna Agrawal

NEW MAN PUBLICATION

Full Journal Title:	NEW MAN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
FREQUENCY:	MONTHLY
Language:	ENGLISH, HINDI, MARATHI
Journal Country/Territory:	INDIA
Publisher:	New Man Publication
Publisher Address:	New Man Publication Ramdasnagar, Parbhani -431401 Mob.0 9730721393
Subject Categories:	LANGUAGES, LITERATURE, HUMANITIES, SOCIAL SCIENCES, SCIENCE & OTHER RELATED SUBJECTS
Start Year:	2014
Online ISSN:	2348-1390
Impact Factor:	**4.321 (IIJIF)**
Indexing:	Currently the journal is indexed in: Directory of Research Journal Indexing (DRJI), International Impact Factor Services (IIFS) Google Scholar

NMIJMS DISCLAIMER:
Academic facts, views and opinions published by authors in the Journal express solely the opinions of the respective authors. Authors are responsible for their content, citation of sources and the accuracy of their references and biographies/references. The editorial board or Editor in chief cannot be held responsible for any lacks or possible violations of third parties' rights.

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

From the Editor's Desk …….

We are happy to present Volume 8, Issue 4 (April 2021) of the *New Man International Journal of Multidisciplinary Studies*. This is a peer-reviewed and indexed monthly journal that aims to share quality research from different subjects in a simple and meaningful way.

This issue includes a variety of articles from social sciences, literature, economics, and science. The first paper discusses how the market system and media influence people's thinking and create social and economic problems. Other important articles explain the background of the Indian Constitution and study the present situation of India-China relations. These topics help us understand both our history and current global issues.

Some papers in this issue focus on literature and culture. They discuss Hindi stories, classical texts, and artistic ideas. These studies show how literature reflects society and human emotions. There is also an article on the works of Amitav Ghosh, which talks about identity and human experiences in modern times.

This issue also includes articles on important social and philosophical ideas. One paper explains Mahatma Gandhi's idea of an equal society, which is still very important today. Another paper studies the psychology of pandemics, helping us understand how people think and behave during difficult times like health crises.

In addition, there are articles on economic issues, including the impact of the global economic crisis on India. These studies are useful for understanding the challenges faced by our economy. The issue also includes a paper on quantum computing, which introduces new developments in modern technology.

We sincerely thank all the authors for their valuable research and the reviewers for their careful evaluation. We are also grateful to our editorial board and supporting institutions for their continuous support.

We hope this issue is useful for students, researchers, and readers. We invite you to read, learn, and share your ideas with us.

— Dr. Kalyan Gangarde
Editor
New Man International Journal of Multidisciplinary Studies

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

CONTENTS

1. बाजार वाद, मीडिया का मनोविज्ञान एवं सामाजिक आर्थिक समस्याएं
डॉ. रज़ी फराज़ ख़ान **05**

2. भारत के संविधान की पृष्ठभूमि
डॉ० शुक्ला ओझा **09**

3. भारत चीन संबंध वर्तमान परिपेक्ष में
डॉ कल्पना वैश्य **13**

4. हिंदी बाल कहानी और प्रकाष मनु
डॉ मुक्ता अग्रवाल **17**

5. महावीरचरितम् में पात्र योजना
डॉ. नरोत्तम **22**

6. भारत में मुद्रा एवं विनिमय का प्रारंभिक स्वरूप
डॉ० प्रवीण ओझा **29**

7. समतामूलक समाज की अवधारणा और गाँधी
डॉ. चित्रा माली **32**

8. महामारियों का मनोविज्ञान
डॉ.अमित राय **35**

9. भारतीय आधुनिक चित्रकलेतील व्यक्तिचित्रण
जाधव अंबादास नारायण **38**

10. The Discourse of Identity in Amitav Ghosh's *The Glass Palace & The Circle of Reason*
Usha Sahu and Dr. Ravikant Dwivedi **40**

11. A Study of Quantum Computing and Its Applications in Modern Technology
Dr. Upendra Singh **48**

12. A Study of World Economic Crisis and its Impact on India
Dr. Sachin Prakash Pawar **66**

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

1.

बाजार वाद, मीडिया का मनोविज्ञान एवं सामाजिक आर्थिक समस्याएं

डॉ. रज़ी फराज़ ख़ान
सहायक प्राध्यापक (मनोविज्ञान)
शासकीय एम.एल.बी. महाविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

भूमिका-

बाजारवाद लाभ-हानि एवं क्रय-विक्रय पर आधारित होता है, उत्पाद विक्रय के लिए मीडिया के माध्यम से विज्ञापन जनसामान्य तक पहुंचाए जाते हैं| विज्ञापन इस प्रकार से बनाए जाते हैं कि समाज में आवश्यकताएं उत्पन्न की जाये, उपभोक्ता की मनोवैज्ञानिक वृत्ति को केंद्रित करते हुए विज्ञापनो का निर्माण किया जाता है, ताकि बाजार में वस्तुओं की मांग को अधिक प्रभावपूर्ण रूप से बढ़ाया जा सके, व्यक्ति के विचारों एवं आदतों को विज्ञापनों के माध्यम से नियंत्रित करने का प्रयास किया जाता है, जिन वस्तुओं की हमें सामान्य जीवन में आवश्यकता नहीं है वह भी हमें अपने जीवन में बहुत अधिक उपयोगी लगने लगे ऐसा प्रयत्न किया जाता है |

प्रस्तुत शोधपत्र में बाजारवाद एवं मीडिया द्वारा जनित मनोविज्ञान से उत्पन्न सामाजिक आर्थिक समस्याओं का अध्ययन किया गया हैं |

प्रस्तावना-

बाजारवाद वह मत या विचारधारा जिसमें जीवन से संबंधित हर वस्तु का मूल्यांकन केवल व्यक्तिगत लाभ या मुनाफ़े की दृष्टि से ही किया किया जाता है | मुनाफ़ा केंद्रित तंत्र को स्थापित करने वाली विचारधारा एवं हर वस्तु या विचार को उत्पाद समझकर बिकाऊ बना देने की विचारधारा ही बाजारवाद हैं | इस बाजारवाद व पाश्चात्य मानसिकता के प्रभाव वाले दौर में भी हमको अपनी गौरवशाली भारतीय संस्कृति को बचाये रखना है। वैसे आज देश में अलग तरह का बाजारवाद चरम पर है जिसका आधार बहुत ही तेजी से दिनप्रतिदिन मजबूत होता जा रहा है। लेकिन उसके बाद भी शहरी परिवेश में धर्म और भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य शैली कुछ ज्यादा हावी हुई है, लेकिन अच्छी बात यह है कि देश के ग्रामीण परिवेश वाले क्षेत्रों में अब भी प्राचीन भारतीय संस्कृति का बोलबाला है, उसकी नींव मजबूत है। लेकिन बाजारवाद के प्रभाव से वो भी अछूती नहीं रही है।

आज बाज़ारवाद ने नैतिक मुल्ये एवं संस्कारों की परिभाषा को बदल दिया है | बाजारवाद के चलते अपने ही देश में अपनी भाषा हिन्दी, अपना साहित्य और अपनी धर्म-संस्कृति के प्रति आत्म गौरव का भाव राष्ट्रवाद के इस दौर में भी पहले वाला नहीं बचा है। हकीकत में धरातल पर स्थिति यह है कि पूरे देश में पाश्चात्य संस्कृति के बाजारवाद को आधुनिक व विकसित होने की पहचान के रूप में स्वीकार करने का माहौल बन गया है। बाजारीकरण, वैश्वीकरण व नई तकनीकी की ताकत को देखकर युवाओं में उसके प्रति आकर्षित होने की भगदड़ मची हुई है। लेकिन उस भगदड़ में भी हमको ध्यान रखना होगा कि हम सामंजस्य बनाकर अपनी जड़ों से मजबूती से जुड़े रहें और इन जड़ों को मजबूत रखने के लिए हम सभी को समयानुसार ठोस कारगर प्रयास करते रहना होगा। सूचना प्रौद्योगिकी के ताकतवर समय में हमको अपने बच्चों को अपने गौरवशाली शानदार अतीत से जोड़कर रखना होगा। क्योंकि इंसान स्वयं इतनी जल्दी नहीं बदलता उसको उसकी महत्वाकांक्षा और परिस्थितियां जल्दी बदलतीं हैं। आज देश में बाजारवाद की अंधी दौड़ में हर वस्तु बिक्री के लिए उपलब्ध है

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

हर किसी पर अजीब-सा रेट का बोर्ड लगा है, जो गंभीर स्थिति है। इस हालात को बदलना होगा, हर चीज का मोल नहीं लगाया जा सकता यह हम सभी को समझना होगा।

बाजारवाद एवं मीडिया के मनोविज्ञान से उत्पन्न सामाजिक आर्थिक समस्याएं

बाजारवाद लाभ-हानि एवं क्रय-विक्रय पर आधारित होता है, आज जीवन के व्यस्ततम दौर में बाजारवाद और इसकी ताकतवर व्यवस्था के प्रभाव से समाज का कोई भी वर्ग अछूता नहीं रहा है। हालात यह हो गये हैं कि धर्म की संस्कृति व त्यौहारों की बेहद गौरवशाली परम्पराएं भी बाजारवाद के आसान शिकार बन गये हैं। देश में स्थिति ऐसी हो गयी है कि अब तो हम लोग किसी दूसरी संस्कृति व विचारों को भी बिना सोचे समझे बाजार के जादू के चलते अपना रहे हैं। बाजारवाद ने सभी सीमाओं को तोड़ने का काम किया है। लेकिन विचारयोग्य बात यह है कि देश में बन गये बाजारवाद और अर्थवाद की संस्कृति के इस संक्रमण काल में भी भारतीय संस्कृति व मूल्यों के प्रति समर्पित एवं संवेदनशील बने रहना बहुत बड़ी चुनौती की बात हो गयी है। हालांकि यह बाजारवाद की मेहरबानी है जिसने के भारत में ऐसे हजारों-लाखों युवा तैयार कर दिए हैं, जो इस बाजारवाद से रोजाना लाखों-करोड़ों कमा रहे हैं और उसी कमाई पर दिये गये टैक्स का पैसा खर्च कर राष्ट्र विकास के नित नये आयाम स्थापित कर रहा है।

विज्ञापनों के माध्यम से हीं सामाजिक समस्याओं का जन्म होता है, जब व्यक्ति अपनी आय से अधिक व्यय, अपने जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए करना चाहता है, दिखावे एवं चमक धड़क वाले सामाजिक स्तर को प्राप्त करने के लिए समाज में अपराध एवं कुप्रथाओं को जन्म देता है | समाज में आर्थिक असमानताये, अपराध एवं बुराईया बढ़ती है | विज्ञापन के माध्यम से किसी वस्तु की आवश्यकता को प्रभावपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया जाता है, ताकि व्यक्ति उसे खरीदने के लिए विवश हो जाये कुछ तथाकथित उदाहरण इस प्रकार है :-

1. गहनों के विज्ञापन में स्त्री को दुल्हन के रूप में सजा-धजा कर प्रस्तुत किया जाता है, लेकिन विज्ञापन का दूसरा पक्ष यह है कि इस प्रकार के विज्ञापन के माध्यम से समाज में गहनों के रूप में दहेज नामक कुप्रथा को प्रबल किया जाता है | क्या यह आवश्यक नहीं है कि दहेज प्रथा को रोकने के लिए इस प्रकार के विज्ञापनों पर बैन लगाया जाये ?
2. इसी तरह गाड़ियों के विज्ञापन हेतु विवाह समारोह के अवसर पर वर को मोटरसाइकिल या कार की चाबी देते हुए गाड़ी के साथ दिखाया जाना क्या सही है?
3. सफाई के विज्ञापन में दिखाया जाता है कि "ये टीवी शादी में मिला था 4 साल पहले": यानि शादी में उपहार मिलने चाहिए | हमारे समाज में आज भी दहेज कुप्रथा है, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता | दहेज जैसी कुप्रथा इस प्रकार के विज्ञापनों के माध्यम से समाज में ओर अधिक प्रबल नहीं होगी क्या?
4. "इसके कपडे मेरे कपड़ों से ज़्यादा सफेद कैसे"
   "कपड़ों से तो बिल्कुल बैंकर लग रही हो"
   "आप के कपडे ही आप की पहचान है"
   "चंमकते रहिये"

साफ़ कपडे पहनना अच्छा है लेकिन हमारे समाज में जहाँ अधिकतर लोग ग़रीब है वहां व्यक्ति की पहचान को, उस के मूल्यों, आदर्शो को कपड़ो से जोड़ कर देखना कहाँ तक सही है ?

5. सौंदर्य प्रसाधन के विज्ञापन को ही ले लीजिए गोरा करने की फेयरनेस क्रीम के विज्ञापनों में रंग को आत्मविश्वास, नौकरी, वैवाहिक संबंध, सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक स्थिति से जोड़ कर दिखाया जाता है | क्या भारत जैसे देश में जहां के लोगों का त्वचा का रंग मूलत: सांवला होता है, तो क्या इस प्रकार के विज्ञापन हमारे देश के लोगों एवं उनकी वास्तविक काया, रंग रूप का अपमान नहीं

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

करते? जबकि कोई भी फेयरनेस क्रीम त्वचा का रंग पूर्णत: बदल नहीं सकता, इस प्रकार के विज्ञापन केवल सामाजिक आर्थिक तनाव का कारण बनते हैं |

6. एंटी एजिंग:- आयु कम करने वाले सोन्दर्ये प्रसाधनों में चाहे बालों को रंग करने वाली डाई हो या झुर्रियाँ कम करने वाली क्रीम हर कंपनी अपने प्रोडक्ट को बेचने और अधिक से अधिक लाभ अर्जित करने के लिए समाज को एक ऐसी मानसिक स्तिथि की और धकेल रही है जहां बूढ़े लोगो के लिए कोई जगह नहीं है, समाज में, नौकरी में और सामाजिक व्यक्तिगत संबंधो में भी आप को युवा ऊर्जावान होना आवश्यक है, जिस के कारण व्यक्ति वास्तविकता को स्वीकार नहीं कर पा रहे और तनाव में जा रहे हैं |
7. घर के अलग अलग हिस्सों को साफ़ करने के लिए अलग अलग प्रोडक्ट का उपयोग करना होगा, टॉयलेट के लिए अलग बाथरूम के लिए अलग यही बाज़ारवाद है |
8. आप के बच्चे को आप कोनसा एनर्जी ड्रिंक पिला रही हैं, कहीं आप लापरवाह माँ तो नहीं | डाइपर कोनसी कंपनी का हैं, क्या कभी साबुन और तेल की कंपनी का ब्रांड भी यह तय करता है की आप अपने बच्चे और परिवार से कितना प्रेम एवं चिंता करती हैं?
9. मम्मी मम्मी भूख लगी खाना चाहिए मुझे खाना चहिये मुझे अभी मम्मी यदि 2 मिनट में खाना दे पाई तो स्मार्ट मदर है, अन्यथा नहीं घर में बना हुआ पारंपरिक खाना नहीं चलेगा इस तरह से फास्ट फूड कंपनियां फास्ट फूड को बढ़ावा दे रही है | महिलाओं को फास्ट फूड का उपयोग करने के लिए इस तरह से प्रेरित किया जा रहा है कि 1 दिन आराम करें आज ना खाना बनाना पड़े और ना ही बर्तन धोना पड़े, बस एक नंबर डायल कीजिए और बाजार से बना हुआ रेडीमेड खाना मंगा कर घर में आराम से बैठ कर खाईये |
10. जो बीवी से करे प्यार वह कैसे करें तथाकथित प्रेशर कुकर से इनकार, मां के हाथ का खाना केवल इसी तेल में शुद्ध बनता है, व्यक्ति की भावनाओं को इस प्रकार के स्लोगनो के माध्यम से ठगा जा रहा है |
11. डेयोडरेंट के विज्ञापनों में भी अश्लीलता और सन्निकटता को दर्शाया जाता है| यह नैतिक चरित्र का क्या हनन नहीं है?
12. दांत साफ करने वाले विज्ञापन में इस बात पर अधिक बल दिया जाता है कि आप किसी के नजदीक आना चाहते हैं, तो इस टूथब्रश और पेस्ट से दांत साफ कीजिए|
13. सैनिटरी नैपकिंस के विज्ञापन को याद कीजिए जिसकी शुरुआत किस तरह से की गई थी एक लड़की अपनी शादी की तैयारी हेतु सामान जमा रही है, ननंद और भाभी के बीच में संवाद होता है " सैनिटरी नैपकिन रख लिए लिए है क्या उन्हें भी तो जरा पता चले हम भी मॉडर्न हैं| "

    सैनिटरी नैपकिंस में आकार एवं सोखने की क्षमता यहां तक तो ठीक था लेकिन जब विज्ञापन में यह दिखाया गया कि इस सैनिटरी नैपकिन से खुशबू आएगी जबकि आप किसी के पास हो क्या यह उचित है? यह सवाल हमें मीडिया एवं समाज से पूछने की आवश्यकता है |
14. इसी तरह शराब के विज्ञापनों मे शराब को समाज के उच्च वर्ग का प्रतीक बना दिया जाता हैं, जैसे- “आज मिल बैठे आप मैं और मेरा तथाकथित”

“ज़ूबा केसरी----------केंसर का कारण”

“ऊंचे लोग ऊंची पसंद”

15. “डर के आगे जीत है”

    “ठंडा मतलब ------------“

    “आज कुछ तूफानी हो जाए”

"तूफानी ठंडक---------"

ये हैं बाजारवाद जिसमे हमारी देश की सभ्यता सत्तू, गन्ने का रस, केरी का पना और नींबू पानी को भुलाकर तथाकथित कोल्ड ड्रिंक के रूप में मादक जहर को प्रिय पेय पदार्थ बना दिया हैं |

स्त्री को विज्ञापनों में ध्यानाकर्षण करने हेतु एक उपभोग की वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया जाता है | जिसके कारण समाज में महिलाओं के प्रति आदर एवं सम्मान की भावना में कमी हुई है एवं महिलाओं के प्रति अपराधों में वृद्धि हो रही है| नग्न स्थिति को ही आधुनिकता का प्रतीक समझा जा रहा है, स्त्री को सेक्स हेतु परोसा जा रहा है, तब कह सकते हैं की "सभ्यता की दौड़ में हम तो अभागे हैं, पशु-पक्षी हमसे बहुत आगे हैं| "

बाजारवाद के कारण ही समाज में व्यक्तियों का जीवन उपभोक्तावादी हो गया है, जिसके कारण व्यक्ति अपने वास्तविक आर्थिक स्तर से उठकर दिखावे का झूठा जीवन जीने के लिए ऐसी गतिविधियों में प्रवेश करते हैं, जिससे अपराधिक गतिविधियां, असामानता, जीवन में अधिक पाने की लालसा अपराध को जन्म देती है| कभी रीति-रिवाजों के नाम पर, तो कभी संस्कारों के नाम पर, कभी प्राकृतिक उत्पादों के नाम पर, कभी आधुनिकता के नाम पर लोगों की भावनाओं को मनोवैज्ञानिक ढंग से नियंत्रित करने हेतु मीडिया में तरह तरह के विज्ञापन संप्रेषित किए जा रहे हैं |

समाधान एवं निष्कर्ष-

बाजारवाद के चलते मार्केटिंग के योद्धाओं ने धीरे-धीरे हमारी पसंद को बदल कर अपने हिसाब से इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। जिसके चलते आजकल हमारे बड़े-बुजुर्ग इस बात को लेकर चिंतित हैं कि आने वाले समय में ना जाने धर्म के रीति-रिवाज, धार्मिक कर्मकांड, अनुष्ठान, पूजापाठ आदि में नई पीढ़ी को कोई दिलचस्पी होगी या नहीं है और जिस तरह से देश में बाजारवाद के चलते पाश्चात्य संस्कृति हावी होती जा रही है, वह विचारनीय है। जिसके चलते आज हमारा समाज दिशाहीन हो रहा है, देश के कुछ युवाओं का तो अपने ही गौरवशाली अतीत के प्रति कोई सम्मान नहीं है यह स्थिति बेहद चिंताजनक है।

बाजारवाद मीडिया का मनोविज्ञान और सामाजिक आर्थिक समस्याएं एक चक्र के रूप में कार्य कर रहे है, इस कुचक्र को रोकने के लिए हमें भारतीय मूल्य एवं संस्कृति को अपनाना होगा| सादा जीवन, उच्च विचार आदर्श व्यवहार को अपनाना होगा| वास्तविकता को स्वीकार करना होगा चाहे वे स्वयं के रूप रंग को लेकर हो, आर्थिक, सामाजिक स्तर या पर्यावरणीय समस्याओं को लेकर ही क्यों न हों | शांति से जीवन जीने के लिए समायोजन अपनाना होगा, सह अस्तित्व, समभाव, सद्भाव से रहने की आवश्यकता को समझना होगा, दोषारोपण, टीका टिप्पणी कमियां खोजना बंद करना होगा| परिस्थितियों के साथ समायोजन स्थापित करने के लिए स्वयं में परिवर्तन एवं उन्नयन को स्वीकार करना होगा |

❑❑❑

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

2.

भारत के संविधान की पृष्ठभूमि

डॉ0 शुक्ला ओझा
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष इतिहास
डॉ. भगवत सहाय शासकीय महाविद्यालय ग्वालियर

किसी भी देश के संविधान के निर्माण की प्रक्रिया पर उसके इतिहास का गहन प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक संविधान का निर्माण विशेष परिस्थितियों में होता है। भारत के संविधान को समझने के लिये उसके संवैधानिक इतिहास को समझना परम आवश्यक है जिसने इसकी पृष्ठ भूमि का निर्माण किया है। इसकी पृष्ठभूमि के निर्माण में देशी तथा विदेशी दोनों ही तत्व प्रभावी रहे हैं। देशी में यहाँ की परम्पराएँ, ग्रंथ, अंग्रेजी शासन में पारित विविध कानून या अधिनियम सम्मिलित हैं तो विदेशी तत्वों में विभिन्न देशों के संविधानों का प्रभाव दर्शनीय है। किसी भी देश के व्यवस्थित रूप से बने रहने एवं उसे गतिशील बनाये रखने के लिये एक निर्देशिका, नियमावली अथवा संविधान जैसी चुनौती विहीन, संज्ञा सम्पन्न एवं अंतिम रूप से निर्णायक व्यवस्था की आवश्यकता होती है। कहीं यह अतिरिक्त परम्पराओं के रूप में तो कहीं लिखित निर्देशों के रूप में अपनायी जाती है जिसके माध्यम से राज्य, शासक एवं प्रजा तीनों के अधिकारों एवं कर्त्तव्यों को स्पष्टतः परिभाषित किया जाता है। भारत में संवैधानिक विकास हेतु सन् 1858 के अधिनियम से लेकर 1935 के अधिनियम तक जो संवैधानिक विकास हुआ वह अपर्याप्त रहा। सन् 1939 से 1947 तक क्रिप्स मिशन की विफलता के पश्चात कैबिनेट मिशन द्वारा अन्तरिम सरकार के निर्माण एवं संविधान सभा की स्थापना हेतु सुझाव दिये गये। इसी के अनुसार निर्मित संविधान सभा ने दिसम्बर 1946 से अपना कार्य करना प्रारंभ किया। यह भारत में प्रान्तीय व्यवस्थापिका द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित सदस्यों की सभा थी जिसमें 389 सदस्य थे जो विभाजन के पश्चात 310 रह गये थे। यह भारत के विशाल बहुमत की वास्तविक प्रतिनिधि सभा थी जो अनुभवी एवं योग्य सदस्यों से सुसज्जित थी जिसे भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 ने पूर्ण स्वतंत्र एवं सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न बना दिया था। इसकी प्रथम बैठक 09 दिसम्बर 1946 को डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा की अध्यक्षता में हुयी तथा 11 दिसम्बर को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद संविधान सभा के स्थायी सभापति चुने गये तथा संविधान निर्माण प्रारंभ हुआ। 13 दिसम्बर 1946 को पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उद्देश्य प्रस्ताव प्रस्तुत किया जो 22 फरवरी 1947 को स्वीकृत हुआ। 29 अगस्त 1947 को डॉ0 भीमराव अम्बेडकर की अध्यक्षता में सात सदस्यों की प्रारूप समिति बनायी गयी जिसने 5 नवम्बर 1948 को 315 धाराओं एवं 8 परिशिष्टों का सविदा संविधान सभा के समक्ष प्रस्तुत किया जिसे अनेक संशोधनों के रूप में 26 नवम्बर 1949 को स्वीकार किया गया तथा 26 जनवरी 1950 को लागू किया गया। इस संविधान को पूर्णतः समझने के लिये इसकी पृष्ठभूमि, इसके पूर्व के संवैधानिक इतिहास को समझना आवश्यक हो जाता है तभी इसमें निहित मूल भाव को समझा जा सकता है। विश्वस्तरीय संवैधानिक विकास भी इसका महत्वपूर्ण सहायक कारक सिद्ध होता है। इन्हीं के आधार पर एक भौतिक एवं व्यवहारिक संविधान की रचना हो सकी जिस पर देश के आगामी विकास की नींव स्थापित थी।

संवैधानिक इतिहास में विश्व का प्रथम संवैधानिक दस्तावेज सन् 1215 ई. में बना। इंग्लैण्ड का 'मैग्नाकार्टा' या मैग्नाकार्टा लिबरटैटम (Great Charter of Freedoms या आजादी का महान चार्टर) है। यह लैटिन भाषा में लिखा गया था। इसकी चार मूल प्रतियाँ आज भी सुरक्षित हैं। इनमें से दो ब्रिटिश लायब्रेरी में तथा एक–एक लिंकन और सॉल्जबे कैथीड्रल में सुरक्षित हैं। इसके निर्माण के समय यह ज्ञात नहीं था कि भविष्य में यह ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में मान्य होगा यद्यपि इंग्लैण्ड के शासक जॉन ने अगले माह ही निरस्त कर दिया था तथापि अगले शासक हेनरी–III के समय ही यह पुनः लागू किया गया तथा बाद के समस्त राजाओं ने इसके प्रावधानों को लागू किया। चार

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

हजार शब्दों वाले इस मैग्नाकार्टा में पहली बार राजा को कानून के दायरे में रहकर शासन करने की बात घोषणात्मक रूप से कही गयी। इसमें राजा जॉन ने सामन्तों को कुछ अधिकार दिये, स्वयं कुछ कानूनी प्रक्रियाओं का पालन करने का वचन दिया तथा कानून की सीमा में रहकर कार्य करने का वचन दिया। विभिन्न देशों के संविधान निर्माण के समय इसके प्रावधानों को सम्मिलित किया गया। विभिन्न देशों के जैसे अमेरिका, भारत इत्यादि के संविधानों पर इसका अत्यधिक प्रभाव स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। यह ब्रिटेन में वैधानिकता का प्रतीक बना तथा यहीं से ब्रिटिश वैधानिक अधिनियमों का भी शुभारंभ हुआ। इसे आधुनिक संविधानों, लोकतंत्र, संसद और जनता के अधिकारों की अवधारणा का प्रथम बीज माना जाता है। भारतीय संविधान की पृष्ठभूमि का आकलन करते समय इंग्लैण्ड के ही बिल ऑफ राइट्स 1689 पर भी दृष्टिपात करना उचित होगा। यह इंग्लैण्ड की संसद द्वारा पारित एक अधिनियम था जो संवैधानिक मामलों एवं नागरिक अधिकारों को स्थापित करता है। इंग्लैण्ड के सन् 1688 की शानदार रक्तहीन क्रान्ति के उपरान्त राजा विलियम एवं रानी मैरी को संसद द्वारा सम्मिलित रूप से शासन करने के लिये आमंत्रित किया गया। यह बिल ऑफ राइट्स शासक के अधिकारों की सीमा निर्धारण, संसद के अधिकारों की व्याख्या तथा नागरिक अधिकारों की स्थापना जैसे महत्वपूर्ण घोषणाओं के कारण ही कालान्तर में निर्मित संविधानों का आधार बना।

भारत के संविधान की पृष्ठभूमि में अमेरिका के संविधान की प्रतिच्छाया भी स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। विश्व में अमेरिका प्रथम राज्य था जहाँ विधिवत, लिखित एवं स्थायी रूप से संविधान निर्माण किया गया। यही कारण है कि संविधान निर्माण की दृष्टिकोण से अमेरिका को विश्व में अत्यंत सम्मानजनक नजर से देखा जाता है। इंग्लैण्ड के अमेरिकन उपनिवेशों की स्थापना का प्रारंभ सत्रहवीं शताब्दी में 1620 ई. से हुआ। अंग्रेजी शासन के दमनकारी प्रशासन एवं भीषण आर्थिक शोषण की नीतियों के विरूद्ध उपनिवेशों ने दिसम्बर 1773 में बोस्टन में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की चाय को समुद्र में फैंककर विरोध का प्रदर्शन किया। परिणामतः सन् 1775 में इंग्लैण्ड और उपनिवेशों के मध्य युद्ध का प्रारंभ हो गया। इसी समय 2 अगस्त सन् 1776 को उपनिवेशों द्वारा घोषित अमेरिकी स्वतंत्रता का घोषणा पत्र (Declaration of Independence) एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है जिसके आधार पर 13 अमेरिकी उपनिवेशों ने 4 जुलाई 1776 को स्वयं को इंग्लैण्ड से स्वतंत्र घोषित कर दिया तथा ये संयुक्त राज्य अमेरिका के रूप में स्वाधीन गणराज्य बन गये। थॉमस जेफरसन ने मनुष्य के प्राकृतिक अधिकारों के दार्शनिक सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर यह घोषणा पत्र तैयार करवाया था जिसमें समानता के अधिकार, जनता द्वारा सरकार बनाने एवं अयोग्य सरकार को बदलने जैसे महत्वपूर्ण अधिकारों को स्थापित किया तथा इसमें जीवन, स्वतंत्रता एवं सुख की खोज के अधिकार को भी महत्व दिया गया। बाद में फ्रांस पर भी इसका बहुत प्रभाव डिक्लेरेशन ऑफ सेंटीमेंट्स के रूप में दिखाई देता है। उपनिवेशों की स्वतंत्रता के पश्चात अनेक बैठकों, बहसों, प्रारूपों एवं बदलाव के उपरान्त विश्व का प्रथम लिखित एवं स्थायी संविधान बनकर तैयार हुआ जिसे 30 अप्रैल 1789 को लागू किया गया एवं जो आज भी अमेरिका का संविधान है। इसके मूल तत्व थे कि जन्म से सभी मनुष्य बराबर हैं, जन इच्छा सर्वोच्च है, सरकार जनता द्वारा निर्मित संस्था है तथा राज्य एवं सरकार दोनों का अलग–अलग अस्तित्व है। ये तत्व भारत के संविधान की पृष्ठभूमि तय करने में सहयोगी बने।

विश्व के संवैधानिक इतिहास में फ्रांस का योगदान भी अविस्मरणीय है। सन् 1789 की फ्रांस की राज्य क्रान्ति के उपरान्त वहाँ जिस प्रकार से राजनैतिक पर्यावरण में बदलाव आये तथा वहाँ के निरंकुश राजतंत्र को जिस प्रकार वहां के संविधानों ने संवैधानिक एवं सीमित राजतंत्र में बदल दिया, उसका प्रभाव भारत के संविधान निर्माण की प्रक्रिया की पृष्ठभूमि को रेखांकित करने में स्पष्टतः दर्शनीय है। फ्रांस की क्रान्ति के प्रारंभ होने के पश्चात तृतीय सदन या इस्टेट में थोड़े से पादरी एवं सामन्तों के मिल जाने पर इसका नाम राष्ट्रीय सभा पड़ गया तथा संविधान निर्माण के कार्य का दायित्व लेने के कारण यह राष्ट्रीय संविधान बनाया गया जो दो सिद्धान्तों पर आधारित था। प्रथम राज्य की प्रभुत्व शक्ति जनता में निहित है तथा द्वितीय सरकार के तीनों अंग विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका एक दूसरे से पृथक होनी चाहिये। इसने मतदाताओं की योग्यता को परिभाषित किया एवं देश का शासन एक निर्वाचित

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

संस्था को सौंप दिया गया। इसने प्रशासनिक ढाँचे का विकेन्द्रीकरण किया एवं स्वशासन की नींव रखी गयी। भारत के संविधान के निर्माताओं ने इन महत्वपूर्ण तत्वों का अपना संविधान बनाते समय विशेष रूप से ध्यान रखा। क्रान्ति के दौरान ही 21 सितम्बर 1792 को फ्रांस में राजतंत्र की समाप्ति की घोषणा कर गणतंत्र स्थापित किया गया तथा राष्ट्रीय संसद या नेशनल कन्वेंशन ने 1795 के नवीन संविधान का निर्माण किया इसकी रचना इस प्रकार की गयी थी कि अब देश में न तो एक व्यक्ति का अधिनायकतंत्र स्थापित हो सकता था तथा न ही शासन की बागडोर भीड़ के हाथों में जा सकती थी। इसमें भी द्विसदनात्मक विधायिका की स्थापना की गयी। इसके बाद वहाँ 1848 एवं 1871 में संविधान बनाये गये जो 1940 तक लागू रहा। इन सभी संविधानों को बनाने वाली संविधान सभाओं की यह विशेषता थी कि ये आकार में बड़ी थीं तथा इनमें समाज के सभी वर्गो के लोग सम्मिलित थे। यही बात भारत की संविधान सभा पर भी लागू होती है।

इस प्रकार भारतीय संविधान के निर्माण के समय इंग्लैण्ड, अमेरिका तथा फ्रांस के संविधानों का प्रभाव अत्यधिक पड़ा, साथ ही अन्य देशों के संविधानों से भी अनेक तत्व इसमें समाहित किये गये। इसमें संसदीय व्यवस्था ब्रिटिश संविधान से तथा मौलिक अधिकार, सर्वोच्च न्यायालय एवं उपराष्ट्रपति संबंधी व्यवस्थाऐं अमेरिकी संविधान से ली गयीं। संघात्मक व्यवस्था कनाडा तथा समवर्ती सूची एवं विवादों के निपटारे की व्यवस्था आस्ट्रेलिया के संविधान की देन है। नीति निर्देशक सिद्धान्त आयरलैण्ड एवं संविधान संशोधन प्रणाली दक्षिण अफ्रीका के संविधान से लिये गये हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद–21 की शब्दावली –''कानून द्वारा स्थापित प्रक्रिया को छोड़कर'' जापान के संविधान से ली गयी है। विभिन्न संविधानों की इन प्रणालियों द्वारा ही भारतीय संविधान के आधार मंच के निर्माण में विशिष्ट सहयोग दिया गया।

ऐसा नहीं है कि इसकी पृष्ठभूमि पर दूसरे देशों के संविधानों ने ही प्रभाव डाला अपितु भारत की भी विभिन्न व्यवस्थाऐं भी इसकी पृष्ठभूमि के निर्माण में क्रियाशील दिखाई देती हैं। प्राचीन भारत में राजा की निरंकुशता को संतुलित करने का कार्य मुख्यतः धर्म एवं परम्पराएं ही करती थीं। इनमें जीवन संबंधी, व्यवस्था संबंधी अनेकानेक निर्देश होते थे। ये ही उस समय वास्तव में संविधान की भूमिका निभाते थे। इनमें धर्म, समाज, राज्य, व्यक्ति के पारस्परिक संबंधों की विशद व्याख्या होती थी। न्याय, कानून, दण्ड देने के अधिकार, दण्ड देने के प्रकार इन्हीं पर आधारित होते थे। राज्य के संविधान का दर्जा प्राप्त करने के योग्य भारत में प्रथम पुस्तक कौटिल्य रचित 'अर्थशास्त्र' है। कौटिल्य या चाणक्य ने राज्य को सर्वोच्च सत्ता एवं महत्व प्रदान किया है। इसी अवधारणा की पुष्टि बाद में सुप्रसिद्ध राजनीतिक चिन्तक मैकयावली ने भी की है। अर्थशास्त्र कौटिल्य या चाणक्य रचित संस्कृत का एक ग्रंथ है। इसमें राजव्यवस्था, कृषि, न्याय एवं राजनीति आदि के विविध पक्षों पर गहन चिन्तन को प्रस्तुत किया गया है। प्राचीन भारतीय राजनीति का यह प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। इस ग्रंथ में 15 अभिकरण, 180 प्रकरण, 150 अध्याय, 380 कारिकाएं एवं कुल 6000 श्लोक हैं इसके अभिकरणों में प्रथम में, दूसरे में आंतरिक प्रशासन एवं सरकारी अधीक्षकों के कर्तव्यों का विवरण, तृतीय में विधि एवं न्याय, चौथे में दण्ड नीति, पांचवे में गुप्तचर सेवाओं एवं दरबारियों के आचरण संबंधी नियमों का विवरण है। छठा अभिकरण राज्य के शक्ति स्त्रोत, सातवां वैदेशिक संबंधों, आठवां आपदाओं, नवम एवं दशम आक्रमण एवं युद्ध, ग्यारहवां निगमों की कार्यप्रणाली, तेरहंवा अधिकृत संसाधनों, चौदहवां गुप्त खजानों एवं पन्द्रहवां संधि योजनाओं से संबंधित हैं। इसमें राजा, प्रजा एवं प्रशासनिक अभिकरणों के मध्य संबंधों का स्पष्ट चित्रांकन किया गया है। उनके कर्तव्यों एवं अधिकारों को भी स्पष्टतः परिभाषित किया गया है। पूरे प्राचीन भारत में इन्हीं विचारों पर आधारित राजत्व का सिद्धान्त क्रियाशील रहा।

मध्ययुगीन भारत में मुस्लिम राजत्व के सिद्धान्त पर संवैधानिक व्यवस्था स्थापित की गयी। जब 1757 में प्लासी का युद्ध जीतकर अंग्रेजों ने औपनिवेशिक शासन का भारत में प्रारंभ किया तो उन्हें यहां शासन हेतु नवीन नियमों की आवश्यकता अनुभव हुयी। इसके लिये प्रारंभ में चार्टर, सन् 1861 एवं 1892 के अधिनियम के साथ 1909 का मिन्टो मार्ले अधिनियम एवं 1919 का भारत सरकार अधिनियम की भारतीय संविधान की पृष्ठभूमि का निर्माण करते हैं। इस

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

दिशा में सर्वाधिक सराहनीय भूमिका 1935 के अधिनियम ने निभायी। वास्तव में 1765 में अंग्रेजों द्वारा बंगाल में द्वैध शासन के प्रारंभ के साथ ही संविधान के बीज डल गये थे। इसे उस समय के अधिनियमित संसद का सबसे बड़ा अधिनियम कहा जाता है। इसके द्वारा भारत में अखिल भारतीय संघ की स्थापना की गयी। संविधान की विषय सामग्री तथा भाषा पर इस अधिनियम का प्रभाव स्पष्टतः देखा जा सकता है। संघ एवं राज्यों के मध्य शक्तियों का विभाजन तथा राष्ट्रपति के संकटकालीन अधिकारों की स्थिति तय करने में भी यह अधिनियम मार्गदर्शक रहा। इस अधिनियम की लगभग 200 धाराएँ ऐसी हैं जिन्हें या तो पूर्ण रूप से या वाक्य रचना में साधारण परिवर्तन करके संविधान में स्थान दिया गया है।

इस प्रकार भारत के संविधान की पृष्ठभूमि निर्मित करने में इंग्लैण्ड, अमेरिका एवं फ्रांस के संविधानों तथा भारत पर ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन तथा बाद के ब्रिटिश शासन के अनन्तर स्थापित औपनिवेशिक शासन में जो अधिनियम जैसे 1861, 1892, 1909, 1919 और 1935 के अधिनियम पारित हुये उन्होंने भारत की संवैधानिक पृष्ठभूमि का निर्माण किया था। इसी प्रकार भारत की प्राचीन, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं एवं वेद, स्मृति ग्रंथ जैसे ग्रंथों एवं चाणक्य के अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथ द्वारा निर्मित व्यवस्थाओं ने ही भारत में एक ऐसा आधार मंच तैयार किया जिसके आधार पर निर्मित संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हो सका।

<u>संदर्भ ग्रंथ :–</u>

1. फड़िया एवं फड़िया – भारतीय राज व्यवस्था एवं भारत का संविधान।
2. अम्बेडकर, बी.आर. – भारत का संविधान।
3. सिंह, शीलवंत – भारतीय संविधान।
4. विपिन चन्द्र – आधुनिक भारत का इतिहास।
5. अग्रवाल, प्रमोद कुमार – भारत का संविधान।
6. बसु, डी.डी. – भारत का संविधान – एक परिचय।
7. रेड्डी, के.के. – भारत का इतिहास।

❑❑❑

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

3.

भारत चीन संबंध वर्तमान परिपेक्ष में

डॉ कल्पना वैश्य
सह प्रा. और विभागाध्यक्ष राज..वि .महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्व विद्यालय, छतरपुर(मध्य प्रदेश)

वर्तमान में कोविड-19 वैश्विक महामारी से व्यथित वैश्विक परिदृश्य में विश्व राजनीति में अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विकास व निर्माण का व्यापक महत्व है। "एशियाई महाद्वीप में भारत चीन संबंध सबसे अधिक जटिल संबंधों में से एक है।"[1]

"पिछले कुछ वर्षों और दिनों में भारत-चीन संबंधों में हुए नाटकीय बदलाव ने संपूर्ण विश्व का ध्यान आकृष्ट किया है।"[2] संपूर्ण विश्व उत्सुक है कि एशिया की दोनों उभरती शक्तियों के बीच का तनाव क्या रूप लेगा, क्योंकि विश्व राजनीति के समीकरण भारत चीन संबंधों से प्रभावित हुए बिना संभव नहीं है।

वर्तमान में दोनों राष्ट्रों के संबंध सीमा विवाद के चलते अवरोध से गतिरोध में परिवर्तित हो चुके हैं। जहां वर्तमान में चीन विश्व की दूसरी सशक्त सामरिक शक्ति बनकर उभरा है, वही सबल व सशक्त होता भारत चीनी वर्चस्व के लिए चुनौती बनकर उभर रहा है।

पंचशील, सीपीईसी, डोकलाम, वन बेल्ट वन रोड, न्यूक्लियर सप्लायर्स ग्रुप तथा दक्षिण सागर में सिटिग ऑफ पल्स और सीमा विवाद आदि विषय दोनों के संबंधों में प्रमोद टकराव तनाव संवाद एवं पुनः टकराव के दिखलाई पड़ते हैं।

भारत और चीन दोनों ही एशिया में जनसंख्या और भौगोलिक दृष्टि से दो बड़े राष्ट्रों में गिने जाते हैं। साथ ही दोनों पड़ोसी राष्ट्र भी हैं क्योंकि दोनों की कई हजार किलोमीटर सीमाएं एक दूसरे से मिलती हैं। "चीन एकमात्र ऐसा राष्ट्र है जिसकी सीमाएं सबसे अधिक देशों के साथ जुड़ी हुई हैं।"[3] लगभग सभी राष्ट्रों से उसका सीमा को लेकर के विवाद भी रहा है।

एक ओर भारत 1947 में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की लंबी जकड़न के पश्चात अहिंसात्मक आंदोलन के द्वारा मुक्त हुआ और लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना यहां पर हुई, तो वहीं दूसरी ओर चीन में 1949 में साम्यवादी क्रांति या यूं कहें कि बंदूक की गोली से साम्यवादी शासन की स्थापना हुई और "उसकी आक्रामक नीति ने हमेशा विश्व को आतंकित रखा कहीं ड्रैगन की तंद्रा भंग ना हो जाए।"[4] चीन जहां एकात्मक या लोकतांत्रिक केंद्रवाद पर बल देता है तो वहीं भारत में लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को अपनाया गया है फिर भी 1949 में चीनी साम्यवादी राष्ट्र को राजनीतिक मान्यता देने वाला भारत प्रथम गैर साम्यवादी राष्ट्र था।

इतिहास साक्षी है कि "प्राचीन काल से ही भारत और चीन के मध्य घनिष्ठ सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध विद्यमान रहे थे।"[5] बौद्ध धर्म भारत से ही चीन में पहुंचा,इस मायने में भारत चीन का धर्मगुरु भी है। इससे कुछ मान्यताओं का विकास भी हुआ, जैसे बौद्ध धर्म का जन्म भारत में हुआ इसलिए चीन उसका धर्म गुरु के नाते सम्मान करेगा। चीन ने भी अपनी स्वतंत्रता एवं अखंडता की रक्षा के लिए जापानी साम्राज्यवाद से लंबा संघर्ष किया, इसलिए भारत उससे सहानुभूति रखता है। चीन ने कभी भी पूर्व में भारत पर आक्रमण नहीं किया इसलिए आगे भी वह ऐसा नहीं करेगा और यदि वह ऐसा करना चाहे तो दुर्गम हिमालय की पर्वत मालाएं उसे ऐसा कभी करने नहीं देंगी।

इन मान्यताओं के चलते स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय सरकार के द्वारा चीन के प्रति गहरी सहानुभूति तथा 1947 से 1958 तक भारत का दृष्टिकोण चीन के प्रति मित्रता पूर्ण रहा। यही कारण है कि भारत ने ना केवल चीन की साम्यवादी सरकार को तुरंत मान्यता प्रदान की, बल्कि अमेरिका की इच्छा के विरुद्ध कोरिया युद्ध में चीन का समर्थन भी किया और संयुक्त राष्ट्र संघ में चीन को मान्यता दिलाने का

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

भरसक प्रयास भी किया। 1954 के व्यापारिक समझौते के माध्यम से तिब्बत से अपने अतिरिक्त चीन को सौंपते हुए पंचशील के सिद्धांत की रचना भी की गई और 1955 के बांडुंग सम्मेलन में हिंदी चीनी भाई - भाई का नारा भी दिया गया। लेकिन जल्द ही भारत का दुस्वप्न टूट गया जब दोनों राष्ट्रों के बीच सीमा को लेकर कटु विवाद उत्पन्न हो गया, जो वर्तमान में दोनों देशों के बीच अनसुलझा विवाद आपसी संबंधों में बाधा बना हुआ है।

वास्तव में चीन की विदेश नीति का आधारभूत तत्व वर्ग संघर्ष एवं विस्तार वादी मानसिकता हमेशा से रही है। वर्तमान चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की महत्वाकांक्षी योजना पुराने सिल्क मार्ग को चालू रखना भी इसी मानसिकता का प्रमाण है। आज जब संपूर्ण विश्व चीन से प्रारंभ हुई कोविड-19 महामारी से जूझ रहा है, तो "पूर्व व दक्षिण चीन सागर में जापान व दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ-साथ हिमालय में नेपाल और भूटान और भारत के लद्दाख, सिक्किम ,अरुणाचल प्रदेश में भी में चीन की दखलअंदाजी व आक्रामक नीति की खबरें आती रही हैं।"[6]

अमेरिका के एशिया में नवीन समीकरणों की तलाश और भारत अमेरिका के साथ खड़े होने से चीन परेशान है। भारत के मेक इन इंडिया अभियान के अंतर्गत अमेरिका से मिलने वाला तकनीकी सहयोग और रक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ी साझेदारी भी चीन की परेशानी का कारण है। साथ ही हिंद और एशिया प्रशांत महासागर के इलाके में चीन के वर्चस्व को चुनौती देने के लिए अमेरिका भारत का साथ चाहता है। दूसरी ओर जापान भी पेसिफिक ओशन में चीन को काउंटर करने के लिए भारत को अपने पक्ष में करना चाहता है लेकिन भारत की कूटनीति ऐसी होनी चाहिए जिससे अपने विकास का रास्ता तय करने के लिए अपने पड़ोसियों के लिए अपने दरवाजे खोल कर रखे साथ ही डेवलपमेंट रीजनल प्रोग्राम्स बेल्ट एंड रोड इनीशिएटिव में शामिल हो।

कहते हैं संघर्षों तनाव से भरी तथा विभिन्न विचारधाराओं पंथो और धर्मों से परिपूर्ण इस दुनिया में आगे का रास्ता भू राजनीति से नहीं बल्कि भू आर्थिकी से गुजरता है। यही कारण है कि दोनों राष्ट्रों के बीच स्थित सीमा विवाद के बावजूद 1978 के पश्चात से दोनों के बीच व्यापारिक एवं वाणिज्यिक स्तर पर सुधार होने लगा। अनेक वाणिज्य कृषि वैज्ञानिक विदेश मंत्री स्तर के दौरे प्रारंभ हुए, 2013 में चीन में सी जिनपिंग के सत्तारूढ़ होने के साथ ही चीन परिधिगत कूटनीति पर चलते हुए काम करता रहा। वर्तमान में सीमा विवाद के बावजूद 2014 तक मैं दोनों राष्ट्रों के बीच द्विपक्षीय व्यापार 70 अरब डालर से ज्यादा हो चुका था। चीन विश्व का कारखाना कहलाता है ,तो भारत वैश्विक सेवा प्रदाता इसलिए दोनों में निवेश, वित्तीय सेवाओं व उच्च तकनीक में सहयोग की बड़ी संभावना भी है। मोदी - शी वार्ता में दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग को गहरा करने का संकल्प भी लिया गया था, "साथ ही हम इस तथ्य की अनदेखी भी नहीं कर सकते हैं कि केवल आर्थिक व्यवहार बढ़ाने से ही रिश्तो की कड़वाहट दूर हो ही जाएगी,यह जरूरी नहीं है।"[7] और शायद यही कारण है कि भारत और चीन के बीच बढ़ता तनाव युद्ध की परिस्थितियां उत्पन्न करता रहा है। "भारत के द्वारा बातचीत के रास्ते को खुला रखना, भारत का सुदृढ़ राजनीतिक नेतृत्व उसका न्यायोचित होना तथा कोरोना काल में भी भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था चीन की आंखों में खटक रही है।"[8] चीन के साथ आधिकारिक व गैर आधिकारिक व्यवहार में भारत का बढ़ता आत्मविश्वास सीमा क्षेत्र में ढांचागत विकास के ठोस प्रयासों से चीन हिला हुआ है। साथ ही सामान व वैश्विक भागीदारी के क्रम में भारत के अग्रणी राष्ट्रों के साथ मजबूत व घनिष्ठ होते संबंधों से भी चीन चिढ़ा हुआ है। वर्तमान सीमा विवाद भी इसका एक कारण हो सकता है।

"उल्लेखनीय है कि भारत चीन सीमा विवाद लंबे समय से चला आ रहा है। यदि सेंड विवाद के अब तक के घटनाक्रम पर नजर डालें तो पिछले 10 वर्षों के दौरान इस बार जैसा विवाद पहली बार ही हुआ है।"[9] भारत चीन सीमा पर स्थित तीन क्षेत्रों में सीमा विवाद है पिछले एक दशक में भारत ने सीमा पर अपनी स्थिति और एलएसी पर मौजूदगी को सूत्रण करने में काफी मेहनत की है। भारत सीमा सड़क तंत्र को उन्नत करने की दिशा में कार्य को पूर्ण करने की ओर अग्रसर है। जिसमें पश्चिमी क्षेत्र के गांव शयोकऔर डारबुक से लगा हुआ दौलत बेग का उत्तरी हिस्सा भी शामिल है। वर्ष 2019 में पूर्ण हो चुकी डी.एस., डी.बी.ओ आशा की जानी चाहिए, कि भारत

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

2022 तक एल.ए.सी. तक पहुंचने वाली सड़कों के नेटवर्क को पूरा कर लेगा। यही कारण है कि मई और जून 2020 में चीन द्वारा सीमा पर की गई हरकत भारत द्वारा पश्चिमी क्षेत्र में चलाई जा रही सड़क निर्माण गतिविधियों की प्रतिक्रिया लगता है, क्योंकि हमेशा से इस क्षेत्र में भारतीय उपस्थिति को लेकर अति संवेदनशील रहा है चीन। लगता है गलवान के निकट चीन की हरकतें भारत के सीमा सड़क निर्माण कार्य को बाधा पहुंचाने के उद्देश्य से की जा रही है। वास्तव में चीन का यह कदम असुरक्षा की आशंका के चलते उठाया गया लगता है। वैसे 2017 में चीन भूटान सीमा पर डोकलाम के संदर्भ में वह अतीत भी महत्वपूर्ण है जिसके अंतर्गत भारत चीन समझौता हुआ था। तब भारत ने चीनी विस्तार के प्रयास पर लगाम लगाने के उद्देश्य से इस क्षेत्र में अपनी सेना तैनात करके चीन को जबरदस्त झटका दिया था। तब चीन ने इसे अपनी अखंडता का उल्लंघन करार देते हुए यहां निगरानी बढ़ा दी थी।

वर्तमान में चीन की गतिविधियों को देखकर ऐसा लगता है कि वह वैश्विक महामारी कोविड-19 संक्रमण के संदर्भ में अंतरराष्ट्रीय आलोचना और जैसे - महामारी से निपटने में सरकार के रवैए की आलोचना, अन्य राष्ट्रों के साथ बिगड़ते संबंध, अर्थव्यवस्था में गिरावट आदि से विश्व का ध्यान भटकाने किसी भी कमजोरी का संकेत देने से बचते हुए शक्ति प्रदर्शन कर रहा है। संभवत चीन ऐसा मान रहा है कि वैश्विक स्तर पर उसे कमजोर राष्ट्र ना मान लिया जाए। चीन को यह भी लगता है कि भारत को तिब्बत अशांति का लाभ न मिल जाए इसलिए उत्तर पूर्व से लद्दाख और कराकोरम दर्रे तक निगाह गड़ाए हुए हैं। ऐसी भी चर्चा है कि चीन लद्दाख अक्साई चीन के बदले अरुणाचल प्रदेश भूटान सिक्किम आदि को हथियाना चाहता है, इसलिए उसने मध्यवर्ती इलाकों के सरोकार को छोड़कर अपनी समस्त रणनीतिक ताकत लद्दाख में लगा रखी है। लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा एल.ए.सी. पर हुई झड़प वास्तव में 1962 में भारत से युद्ध के पश्चात चीन द्वारा अवैध रूप से क्षेत्र में कब्जा बनाए रखने का ही परिणाम है।

यद्यपि चीन भारत को ऐसे राष्ट्र के रूप में देखता रहा है, जो कोई बड़े और कड़े कदम उठाने में अक्षम है ,लेकिन भारत ने चीन के साथ युद्ध की चुनौती को स्वीकार कर पहला चरण तो जैसे जीत लिया था, क्योंकि किसी भी समस्या को स्वीकार करना ही उसके समाधान की ओर बढ़ने वाला पहला कदम होता है। पिछले कुछ वर्षों में दक्षिण एशिया में जिस प्रकार रणनीतिक बदलाव परिलक्षित हो रहे हैं, उसमें भारत - चीन संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाते हैं। हाल ही में भारत की उपलब्धियों जैसे मिसाइल टेक्नोलॉजी कंट्रोल रिजीम(एम.टी.सी.आर.) के 35 वे सदस्य के रूप में भारत का शामिल किया जाना, जबकि चीन इसका सदस्य नहीं है। भारत ईरान चाबाहार समझौता जिसके द्वारा चाबाहार बंदरगाह से भारत के मध्य पूर्व,मध्य एशिया तथा अफगानिस्तान के रास्ते खुल चुके हैं। यह भारत के लिए एक उपलब्धि है। क्योंकि "पूर्व चाबाहार भारत की एक व्यापक योजना है, जिसके माध्यम से उत्तर मध्य पूर्व मध्य एशिया तथा ट्रांस काकेशस में भारत को भौगोलिक राजनीति को नवीन आयाम देगी।"[10] अमेरिका और इजराइल से प्रगाढ़ होते संबंध भी कहीं ना कहीं चीन की परेशानी बढ़ा रहे हैं।

फिर भी भारत में प्रत्येक मोर्चे पर अत्यधिक सावधान रहने की आवश्यकता है। उसे एल.ए.सी. पर तनाव घटाने के प्रयासों,बातचीत के चलते भी चीन की सैन्य गतिविधियों पर सतत निगरानी रखनी चाहिए, क्योंकि अतीत में हम देख चुके हैं कि चीन समझौते के कुछ अंतराल बाद ही सीमा पर फिर किसी ना किसी बहाने कुचक्र रचने लगता है तथा हर बार उसकी कार्यवाही पिछली कार्यवाही से अधिक तीव्र होती है। चीन की इस चाल को भी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए कि वह हर बार हरी हुई जमीन को लेकर चुप्पी साध जाता है। इस बार किसी भी समझौते के पूर्व उस पर दबाव बनाया जाना चाहिए, कि हडपी हुई जमीन को ना केवल वह खाली करें, बल्कि सीमा पर अतिक्रमण के अपने खेल को हमेशा के लिए बंद करें। अंतरराष्ट्रीय राजनीति में फिलहाल चीन के विरुद्ध लोहा गरम है। निश्चित ही भारत को इसका फायदा उठाना चाहिए। भारतीय परिपेक्ष्य में अंतरराष्ट्रीय संबंधों का नया दौर चल रहा है। भारतीय प्रधानमंत्री की विदेश यात्राओं ने भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंधों की पुनर्स्थापना आरंभ की है। वर्तमान में प्रत्येक भारतीय की अपेक्षा है विदेश यात्राओं से बने अंतरराष्ट्रीय संबंधों एवं कोविड-19 महामारी के कारण आलोचनाओं से घिरे चीन का भरपूर फायदा उठाते हुए भारत अपने आप

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

को सशक्त करते हुए विश्व परिदृश्य पर गौरवपूर्ण स्थान पर स्थापित हो। भारत के लिए चुनौतियां कम नहीं है क्योंकि अपने कुटिल चालों से केवल सीमा के अनेक बिंदुओं पर तनाव और स्थिरता फैला रहा है, बल्कि वह नेपाल और भूटान को भी उकसा और धमकाकर भारत की परेशानियों में वृद्धि कर रहा है। कहा जा सकता है कि 2017 में 10 सप्ताह तक चले डोकलाम गतिरोध के पश्चात भूटान चीन की चाल को समझ चुका है, लेकिन नेपाल अभी उसके शिकंजे में पूरी तरह से जकड़ा हुआ है। "चीन की एक अध्ययन समूह की कांफ्रेंस के संबोधन में विदेश मंत्री एस जयशंकर का कहना है कि चीन और भारत के संबंध ऐसे चौराहे पर हैं जहां दोनों देशों को तय करना है कि किस ओर चलें क्योंकि हम जिस दिशा में भी चलेंगे उससे ना केवल दोनों राष्ट्र बल्कि विश्व भी प्रभावित होगा।"[11] वास्तव में चीन एल.ए.सी. पर इस क्षेत्र की शांति के लिए खतरा बना हुआ है। यहां अपना वर्चस्व चाहता है ,लेकिन लगातार विकसित होता भारत उसकी मंशा में बड़ी रुकावट है। पिछले दिनों चीन ने नेपाल बांग्लादेश की सरकारों को अपने प्रभाव में लाने के लिए सभी हथकंडे अपना रखे हैं। लेकिन नेपाल और बांग्लादेश दोनों जगह मुंह की खाई नेपाल की कॉमयुनिस्ट पार्टी दो फाड़ हो चुकी है तथा प्रधानमंत्री ओली और उनके राजनीतिक विरोधी प्रचंड अपने वजूद की लड़ाई में फंस गए हैं। बांग्लादेश में भारतीय प्रधानमंत्री मोदी की वैक्सीन डिप्लोमेसी काम कर गई। बांग्लादेश जैसे गरीब राष्ट्र को मुफ्त वैक्सीन देकर भारत ने उसे चीन की गोद में जाने से बचा लिया।भूटान तो पहले से ही भारत का अभिन्न दोस्त है। भारत ने अपने पड़ोसी गरीब राष्ट्रों को मुफ्त वैक्सीन देकर अपने वैश्विक उत्तरदायित्व का निर्वहन बखूबी किया है। निश्चित ही भारत कोरोना महामारी से उबरने में जद्दोजहद करते विश्व को बाहर निकालने में काफी मदद कर रहा है। दूसरी तरफ चीन कोरोना काल में और भी अलग-थलग पड़ चुका है। कोरोना वायरस को फैलाने से रोकने में उसकी लापरवाही से वह अनेक राष्ट्रों की आख की किरकिरी पहले से ही है, इसलिए चीन के लिए बेहतर होगा कि वह भारत के साथ अपने संबंधों में सुधार करते हुए सकारात्मक दिशा में आगे बढ़े।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. पूजा नायक : " भारत चीन संबंध समसामयिक संदर्भ में "भारतीय राजनीति विज्ञान शोध पत्रिका, वर्ष सप्तम, अंक प्रथम, जुलाई-सितंबर, 2015, पृष्ठ, 273
2. नेहा निरंजन : "एशियाई परिदृश्य और भारत चीन संबंध" मध्य भारती, जनवरी- जून, 2018, पृष्ठ, 128
3. पूजा नायक - उपरोक्त
4. नेहा निरंजन- उपरोक्त
5. डॉ. एस. सी. सिंघल - " अंतरराष्ट्रीय राजनीति", लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, 2011, पृष्ठ, 302
6. डॉ. प्रेमपाल सिंह वर्मा - सामान्य ज्ञान दर्पण, फरवरी, 2015, पृष्ठ, 45
7. गिरीश चंद्र पांडे : "चीन के राष्ट्रपति की भारत यात्रा और भारत चीन संबंध "(अंतरराष्ट्रीय राजनीति लेख), प्रतियोगिता दर्पण, जनवरी, 2015, पृष्ठ, 95
8. अरुण साहनी : लेख "चीनी दुस्साहस का मुंहतोड़ जवाब जरूरी", पत्रिका, सागर संस्करण, 19 जून 2020 ,पृष्ठ, 4
9. एम .ट्रेलर फेरवल : लेख" फिर एक बार ड्रैगन की गंभीर चुनौती", पत्रिका सागर संस्करण, 10 जून, बुधवार, 2020, पृष्ठ,
10. प्रकाश पंजीकर : लेख "जरूरी है बहुआयामी युद्ध की तैयारी "पत्रिका, सागर संस्करण ,14 जुलाई, 2020, पृष्ठ 4
11. कर्पूर चंद कुलिश: पत्रिकायन्त्र, "सकारात्मक दिशा की ओर बढ़े चीन" पत्रिका, सागर संस्करण, 29 जनवरी, 2021, पृष्ठ 4

❑❑❑

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

4.

हिंदी बाल कहानी और प्रकाश मनु

डॉ मुक्ता अग्रवाल
सहायक प्राध्यापक, हिंदी साहित्य, शास. कन्या महाविद्यालय मुरैना म.प्र.

''बच्चे तो है गीली मिट्टी चाहे जैसा उन्हे बना लो।

चाहे सुंदर कलश बना लो या फिर ढ़ेला उन्हे बना लो।।''

इस गीली मिट्टी को सुंदराकृति में गढ़ने में मदद करने वाला एक माध्यम बाल साहित्य भी है। बाल साहित्य के अन्तर्गत वह शिक्षाप्रद साहित्य आता है , जिसका लेखन बच्चों के मानसिक स्तर को ध्यान मे रखकर किया जाता है। इसका मुख्य उददेश्य सभी प्रकार की कुरीतियों और बुराइयों से दूर स्वस्थ, सुंदर और आनंदमय जीवन जीने की कला सिखाना है, ताकि बच्चों में सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास हो और उनका उच्च चरित्र निर्माण हो तभी वे जीवन संघर्ष मे विजय प्राप्त कर सकेगे ।

बाल साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण अंग है – बाल कहानी, जो बच्चों की सबसे प्रिय, अपनी सी लगने वाली कीमती चीज है । एक ऐसा जादुई खिलौना, जो उनके मन में सपनीले इन्द्रधनुषी रंग भरता है, उनके अंदर विविध रूप रंग वाली दुनिया बसा देता है । वह दुनिया, जिसमें दादी, नानी और मॉ के द्वारा सुनाई एक से एक सुंदर और अचरज भरी कहानियों का अकूत खजाना भरा होता है ,जो कभी परियों के देश में ले जाता है, तो कभी चॉद की सैर कराता है और कभी सत्य, परोपकार, बलिदान जैसी यर्थाथवादी बातें सिखाता है। इसके अलावा खेल–खेल में बिना कहे जीवन में कुछ कर गुजरने और आगे बढ़ने की सीख दे जाता है।

दादी नानी की कहानी सुनाने की इस वाचिक परंपरा में बाद में थोड़ा परिवर्तन हुआ। पंचतंत्र एवं हितोपदेश की कहानियॉ, सिंहासन बतीसी एवं वेताल पच्चीसी की कहानियॉ भी बच्चों के बीच आने लगी। जातक कथाऍ भी इसी के अन्तर्गत हैं। यह वाचिक परंपरा बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ मे लिखित शब्दों के रूप में सामने आयी। यह हिंदी बाल कहानी का प्रारंभिक युग था, जो 1947 ई. तक माना जाता हैं। (1) इस विधा की नींव रखने वाले प्रमुख कहानीकार थे – महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद्र, जयशंकर प्रसाद, सुदर्शन , स्वर्ण सहोदर , हंसकुमार तिवारी आदि। इस समय की बाल कहानियों का उद्देश्य बच्चों को विदेशी शासन की गुलामी के दुख को बताना, गुलामी की बेड़ियों को काट फेंकने के लिए तैयार करना था। साथ ही इन पर लोककथाओं का असर भी था। महावीर प्रसाद द्विवेदी की 'पांडवो का विवाह', जयशंकर प्रसाद की 'बालक चंद्रगुप्त', रामवृक्ष बेनीपुरी की 'हीरामन तोता' और 'लाल बुझक्कड', सुभद्राकुमारी चौहान की 'हींगवाला', बाल साहित्य के प्रेमचंद्र कहे जाने वाले जहूरबख्श की 'कुत्ते की दुम', 'पागल है', हास्य कहानी 'आधी रोटी तीन करेला' इस युग की प्रसिद्ध कहानियॉ हैं।

इस समय कथा सम्राट प्रेमचंद्र ने भी अनेक बाल कहानियॉ लिखी जो बाल पाठको के दिल मे उतरकर उन्हें अधिक सरल, मानवीय और करूणायुक्त बनने की सीख देती है, जैसे – ईदगाह, बड़े भाईसाहब, गुल्ली–ड़ंडा, बूढ़ी काकी आदि। उनकी 'जंगल की कहानियॉ' मे 12 कहानियॉ है, जिनमें कही न कही बच्चें शमिल है, जो जानवरों के दर्द और संवेदना से गहराई तक जुडे है। उनका कथन हैं – ''बालकों के लिए राष्ट्र् के सपूतों से बढ़कर उपयोगी

साहित्य का कोई दूसरा अंग नही हैं। इससे उनका चरित्र ही बलबान नही होता, उनमें देशप्रेम व साहस का संचार होता हैं।'' (2)

बाल कहानी यात्रा का दूसरा चरण (1947–1980) गौरव युग कहा जा सकता है। इस चरण के प्रारंभिक वर्षो में लोककथाओं , सुधारवादी कहानियों की बहुलता रही, पर 1960 ई. के बाद का समय बाल कथा साहित्य के लिए महत्वपूर्ण एवं क्रांतिकारी था। इस समय एक ओर नई बाल रचनाऍ लिखी गई , उसमें नए और अद्भुत प्रयोग भी हुए, साथ ही उत्कृष्ट रचनाओं में भी आशातीत वृद्धि हुई। इस युग की प्रसिद्ध कहानियॉ है– व्यथित हदय की 'दादी ने कहा, बच्चो ने सुना', जैनेंद्र की 'अपना–अपना भाग्य' आनंदकुमार की 'बुद्धिमान शत्रु', 'लालची गधा', 'कपटी बिलाब', 'अपने को पहचानो', जयप्रकाश भारती की 'बंदरो का नाटक', कमलेश्वर की 'होताम के कारनामें'। इस दौर में कई ऐसी जानदार कहानियॉ लिखी गई जो बच्चों के मन को टटोलने के साथ ही जीवन में आगे राह खोजने में मदद करती है। ये कहानियां अच्छे दोस्त की तरह होती है, जिनसे की गई दोस्ती जीवन भर चलती है और उनको याद करने पर हम खुद अपने बचपन मे पहॅुच जाते है। 'हाथ भर का बुद्धा' (वृंदावन लाल वर्मा) 'नटखट चाची' (अमृतलाल नागर) 'कॉटेदार आदमी', 'सुनहरा मुरगा' (मोहन राकेश) 'तितली के बच्चे' (शैलेश मटियानी) 'टिंगू की क्या गलती थी' (हरिशंकर परसाई) 'गाने वाली चिडिया' (अमृता प्रीतम) आदि ऐसी ही दिलचस्प और न भुलाई जा सकने वाली कहानियां है। इस काल मे पूर्व राष्ट्रपति व शिक्षाशास्त्री डॉ जाकिर हुसेन की 'अब्बू खां की बकरी' पहाडी परिवेश पर लिखी लाजबाब कहानी है।

हिंदी बाल कहानी के विकास का तीसरा चरण 1980 के बाद प्रारंभ होता है । इस समय जहॉ एक ओर कमलेश्वर , देवेद्र सत्यार्थी, विष्णु प्रभाकर जैसे कहानीकारो ने लिखा, वही नई दृष्टि एवं नई संभावनाओ से युक्त युवा लेखको की सशक्त पीढी आई, जिन्होंने बाल कहानी में कथ्य और भाषा के स्तर पर नए नए प्रयोग किये । अतः: इस युग की कहानियां न केवल बच्चों के मन और इच्छा संसार के निकट पहॅुचती है बल्कि उनके मन की हलचलों भय, गुस्से, आकोश तथा सपनों की झलक भी दिखाती है। इस युग के प्रसिद्ध कहानीकार है– देवेन्द्र कुमार, विनायक, अमरगोस्वामी, उषा यादव, सुरेखा पाणंदीकर, राकेश जैन, बच्चो के प्यारे कवि दिविक रमेश, हिन्दी बाल इतिहास के लेखक प्रकाश मनु, क्षमा शर्मा, रमेश आजाद, प्रेम जनमेजय, दामोदर अग्रवाल, हरदर्शन सहगल आदि।

इन सभी में प्रकाश मनु बच्चों के सुपरिचित कथाकार हैं, जिनकी कहानियॉ बाल मन को गुदगुदाती हैं तो कभी कुछ सिखाती हैं और नई दिशा देती चलती हैं। उनका कथन हैं – ''बाल कहानी एक ऐसा जादुई खिलौना हैं, जो बच्चों के मन में सबसे ज्यादा सपनीले रंग भरता हैं और उसके भीतर अनंत रुप–रंग वाली ऐसी दुनिया बसा जाता हैं, जिसके कमरों में से कमरे, दरवाजों में से दरवाजे खुलते चले जाते हैं और यों जिदगीं अपने पूरे आदमकद रूप में, पूरी खूबसूरती के साथ उसके भीतर दस्तक देती हैं।'' **(2)** प्रकाश मनु की बाल कहानियों के संग्रह हैं – 'इक्यावन बाल कहानियॉ', 'चिन चिन चूँ', 'भुलक्कड़ पापा', 'लो चला पेड़ आकाश में', 'नटखट नंदू की कहानियॉ', अजब–अनोखी विज्ञान कथाऍ', 'मेले में ठिनठिनलाल', 'मैं जीत गया पापा' तथा 'मेरे मन की बाल कहानियॉ'। इनमें एक ओर परंपरागत किस्सागोईवाली कहानियॉ हैं तो दूसरी ओर फंतासी कथाऍ और विज्ञान कथाऍ भी। ऐसे ही प्रकाश मनु की कहानी 'करामातीलाल की तलवार' में हास्य–विनोद के रंग हैं।

प्रकाश मनु की ज्यादातर कहानियों के केन्द्र में बच्चे हैं। अपने छोटे–छोटे सुख–दुःख, भय, इच्छाओं, आकांक्षाओं और रोमांच भरे संसार के साथ बहते हुये नटखट बच्चे। उनके संग्रह 'नंदू भैया की पतंगें' (2002) में शामिल 'जमुना दादी' कहानी में ज्यादातर ऐसे ही बच्चों का वर्णन है, जो जमुना दादी के घर में कूदकर खूब उत्पात मचाते हैं और पत्थर फेंककर जामुन के एक पेड़ से जामुन गिराते और खाते हैं, मगर कहानी का अंत होते होते सब बदल जाते हैं। तब बच्चे चोटिल जमुना दादी की सेवा करते हैं और दादी उन्हें इतनी प्यारी–प्यारी कहानियॉ सुनाती है कि फिर बच्चों और जमुना दादी में जो दोस्ती हुई, वह अंत तक चलती रही। ऐसे ही प्रकाश मनु की 'रंग–बिरंगे खरगोश'

कहानी में एक नन्हे से बच्चे मखना का वर्णन है, जो मॉ से जिद करके अपने लिये खरगोश मॅगवा लेता है और होली खेलते समय जब ये प्यारे–प्यारे नरम खरगोश होली के रंगों से सराबोर हो जाते हैं तो उसका मन भी भीग जाता है। 'झटपट सिंह', 'मिठाईलाल', और 'होली है भई होली है' हास्य के रंगों से सराबोर कहानियॉ हैं। 'चीं–चीं चिड़िया' में लम्बी–चौड़ी गप्प हॉकने वाले अज्जू का किस्सा है, तो 'नंदू भैया की पतंग' में ऐसे प्यारे से गोल–मटोल नंदू भैया हैं, जिनके नटखटपन और शरारतीपन का जबाब नहीं। 'तुम भी पढ़ोगे जस्सू', 'मॉ का प्यार' और 'रहमान चाचा' आज की तकलीफों से जुड़ी, कुछ अलग तरह की भावनात्मक कहानियॉ हैं।

प्रकाश मनु की 'तितली का घर', 'चींटी चढ़ी पहाड़ पर', 'चुनमुन और चिड़िया का बच्चा', 'चिड़ियाघर में चुनमुन' तथा 'शेर गिरा धड़ाम' कहानियॉ पशु–पक्षियों के आनंदमय संसार में झॉकने की कोशिश करती हैं। इनमें ज्यादातर कहानियॉ ऐसी हैं जो छोटे बच्चों को बहुत अच्छी लगेंगी। 'तितली का घर' में एक छोटे बच्चे सोनू और तितली की कथा है। खेल–खेल में सोनू से तितली का घर टूट गया। अब कैसे सोनू तितली के लिये दुबारा से सुंदर घर बनाता है और तितली के कहने पर फिर सजावट भी करता है, यह कथा एक छोटी सी कहानी 'तितली का घर' में नाटकीय ढ़ग से कही गई है। 'चींटी चढ़ी पहाड़ पर' में चींटी पहाड़ की चढ़ाई का फैसला कर लेती है और उसे पहाड़ पर चढ़ते देख हाथी, घोड़ा, ऊॅट, शेर, खरगोश सब हॅसे। मगर चींटी जब सचमुच पहाड़ पर पहुॅच गई तो उसने साबित कर दिया कि सच्ची हिम्मत तो मन में होती है। 'चिड़ियाघर में चुनमुन' सरीखी कहानियों में नटखट चुनमुन का चरित्र बच्चों को अपना सा लगता हैं। कुछ अरसा पहले 'बालवाटिका' में छपी प्रकाश मनु की 'फागुन की परी' (फरवरी 2016) ऐसी कहानी है, जो परीकथा है भी और नहीं भी। असल में 'फागुन गॉव की परी' में एक परी है; निम्मा परी, जो श्रम का सम्मान करती है वो बुधना के साथ ईंटें तो ढ़ोती ही है। साथ ही उसे गॉव की बूढ़ी अम्मा के साथ आटा गूंदनें, रोटी सेंकने और पानी भरकर लाने में भी आनंद आता है प्रकाश मनु ने इस कहानी में जो प्रयोग किया था, कुछ–कुछ यही कोशिश थोड़े नये अंदाज में 'बुद्धू का रिक्शा कमाल' कहानी में भी रही। यह भी असल में एक ऐसी परीकथा है, जिसमें परी है भी और नहीं भी, है तो बस केवल एक खुशनुमा अहसास की तरह, खुशबू की तरह, जिसमें चीजें बदली सी नजर आती हैं और हम खुद को भीतर–बाहर से बदला हुआ महसूस करते हैं तब मुश्किलें खुद–ब–खुद हल हो जाती है।

आजादी की लड़ाई से जुड़ी प्रकाश मनु की कहानियॉ हैं – 'और लहरा उठा तिरंगा' एवं 'हिरनापुर का शहीद मेला'। 'और लहरा उठा तिरंगा' कहानी के तकली बाबा में जैसे सचमुच गॉधीजी उपस्थित हैं। कहानी में मोहना की बलिदानी भावना और गुलामी की पीड़ा मन को झकझोर जाती है। होली के रंगों में रंगी प्रकाश मनु की कहानी 'भुल्लन चाचा के साथ होली' में बचपन की मस्ती के रंग हैं। यही भुल्लन चाचा क्रिसमस पर लिखी गई कहानी 'भुल्लन चाचा के साथ क्रिसमस' में भी मौजूद है। एकदम देशी ठाट वाली बड़ी–बड़ी मूॅछों और बुलंद आवाज वाले लहीम–शहीम भुल्लन चाचा प्रकाश मनु के सदाबहार किरदार हैं, जो उनकी कई कहानियों में उपस्थित हैं।

वर्तमान युग वैज्ञानिक युग हैं, अतः बच्चों की विज्ञान में स्वाभाविक रूचि हैं, जो निरंतर बढ़ती जाती हैं। इसी कारण वर्तमान कथाकारों ने भी एक–से–एक खूबसूरत विज्ञान फंतासी कथाऍ लिखी हैं, जो एक ओर बालकों को रिझाती हैं, तो दूसरी ओर खेल–खेल में उन्हें विज्ञान के जटिलतम सिद्धांतों से परिचित कराती हैं। इसी क्रम में प्रकाश मनु भी लंबे अरसे से विज्ञान फंतासी कथाऍ लिखते आ रहे हैं। उनकी विज्ञान फंतासी कहानियों के दो संग्रह छपे हैं, 'अजब–अनोखी कथाऍ' (2006) तथा 'विज्ञान फंतासी कथाऍ' (2015)। उनकी 'लो चला पेड़ आकाश में' और 'मंगल ग्रह की लाल चिड़िया' सरीखी विज्ञान कथाओं की बहुत चर्चा रही है। 'लो चला पेड़ आकाश में' कहानी में महानगर के यातायात जाम जैसी परेशानियॉ झेल रहे अज्जू के पापा सुकांत भट्टाचार्य सोचते हैं, क्या ही अच्छा हो, अगर उनके घर के सामनेवाला पेड़ ही यान बन जाये। वे उस पर बैठ कर रोज सुबह दफतर जाऍ और शाम को वहॉ से मजे में घर आ जाया करें। बात हॅसी–हॅसी में कही गई थी, पर सचमुच कुछ समय बाद ऐसा ही हुआ। उनके घर के सामने खड़ा पेड़ उड़ते हुये उन्हें दफतर ले गया और शाम को वापस ले आया और फिर नाटकीय फंतासी से जुड़े

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

एक से एक मजेदार किस्से इस कहानी में हैं। इसी तरह 'मंगल ग्रह की लाल चिड़िया' बड़ी दिलचस्प विज्ञान फंतासी कथा है। मन की तरंगों पर हवा में उड़नेवाली कुप्पू की कुरसी भी किसी आश्चर्यलोक से कम नहीं है। 'गोपी की फिरोजी टोपी' और 'पप्पू की रिमझिम छतरी' में कंम्प्यूटर और लेजर किरणों के कमाल से एक अद्भुत फंतासी हमारी ऑखों के आगे साकार हो उठती है। यही नहीं, प्रकाश मनु की इन फंतासी कथाओं में कहीं कोई रोबोट गिलगिल सेवन चौकीदार बनकर सबको अचंभे में डाल देता है, तो कहीं कोई शिंगाई फू शुम्मा चिड़िया छोटे बच्चों को एक अदृश्य लोक की सैर कराने ले जाती है, जहॉ का मंजर देखकर मन मुग्ध हो उठता है।

इसी तरह संसार के भिन्न–भिन्न अंचलों की लोककथाओं को सहजने की भी कोशिश हुई है। देवेन्द्रकुमार की 'एशिया की सर्वश्रेष्ठ कथाऍ' तथा कॉमनवेल्थ देशों की अद्भुत लोककथाऍ' इस लिहाज से सुंदर पुस्तकें हैं। प्रकाश मनु ने 'भारत की श्रेष्ठ लोककथाऍ' पुस्तक लिखी, जिसमें विभिन्न राज्यों की लोककथाऍ बच्चों की ही भाषा में ढलकर सामने आती हैं।

बाल कहानियों में लोक–संस्कृति और लोक–परिवेश में रच–बस गए उम्दा हास्य चरित्रों – बीरबल, तेनालीराम, खोजा नसरूद्दीन, गोनू झा, गोपाल भांड आदि को आज के बदलते वक्त के हिसाब से, नए और दिलचस्प ढ़ग से उभारने की कुछ अच्छी कोशिशें भी हुई हैं। प्रकाश मनु ने 'तेनालीराम की चतुराई के अनोखे किस्से' पुस्तक लिखी, जिसमें तेनालीराम की कहानियों की कुछ नए और सृजनात्मक ढ़ंग से प्रस्तुति हुई है। इन्हें पढ़ते हुये तेनालीराम के हास्य–विनोद के साथ ही उसकी बुद्धिमता की भी मन पर गहरी छाप पड़ती है। बच्चे इन कहानियों का आनंद लेंगे, इनसे बहुत कुछ सीखेंगे भी।

अक्सर हिंदी में बाल कहानियों के छोटे–छोटे संग्रह छापने का रिवाज है, जिन्हें बच्चे आसानी से पढ़ लेते हैं। उनका मूल्य भी अधिक नहीं होता, पर इधर हिंदी में बाल कहानियों के कुछ ऐसे बृहत् संग्रह भी छापे जा रहे हैं जिनमें एक लेखक की समूची कथा–यात्रा में से बहुत सी चुनिंदा या प्रतिनिधि कहानियॉ एक साथ पढ़ने को मिल जाती हैं। इससे किसी बाल कथाकार की कहानियों के अलग–अलग रंग, शेड्स को जानने का मौका तो मिलता ही है, साथ ही उसके मूल्यांकन के लिये एक सही जमीन भी तैयार होती है। इस लिहाज से आत्माराम एंड संस (दिल्ली) ने इक्यावन बाल कहानियों की एक अच्छी और खूबसूरत सीरीज शुरू की है। इसमें अलग–अलग लेखकों की इक्यावन बाल कहानियॉ एक जिल्द में पढ़ने को मिल जाती हैं। इक्यावन बाल कहानियों की इस सीरीज में देवेन्द्रकुमार, अमर गोस्वामी, प्रकाश मनु, क्षमा शर्मा, भगवतीशरण मिश्र समेत कई लेखकों की बाल कहानियॉ छपी हैं। ऐसे ही कुछ महत्वपूर्ण प्रयास और भी हुए हैं। सन् 2012 में प्रकाश मनु के अतिथि संपादन में निकला 'साहित्य अमृत' का बाल साहित्य विशेषांक अच्छी बाल कविताओं के साथ–साथ सुंदर और रसपूर्ण बाल कहानियों के लिहाज से भी एक मील का पत्थर था, जिसे आज भी लोग आदर से याद करते हैं।

इतना सब होने के बाद भी बाल साहित्य के क्षेत्र मे अभी और ज्यादा प्रयास और शोध की आवश्यकता है। बाल साहित्य पर केद्रित विचार–विमर्श और सेमिनार की भी आवश्यकता है। इस क्षेत्र में प्रवेश कर गए दुराग्रहों व पूर्वाग्रहों से हमें बचना होगा। साथ ही निज अहंकार तुष्टि के लिए की गई बचकानी बहसों को छोडकर इस पर विचार करना होगा कि आज का बाल–साहित्य कैसा हो। साथ ही बाल साहित्य के क्षेत्र में आ गई राजनीतिकरण का विरोध भी जरूरी है। पर सबसे महत्वपूर्ण है अच्छे बाल साहित्य की पहचान और उसका प्रसार क्योकि "जिस देश के पास समृद्ध बाल साहित्य नही है वह उज्ज्वल भविष्य की आशा कैसे कर सकता है।"

आज के समय में एक अच्छी कहानी क्या हो सकती है ? इसके बहुत जवाब हो सकते हैं। एक–दूसरे को काटते हुऐ और परस्पर विरोधी भी। मगर प्रकाश मनु का जवाब हैं, कि आज की कहानी में किस्सागोई और भाषा की रवानी तो दादी–नानी की परंपरावाली हो, पर भाव ओर संवेदना आधुनिक जीवन और मूल्यों से जुड़ी हुई हो। यानी हमें दादी–नानी की कहानियों की परंपरा को पुनर्नवा करना होगा। हिंदी के बड़े से बड़े साहित्यकारों ने माना है कि

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

बचपन में सुनी दादी–नानी की कहानियों ने ही आगे चलकर उन्हें साहित्यकार बनाया और साथ ही उन्हें जीवन की गहरी समझ दी। आज के बच्चों का यह दुर्भाग्य है कि उन्हें जाने–अनजाने दादी–नानी की इस महान कथा–परंपरा से दूर कर दिया गया है। ऐसे में मैं सोचता हूं कि आज बाल साहित्य के लेखकों को दादी–नानी बनकर लिखना होगा, ताकि वह कथा–परंपरा को बदलते समय के मुताबिक एक नए कलेवर में सामने आ सके। (3)

संदर्भ सूची

1. हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास – प्रकाश मनु , पृ. 19
2. दुर्गादास उपन्यास की भूमिका – प्रेमचन्द
3. हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास – प्रकाश मनु , पृ. 313
4. आजकल : बाल साहित्य–परंपरा और आधुनिकता बोध – विजय शंकर मिश्र
5. बाल साहित्य इक्कीसवीं सदी में – जयप्रकाश भारती
6. हिंदी का बाल साहित्य : परंपरा,प्रगति और प्रयोग –दिविक रमेश
7. सृजन मूल्यांकन, प्रकाश मनु विशेषांक – सं. अनामीशरण बबल

❑❑❑

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

5.

महावीरचरितम् में पात्र योजना

डॉ. नरोत्तम
सहायक प्राध्यापक (संस्कृत)
एम.एल.बी.कला एवं वाणिजय महाविद्यालय, ग्वालियर म.प्र.

संस्कृत साहित्य की परंपरा वेद से आरम्भ होती है। वेद अपौरुषेय माने जाते हैं, लेकिन इनके बाद में पौरूषेय काव्य की परंपरा या लौकिक काव्य की परंपरा महर्षि वाल्मीकि से आरम्भ होती है। उन्होंने राम कथा रूपी भागीरथी को प्रवाहित है, जो निरंतर प्रवाहमान है। वहीं से काव्य की विधाएं ओर परंपराएं शुरू हुई है, और कालान्तर में आकर के ये प्रतिष्ठित हुई। इसी परंपरा में कई सारे कवियों ने अपना योगदान दिया, जिसमें महाकवि भवभूति प्रमुख हैं। जिन्होंने नाट्य विधा को अपनी लेखनी का आधार बनाया, और तीन महत्वपूर्ण रूपकों की रचना की । जिसमें महावीरचरितम् एक महत्वपूर्ण उनकी कृति है। जिसे उनकी पहली कृति मानते है, और इसी ''महावीरचरितम् में पात्र योजना'' यहाँ पर अपेक्षित है। नाट्यशास्त्र के अनुसार किसी भी नाट्य के तीन तत्व महत्वपूर्ण होते हैं जैसा कि आचार्य धनंजय ने दशरूपक में बताया है –

वस्तु नेता रसस्तेषां भदेकः[१] ।

यहाँ नेता ने आशय पात्र से है और पात्रों का नाट्य में महत्वपूर्ण स्थान होता है, क्योंकि वे मंच पर आते हैं, और अपना अभिनय करते है।

नाटक लोक की अनुकृति है। अतः उसमें समाज के विभिन्न अंगों का अधिक से अधिक प्रतिनिधित्व वांछनीय है । नाटककार भवभूति ने महावीरचरितम् में अनेक प्रकार के पात्रों का समावेश किया है। नाटककार भवभूति ने रामाणीय पात्रों के अतिरिक्त कुछ नये पात्रों की कल्पना कर ली है, तथा कुछ प्राचीन पात्रों को नवीन रूप में प्रस्तुत किया है।

नायक –

महावीरचरितम् नाटक के नायक श्रीराम है। नायक का लक्षण दशरूपककार आचार्य धनंजय ने इस प्रकार दिया है –

नेता विनीतो मधुरस्त्यागी दक्षः प्रियंवदः।

रक्तलोकः शुचिर्वाग्मी रूढवंशः स्थिरो युवा।।

बुद्धयुत्साहस्मृति प्रज्ञाकलामान समन्वितः।

शुरो दृढश्च तेजस्वी शास्त्रचक्षुश्च धार्मिकः।।[२]

यह नायक चार प्रकार का होता है ˙ 1–धीरललित, 2. धीरशान्त, 3. धीरोदात्त, 4. धीरोद्धत[३] ।

महावीरचरितम् नाटक के नायक श्रीराम धीरोदात्त कोटि के नायक है। जिसका लक्षण दशरूपककार आचार्य धनंजय के अनुसार यह है –

महासत्वोऽतिगम्भीरः क्षमावान विकत्थनः।

स्थिरो निगूढाहड.कारो धीरोदात्तो दृढवृतः ।।[४]

महावीरचरितम् नाटक के नायक श्रीराम में धीरोदात्त नायक के समस्त लक्षण विद्यमान है। वे प्रख्यात वंश में उत्पन्न हुए है। उनके कुल की प्रतिष्ठा का वर्णन कुशध्वज, वशिष्ठ, तथा विश्वामित्र ने किया है। इन्द्र पर उपकार करने वाले पराक्रमी राजाओं के वंश में जन्म लेने के कारण राम के चरित्र में सभी सद्गुणों का समावेश स्वाभाविक है।जब राम को राज्याभिषेक के लिए बुलाया तब और जब उन्हें वन गमन के लिये विदायी दी गई तब दोनों वक्त राम के मुख पर कोई थोड़ा सा भी विकार नहीं दिखा, और पिता की आज्ञा के पालन हेतु वन गमन के लिए सहर्ष लक्ष्मण के साथ निकलते हैं।

तत्रैव गमनादेशो यत्र पर्युत्सुकं मनः।

न चेष्टविरहो जातः स च वत्सोऽनुजोऽनुगः। [५]

राम सच्चे अर्थ में शूर है, और स्त्री पर प्रहार करना शूरता नहीं। इसलिए वे राम ताड़का वध के प्रस्ताव को सुनकर विश्वामित्र से कहते है –

भगवन्! स्त्री खल्वियम्[६]।

जब ताड़कावध की अनिवार्यता सिद्ध करते हुए विश्वामित्र उन्हें पुनः आदेश देते हैं। तब उनकी स्वीकृति को ही पाप–पुण्य का प्रमाण मानते हुए वे ताड़का पर प्रहार करने के लिए उद्यत होते हैं।

राम अत्यंत प्रतापवान एवं गंभीर है। धनुर्भङ्ग के अवसर पर उनके प्रभाव को देखकर रावण का दूत भी आश्चर्यचकित हो गया था। रावण सीता की मंगिनी कर रहा है, लक्ष्मण को यह बात बुरी लगती है परन्तु राम को इसमें कुछ अनौचित्य नहीं प्रतीत होता है। राम की कितनी गंभीरता और आदरभरी यह उक्ति है। जिसमें वे कहते हैं कि साधारणतः के कारण कन्या की मंगनी अन्य कोई भी कर सकता है फिर वह तो ब्रह्मा के प्रपौत्र रावण हैं

साधारण्यान्निरातडकः कन्यामन्योऽपि याचते।

किं पुनर्जगतां जेता प्रपौत्रः परमेष्ठिनः।।[७]

राम में सौजन्य की मात्रा पराक्रम से किसी प्रकार कम नहीं है। वे क्रुद्ध परशुराम द्वारा समस्त क्षत्रिय जाति पर अपशब्दों का प्रयोग किये जाने पर भी उनका सहज सौजन्य उन्हें मुनिवर के चरण स्पर्श के लिये प्रेरित करता है। अपने ही द्वारा परास्त किये गये जामदग्न्य से हाथ जोडकर वे क्षमा याचना करते हैं क्योंकि उन्होंने वंदनीय तपस्वी के विरूद्ध शस्त्र उठाने की धृष्टता की[7]।

यद्ब्रह्मवादिभिरूपासितवन्द्यपादे विद्यातपोव्रतनिधौ तपतां विरिष्ठे।

दैवात्कृतस्त्वयि मया विनयापचारस्तत्र प्रसीद भगवन्नयमञ्जलिस्ते।।[८]

राम के सौजन्य में कहीं लेशमात्र भी दुर्बलता का आभास नहीं हो पाता। उनका यह सौजन्य माहात्म्य से मण्डित है। जब परशुराम उनके आलिंगन की इच्छा करते हैं तब वे कहते है–भगवन्! आलिंगन तो इस समय परिस्थिति के विरूद्ध होगा।[९] जामदग्न्य की पैनी दृष्टि राम के सौजन्य में छिपे हुए स्वाभिमान को परख लेती हैं अपने स्वाभिमान को आघात पहुँचाने वाली कोई भी बात राम को सहन नहीं है। जब परशुराम उन्हें अपना दीप्त परशु दिखाते हे, तब वे बड़े धैर्य के साथ उस परशु का उपहास करते है, जिससे उनकी निर्भीकता, स्थिरता, स्वाभिमान, दृढ़ता तथा आत्मविश्वास का परिचय मिलता है। ऐसी ही साहसपूर्ण निर्भीकता उस समय व्यक्त होती है जब वे परशुराम की आत्मश्लघा, जिसमें वे क्षत्रियों का इक्कीसवार संहार करने तथा गर्भस्थ बालकों को निकाल–निकाल कर काटने के पराक्रम का वर्णन करते हैं तब राम यह कहकर उत्तर देते हैं– नृशंसता हि नाम पुरुषदोषः । तत्र का विकत्थना।[१०]

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

जो उनकी शरण में आता है, उस पर वे असीम कृपा करते हे। विभीषण को उन्होंने शरण में आते ही लंकेश्वर बना दिया।[११] परन्तु जो मर्यादा का उल्लंघन करता है वह चाहे कोई हो उन्हें प्रिय नहीं। जनक के कन्यान्तपुर में मुनि भार्गव के सहसा प्रवेश उन्हें अच्छा नहीं लगा।[१२] वे स्वयं मर्यादा का सदा पालन करते हैं कर्तव्य पालन का भी वे सदैव ध्यान रखते हैं। कर्तव्य चाहे कितना भी कठोर क्यों न हो, वे दृढ़ता पूर्वक उसका पालन करते है।

राम, माता पिता को प्रणाम कर युधाजित मामा से यह कहते है कि आपको ही इस शोक अवस्था में माता–पिता को देखना है और वन गमन के लिये निकलते हैं –

एष तातश्च तातश्च प्रियापत्याश्च मातरः।

आश्वासनीयाः शोकेऽस्मिसन् भवतैव गता वयम्।।[१३]

राम के निर्मल चरित्र की सराहना केवल विश्वामित्र ने ही नहीं की है अपितु परशुराम, वाली भी उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा करते हैं।

नायक के सहयोगी पुरूष पात्र –

विश्वामित्र – महर्षि विश्वामित्र नायक के प्रधान सहायक हैं। वे राम की भलाई के लिये सर्वदा प्रयत्नशील है। वे स्वयं तपस्वी है और उन्हें अपने लिए कुछ नहीं चाहिए, परन्तु लोक कल्याण की भावना से प्रेरित होकर ही उन्होंने राम द्वारा राक्षसों का वध कराया और अपने आश्रम में ही उन्होंने इस शुभ कार्य का आरंभ किया। ताडका के उपस्थित होते ही वे राम को आदेश देते है वत्स इसका वध करो।

रामं (चिबुकप्रदेशे स्पृशन्) हन्यतामियम।[१४]

सेयं सुकेतोर्दुहिता भार्या सुन्दासुरस्य च।

मारीचजननी घोरा ताटका नाम राक्षसी।।[१५]

यज्ञ में विघ्न उत्पन्न करने वाले सुबाहु और मारीच को मारने के लिऐ वे राम लक्ष्मण को आदेश देते हैं –

तद वत्सौ। हन्युतामेष यज्ञप्रत्यूहः।[१६]

राम के प्रति विश्वामित्र का हृदय इतना वात्सल्यपूर्ण है कि तपः स्वाध्याय में अत्यधिक व्यस्त होने पर भी वे राज्याभिषेक के अवसर पर स्वयं अयोध्या पहुंचते हैं ।

वसिष्ठ –

वयोवृद्ध ज्ञानवृद्ध, परमादरणीय महर्षि वसिष्ठ का स्थान महात्म्य की दृष्टि से इस नाटक में सर्वोपरि है। वे अत्यंत शांत प्रकृति के ब्रह्मनिष्ठ तपस्वी है। तथा ऋषि, महर्षि, राजा तथा प्रजा सभी के पूज्य है। गौरवशाली सूर्यवंश का गौरव और अधिक इसलिये बढ़ गया कि उनके गुरू वसिष्ठ है। वनवास से लौटने पर राम को दिये गये आशीर्वाद में भी महर्षि की लोक कल्याण भावना अभिव्यक्त हुई हे –

क्षमायाः स क्षेत्रं गुणमणिगणानामपिखनिः

प्रपन्नानां मूर्तः सुकृतपरिपाको जनिमताम्।

कृतारामो रामो बहिरिह दृशोपास्यत इति

प्रमोदाद्वै तस्याप्युपरि परिवर्तामह इमे।।[१७]

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

जनक– जनक राजा होते हुए भी ऋषि है। वे सदा यज्ञादि कार्यो में इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हें दूसरे कार्यो के लिये अवकाश ही नहीं मिलता। इसलिये वे विश्वामित्र के यज्ञ में उपस्थित नहीं हो सकें। नाटक में जिस परिस्थिति में उन्हें प्रस्तुत किया गया है। वह भिन्न प्रकार की है, उनके सम्मुख क्रुद्ध परशुराम है जो राम का अनिष्ठ करना चाहते हैं। जिन्होंने पूर्व सूचना के बिना कन्यान्तःपुर में प्रवेश कर राजकीय मर्यादा का उल्लंघन किया है। राजा जनक कहते हैं कि परशुराम ऋषि है यदि वे अतिथि के रूप में आये हैं तो उनका उचित रीति से आसन, अर्ध्य आदि स्वागत किया जाए, परन्तु वे रिपु के रूप में आकर ही राम का अहित करना चाहते है तो उनके अनैतिक व्यवहार के कारण उन पर धनुष का प्रयोग किया जाए –

ऋषिरयमतिथिश्चेद्विष्टरः पाद्यमर्ध्य

तदनु च मधुपर्कः कल्प्यतां श्रोत्रियाय।

अथ तुं रिपुरकस्माद्द्वेष्टि नः पुत्रभाण्डं।

तदिह नयविहीने कार्मुकस्याधिकाराः।[१८]

दशरथ– दशरथ के चरित्र का प्रधान गुण वात्सल्य इस नाटक में पूर्णतया व्यक्त हुआ है। जब राम प्रचण्ड जामदग्न्य से युद्ध करने की घोषणा करते हैं । तब दशरथ चिन्ताकुल हो उठते हैं, राम के राज्यभिषेक के प्रस्ताव को सुनकर उन्हें अत्यंत प्रसन्नता होती है, और वन गमन का प्रसंग उठते ही राम के वियोग की कल्पना से मूर्छित हो जाते है [१९] और जब राम वन की ओर प्रस्थान करने लगते है तब वे अत्यंत करूण विलाप करते हैं। पुत्र विरह में प्राणों का परित्याग कर देते हैं

लक्ष्मण – लक्ष्मण के चरित्र में वीरभाव तथा भ्रातृ प्रेम की गंगा युमना आदि से अंत तक विद्यमान हैं। लक्ष्मण की भ्रातृ भक्ति में ईर्ष्या की गंध भी नहीं पायी जाती है, राम धुनष भंग करेंगे, तब लक्ष्मण की प्रसन्नता असीम हो उठती है वे कहते हैं –

दिष्टया देवदुन्दुभिध्वनिः पुष्पः वृष्टिश्च।[२०]

शतानन्द – शतानन्द, जनक के राजपुरोहित है उन्होंने दृढ़तापूर्वक अपने कर्तव्य का पालन किया। जामदग्न्य के साथ उनका वार्तालाप राजगुरू के गौरव से युक्त है। विश्वामित्र ने शतानन्द के बारे में कहा है, कि शतानन्द जैसा पुरोहित पाकर जनक कृतार्थ हुए है। वह राज्य कभी व्यथित नहीं होता, उस पर कोई आपत्ति नहीं आती और न कभी वह जीर्ण होता है, जहाँ राष्ट्र की रक्षा करने वाला शतानन्द जैसा पुरोहित हो –

न तस्य राष्ट्रं व्यथते न शिष्यति न जीर्यति।

त्वं विद्वान् ब्राह्मणों यस्य राष्ट्रगोपः पुरोहितः।।[२१]

इनके अतिरिक्त नायक के सहायक पुरूष पात्रों में **भरत कुशध्वज, युधाजित, सुमन्त्र** इत्यादि है।

नायक के अन्य सहायक पात्र – हनुमान, सुग्रीव, अंगद, वासव, चित्ररथ, विभीषण, जटायु, सम्पाति, आदि ।

नायक के विरोधी पुरूष पात्र –

रावण – नायक के विरोधी दल के नेता रावण को इस नाटक में चरित्र चित्रण की दृष्टि से उतना महत्व नहीं दिया गया है। जितना प्रतिनायक के रूप में उन्हें मिलना चाहिये। यो तो आरंभ में ही अन्य पात्रों द्वारा उनकी कुलीनता, वीरता, विद्वता, तपस्या आदि का परिचय हमें मिल जाता है। परन्तु उनके प्रत्यक्ष दर्शन का अवसर छठे अंक में प्राप्त होता है। तब तक वे पृष्ठभूमि में ही रहते है और प्रतिनायक की ओर से बनायी जाने वाली समस्त योजनाओं का

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

निर्माण और नियंत्रण उनका मंत्री माल्यवान करता है। रावण जो रूप हमें इस नाटक में देखने को मिलता है वह सर्वदा निष्प्रभ्र और निस्तेज है।

माल्यवान – यह रावण का मातामहभ्राता तथा मंत्री है, इसकी योग्यता प्रशंसनीय हैं माल्यवान बुद्धिमान होने के साथ उसका आत्माभिमान भी सुरक्षित है। वह रावण की सेवा तो बडी लगन से करता है परन्तु रावण के आलस्य और विचार उसे अच्छे नहीं लगते है, वह उसके लिये खेद ही प्रकट करता है –

साचिव्यं नाम महते सन्तापाय।

यत्किंञ्चददुर्मदाः स्वैरमाद्रियन्ते निरर्गलम्।

तत्र तत्र प्रतीकारश्चिन्त्यो वक्रे विधावपि।[२२]

परशुराम– महावीरचरितम् नाटक के पात्रों में परशुराम की पात्रता सर्वाधिक प्रशंसनीय है। स्वाभाविक वीरता, तपस्या, तथा गुरूभक्ति से प्रेरित होकर वे रंगमंच पर आते हैं। वे राम के सामने सत्य परिचय प्रदाय करने पर निर्मम भावना को दवाकर राम की प्रशंसा करने लगते हैं– सत्यमैक्षवाकः खल्वसि। जब महर्षि वसिष्ठ अपने सात्विक उपदेशों से नृशंस वीरता से निवृत्त होने को प्रेरित करते है और परशुराम के पास उन तर्कों का कोई उत्तर नहीं रह जाता है तब वे यही कहते हैं –

शत्रुमूलमनुत्खाय न पुनर्द्रष्टुमुत्सहे।

त्रयम्बकं देवमाचार्यमाचार्यानीं च पार्वतीम्।[२३]

इनके अतिरिक्त नायक के विरोधी पात्रों में वाली, प्रहस्त, सर्वमाय इत्यादि नाम है।

नायिका

दशरूपककार आचार्य धनंजय के अनुसार नायिका के तीन भेद है –

स्वान्या साधारणस्त्रीति तदगुणा नायिका त्रिधा।[२४]

स्वकीया नायिका के विभाग के साथ ही उसका सामान्य लक्षण इस प्रकार दिया है –

मुग्धा मध्या प्रगल्भेति स्वीया शीलार्जवादियुक्[२५]।

शीलं सुवृतम् पतिवृताऽकुटिला लज्जावती पुरूषोपचारनिपुणा स्वीया नायिका।

मुग्धा नववयः कामा रतौ वामाः क्रुधि।[२६]

सीता– महावीरचरितम् की नायिका सीता है, उन पर मुग्धा के नायिका के समस्त लक्षण दिखाई देते है। सीता का चरित कोमल भावनाओं की प्रतिच्छवि है। महर्षि विश्वामित्र के आश्रम में राम के सौम्य रूप का दर्शन पाकर उन्हें प्रसन्नता हुई, और उनके मुंह से निकला– सौम्यदर्शनोऽयम्।[२७]

राम को विश्वामित्र ताडकावध की आज्ञा दते है तब वह कह उठती है – हा धिक एष एवात्र नियुक्तः।[२८]

इससे सीता को चिंता हुई और राम की विजय पर उन्हें आश्चर्य के साथ हर्ष हुआ। धनुर्भड़ग के समय जब उर्मिला ने बधाई देते हुए सीता का आलिंगन किया। तब वे केवल प्रसन्न ही नहीं, लज्जित भी हुई। मुग्धा नायिका की यह लज्जा स्वाभाविक है। सीता के विवाह के कुछ ही समय पश्चात कन्यान्तःपुर में प्रवेश कर परशुराम, राम को चुनौती देते है जिससे सीता की चिन्ता चरम पर पहुंच जाती है। वे राम को रोकने का प्रयत्न करती है। जब वे आगे बढने लगते हैं तो धनुष पकड़ लेती है –

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

का गतिः (धनुष धारयन्ती) आर्यपुत्र!

न तावद्यष्माभिर्गन्तव्यं यावत्तातो नागच्छति।[२९]

विवाह के मांड़गलिक कार्य समाप्त होते ही सीता की कठोर परीक्षा आरंभ हो गयी। राम वन गमन की तैयारी करने लगे। सीता को यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई, कि उनके पिता ने उन्हें राम के साथ जाने की स्वीकृति दे दी। इससे यह अवश्य स्पष्ट हो जाता है कि राम से पृथक अपने अस्तित्व की कल्पना सीता कर ही नहीं सकती थी। लंका से लौटते समय उन स्थानों को देखकर जहाँ उनके विरह में राम ने विलाप किया था। वे कहती है अहो कितने दुख की बात है कि मुझ मंदभागिनी के कारण उन्हें इतना कष्ट उठाना पड़ा।

इस प्रकार महावीरचरितम् नाटक में सीता के स्वभाव की कोमलता और उदारता के अतिरिक्त अन्य गुणों पर अधिक प्रकाश नहीं डाला गया है। उनका पति प्रेम आरम्भ से ही स्पष्ट होने लगा था और यथोचित स्थान पर उनकी पति भक्ति पूर्णतया व्यक्त होती चलती है। वस्तुतः पतिव्रत ही सीता का वह सर्वोच्च गुण है जिसके कारण वे संसार में पूज्यनीय बनी है।

नायिका के सहयोगी स्त्रीपात्र –

1. उर्मिला, 2. उरून्धती 3. कैकयी, श्रमणा इत्यादि

नायिका के विरोधी स्त्री पात्र –

1. मंदोदरी, 2. शूर्पणखा, 3. त्रिजटा, 4. लंका, 5. अल्का सखी आदि

नाट्य अभिनय में अपेक्षित पात्र –

सूत्रधार, नट, सूत, तापस, प्रतीहारी, कंचुकी चेटी, मातलि, किन्नर, किन्नरी आदि। नाट्य अभियन में इन पात्रों का भी बड़ा योगदान होता है।

नाटककार भवभूति ने लोकचारित्र को शिक्षा देने के लिये जो राम का चरित्र दिया है और उसको लोकोपयोगी नाट्यरूप में प्रस्तुत किया है। इसके नायक राम धीरोदात्त है, उन पर धीरोदात्त नायक के जो लक्षण हैं उनकी संगति उतरती है। सीता उनकी नायिका है, जो मुग्धा है, उन पर भी नाट्यशास्त्र के नियमों की संगति होती है। महावीरचरितम् के अन्य पात्रों में देव, मनुष्य, और राक्षस तीनों कोटियों के पात्रों का समावेश किया गया है। देवों में वासव, और चित्ररथ दो विभिन्न श्रेणियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मनुष्यों में महर्षि, राजा, मंत्री, राजकुमार, पुरोहित, आदि अनेक वर्गो के पात्र हैं। जहाँ एक ही वर्ग के अनेक व्यक्ति हैं वहाँ भवभूति ने उनके अंतर को स्पष्ट करने का विशेष ध्यान रखा है। वसिष्ठ, विश्वामित्र, शतानन्द, परशुराम एक ही श्रेणी के होने पर भी चारित्रिक विशेषताओं के कारण एक दूसरे से पृथक हो जाते हैं। इसी प्रकार दशरथ, जनक, और कुशध्वज का तथा राम, लक्ष्मण और भरत का अंतर भी स्पष्ट कर दिया है। पात्रों में भवभूति का क्षेत्र केवल देव, दनुज और मनुज तक ही सीमित नहीं हैं, वाली, सुग्रीव, हनुमान, और अंगद वानर है और सम्पाति तथा जटायु पक्षी है।

यद्यपि भवभूति की ख्याति उत्तररामचरितम् के कारण है लेकिन महावीरचरितम् भी अपनी विशेषताओं से अद्वितीय हैं और पात्र योजना तो देखते ही वनती हैं।

संदर्भ सूची

१. १/११ दशरूपक
२ २/१, २/२ दशरूपक

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

३ २/३ दशरूपक
४ २/४ दशरूपक
५ ४/४२ महावीरचरितम्
६ १ महावीरचरितम्
७. १/३१ महावीरचरितम्
८. ४/२१ महावीरचरितम्
९ २/९३ पृष्ठ महावीरचरितम्
१०. २/१०१ पृष्ठ महावीरचरितम्
११. ५/२१५ पृष्ठ महावीरचरितम्
१२. २/७१ पृष्ठ महावीरचरितम्
१३. ४/५३ महावीरचरितम्
१४ १/३५ पृष्ठ महावीरचरितम्
१५. १/३६ महावीरचरितम्
१६ १/५६ पृष्ठ महावीरचरितम्
१७ ७/३३ महावीरचरितम्
१८. २/४४ महावीरचरितम्
१९ ४/५५ महावीरचरितम्
२०. १/४१ पृष्ठ महावीरचरितम्
२१. ३/१८ महावीरचरितम्
२२. ६/३ महावीरचरितम्
२३. ३/६ महावीरचरितम्
२४ २/१५ दशरूपक
२५ २/१५ दशरूपक
२६ २/१६ दशरूपक
२७ १/१८ पृष्ठ महावीरचरितम्
२८ १/३५ पृष्ठ महावीरचरितम्
२९ २/७९ पृष्ठ महावीरचरितम्

❑❑❑

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

6.

भारत में मुद्रा एवं विनिमय का प्रारंभिक स्वरूप

डॉ0 प्रवीण ओझा
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष वाणिज्य विभाग
बी.एल.पी. शासकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय महू

मुद्रा एवं विनिमय प्रणाली के अन्तर्गत वस्तु का लेनदेन मुद्रा के माध्यम से किया जाता है। वर्तमान में वैश्विक स्तर पर इसी प्रणाली को मान्यता प्राप्त है। मुद्रा के प्रचलन से पूर्व आर्थिक जगत में जो वस्तु विनिमय प्रणाली प्रचलित थी, जिसमें बाद में उत्पन्न अनेक दोष एवं व्यापार का बढ़ता स्वरूप मौद्रिक एवं विनिमय जगत में अनेक परिवर्तनों को जन्म देता है। भारत में प्रारंभिक अर्थव्यवस्था में मौद्रिक विनिमय प्रणाली एवं वस्तु विनिमय प्रणाली दोनों का ही प्रचलन रहा जिसका नवीन संवर्धित स्वरूप वर्तमान में दर्शनीय है। यहाँ मुद्रा एवं विनिमय का प्रारंभिक स्वरूप ही इस प्रणाली के विकास का आधार बना।

भारत में जिस समय मानव सभ्यता का विकास होना प्रारंभ हुआ उसके प्रारंभिक काल में अर्थात् पूर्व पाषाण काल में मनुष्य केवल शिकार एवं भोजन हेतु कन्द, फल इत्यादि का संचय करता था। जब कबीलों के रूप में सामाजिक जीवन का विकास हुआ तो प्रारंभ में कबीलों की पारस्परिक दुश्मनी के कारण आपस में वस्तुओं का विनिमय नहीं होता था। किन्तु जैसे–जैसे मानव आवश्यकताएँ बढ़ती गई वैसे–वैसे मानव को अपनी वस्तुएँ बदलने या विनियम की आवश्यकता अनुभव होने लगी। इसी प्रकार वस्तु विनिमय प्रणाली का आरंभ हुआ। जैसे 10 ढेरी चावल बराबर 5 ढेरी दाल इत्यादि। बाद में कुछ ऐसी वस्तुएँ जिनका प्रयोग सभी लोग करते थे विनियम के साधन के रूप में मान्य हो गयीं जैसे– ऋग्वेद के एक सूत्र में इन्द्र की एक मूर्ति का मूल्य गायो में निश्चित करने का वर्णन मिलता है। सभी वर्गो के लोग अपनी सुविधा के अनुरूप वस्तुओं के रूप में विनिमय करते थे जैसे– सैनिक घोड़ों में, शिकारी पशुओं की खालों में, कृषक–अनाज, फल, सब्जी के रूप में विनिमय करते थे। किन्तु यह भी आसान न था क्योंकि इन वस्तुओं में विनिमय की कोई निश्चित दर तय नहीं की जा सकती थी। फिर छोटी वस्तु खरीदने में बड़ी वस्तु घोड़ा, गाय, बड़ी खालों का प्रयोग परेशानी उत्पन्न करता था। इस समस्या के समाधान के रूप में विनिमय के साधन के रूप में धातु का प्रयोग प्रारंभ हुआ। सोना, चांदी, तांबे का ढेर या सलाखें विनिमय का साधन बनने लगीं। भारत में प्रारंभ में व्यापार पूर्णतः वस्तु विनिमय पर ही आधारित था। किन्तु जब व्यापार का पैमाना बड़ा होने लगा तो इस दिशा में नवीन कठिनाईयाँ अनुभव की जाने लगीं यथा– क्रेता एवं विक्रेता दोनों के पास एक दूसरे की जरूरत की वस्तु उपलब्ध हो, यह कठिन होता था। पकी मिट्टी के अनेक त्रिभुज पुरातात्विक खुदाई में प्राप्त हुये हैं जिससे अनुमान लगाया जाता है कि संभवतः ये सभी विनियम के साधन के रूप में अपनाये गये होंगे। इसलिये ऐसी वस्तु की आवश्यकता अनुभव हुयी जो सभी विनिमय हेतु मान्य हो। इस प्रकार मुद्रा का आविष्कार हुआ एवं मौद्रिक प्रणाली का प्रारंभ हुआ।

हड़प्पा सभ्यता जिसे सिन्धुघाटी सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है, में हजारो पकी मिट्टी की मुहरें मिली हैं तथा पकी मिट्टी के अनेक त्रिभुज पुरातात्विक खुदाई में प्राप्त हुए हैं जो संभवतः विनिमय के साधन के रूप में प्रयोग में लाये जाते थे। धातुओं के ढेर एवं सलाखें भी इसी रूप में प्रयुक्त होते रहे होंगे। वैदिक अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान होने के कारण समानांतर व्यवसाय के रूप में पशुपालन का विकास हुआ। अब वस्तु विनिमय के साथ–साथ पशु विनिमय का साधन बन गये। इस काल में विनिमय हेतु सर्वप्रथम धातु के सिक्के प्रयुक्त होने के विवरण प्राप्त होते हैं। ऋग्वेद में वर्णित निष्क सोने के रूप में भी प्रयुक्त होता था। अथर्ववेद में भी ऐसे अनेक उल्लेख मिलते हैं। ऋग्वेद में एक गायक को सौ निष्क एवं एक सौ घोड़े पुरुस्कार में मिलने का प्रसंग मिलता है। मनु एवं विष्णु स्मृति

के अनुसार निष्क चार सुवर्ण के बराबर होता था। मना, स्वर्ण एवं रयि का चांदी के सिक्के के रूप में वर्णन मिलता है। सोने के ढेर को हिरण्य पिण्ड कहा जाता था। एक अन्य सिक्का शतमान का तोल 100 रत्ती के बराबर होता था। उसके आधे, चौथाई और आठवें भाग के बराबर के सिक्कों के नाम क्रमशः अर्धशतमान, पादशतमान, पादार्धशतमान होते थे।

ईसा से 600 वर्ष पूर्व से लेकर 300 वर्ष पूर्व तक बौद्ध साहित्य में निष्क, सुवर्ण, कांस, पाद, मासक, काकणिक और कार्षापण नामक सिक्कों का उल्लेख प्राप्त होता है। ए.एल. बाशम ने अपने ग्रंथ 'वण्डर दैट इज इण्डिया' में लिखा है कि आयताकार या गोलाकार धातु के टुकड़ों का प्रयोग ईसा पूर्व छठवीं शताब्दी से प्रारंभ हुआ। इन्हें आहत मुद्राएं कहते थे जिनका तोल निश्चित होता था तथा इनके ऊपर पर्वत, वृक्ष, सूर्य, मानव पशुओं के चित्र बने होते थे। तक्षशिला से प्राप्त चांदी के सिक्कों का तोल 180 ग्रेन या सौ रत्ती था। मौर्य काल में अधिकांश व्यापार एवं वेतन का भुगतान पण नामक सिक्के में होता था। कौटिल्य ने अपने ग्रंथ अर्थशास्त्र में चांदी के सिक्के पण तथा उसके आधे, चौथाई तथा आठवें भाग के सिक्कों का उल्लेख किया है साथ ही वे तांबे के सिक्के मासक तथा उसके छोटे भाग के सिक्कों का भी वर्णन करते हैं। मौर्य युगीन अर्थव्यवस्था में सिक्कों का व्यापक प्रचलन हो गया था जिन्हें सरकारी अधिकारियों के निरीक्षण में सरकारी टकसालों में ढाला जाता था।

भारत में अगली आधी शताब्दी तक यूनानी, शक, सातवाहन जैसे शासन बार–बार बदलते रहे जिससे मौद्रिक एवं विनिमय व्यवस्था में भी बदलाव आते रहे। यूनानी शासकों के सिक्के द्रेक्रम एवं ओवोत प्रचलित थे तथा ये विदेशी व्यापार में भी काम आते थे। मनुस्मृति में सिक्कों की एक तालिका इस युग की मौद्रिक व्यवस्था पर प्रकाश डालती है –

05 रत्ती	–	1 माष
16 माष	–	1 सुवर्ण
04 सुवर्ण	–	1 निष्क या पल
10 निष्क	–	1 धरण

इस काल में दक्षिण भारत में यूनानियों के सोने के सिक्के, शक शासकों के चांदी के सिक्के, सातवाहनों के सीसे और कम अच्छी चांदी के सिक्के प्रचलित थे। इस काल में सोने के सिक्कों का प्रचलन कम था। कुषाण शासकों ने नियमित रूप से सोने के सिक्के चलाये। इस युग में दक्षिण भारत में रोम के सिक्के भी बड़ी संख्या में प्राप्त होते हैं। कुषाण शासकों के सोने के सिक्के का वजन 123.2 ग्रेन एवं यूनानी शासकों के सिक्के का वजन 134.4 ग्रेन था। छोटा व्यापार अभी भी वस्तु विनिमय प्रणाली से चल रहा था।

गुप्त काल में (लगभग 300 ई0 से 550 ई0 तक) सोने, चांदी के सिक्कों के अनेक संग्रह भी मिले हैं। यहाँ तक कि ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भी इन्हें गलाकर सोने में परिवर्तित कर लिया था। कुषाण युगीन सोने के सिक्कों में 123 ग्रेन में 107 ग्रेन सोना तथा 16 ग्रेन खोट होता था किन्तु गुप्त शासक स्कन्दगुप्त के काल में सोने के सिक्कों में सोने की मात्रा 70 ग्रेन रह गयी जो तत्कालीन अर्थव्यवस्था की आर्थिक कमजोरी की ओर संकेत करती है। इन दोनों कालों में भारत का व्यापार अपने चर्मोत्कर्ष पर था इसी कारण इस युग में सोने के सिक्के भी बड़ी संख्या में प्रचलित थे। चन्द्रगुप्त से कुमारगुप्त के काल तक तांबे के सिक्के भी चलाये गये। इस काल के कुछ ऐसे सिक्के भी मिलते हैं जिनमें नीचे तांबा है और ऊपर से चांदी का कवर चढ़ा है। नारद एवं वृहस्पति संहिता में इनका विनिमय मूल्य भी दर्शाया गया है।

48 काकणि	=	01 पण या 01 मास
20 पण	=	चांदी का 01 कार्षापण या अण्डिका

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

04 कार्षापण	=	01 धानक
12 धानक	=	01 सुवर्ण
04 सुवर्ण	=	01 निष्क

गुप्तकाल के बाद वर्धन एवं राजपूत काल में भी चांदी एवं तांबे का मुद्राओं का प्रचलन ही अधिक रहा। स्वर्ण मुद्राओं में भी स्वर्ण अनुपात कम होता चला गया। इस युग में कलचुरि वंश के सिक्कों पर लक्ष्मी, चौहान शासन में सांड एवं घुड़सवार, दक्षिण भारत में चालुक्य शासन में वराह, चोल सिक्कों पर मछली, धनुष तथा चीते के आकृतियों का विशेष रूप से उल्लेख मिलता है। विनिमय के अन्य साधनों में प्राचीन भारत में आभूषणों एवं चावलों का प्रयोग भी किया जाता था। कल्हण के ग्रंथ राजतरंगिणी के विवरणानुसार कश्मीर में चावल वेतन देने में विनिमय का साधन माना जाता था। विनिमय साधन के रूप में कौड़ियों को तो प्रारंभिक समय से ही मान्यता मिली हुयी थी। प्रसिद्ध विद्वान जी. वॉट ने अनेक ग्रंथ इकनोमिक प्रोडक्ट्स ऑफ इण्डिया में कौडियों के विनिमय मूल्य को निम्न तालिका के रूप में प्रस्तुत किया है :–

20 कौड़ी	=	01 काकिंणि
04 काकिंणि	=	01 तांबे का पण
16 पण	=	01 चाँदी का दम्म

मौद्रिक प्रणाली के प्रारंभिक विकास के उपरान्त भी वस्तु विनिमय प्रणाली सम्पूर्ण व्यापार में मान्य थी। दूर–दूर से आने वाले व्यापारी भी मण्डियों में वस्तु विनिमय कर व्यापार करते थे। ग्रामीण क्षेत्र का अधिकांश व्यापार इसी प्रणाली पर आधारित था। कालान्तर में सोलहवीं शताब्दी में शेरशाह सूरी ने मुद्रा के क्षेत्र में अभूतपूर्व सुधार कर मौद्रिक प्रचलन को बढ़ाया। इस प्रकार प्राचीन भारत में मुद्रा एवं विनिमय का जो प्रारंभिक विकास हुआ उसी का विकसित रूप वर्तमान मौद्रिक प्रणाली एवं विनिमय के रूप में दिखाई देता है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. माइकेल डब्ल्यू ब्रेन्डल – मनी बैंकिंग, फायनेन्शियल मार्केट।
2. मलिक, चौधरी एण्ड सरकार – इण्डियन बैंकिंग सिस्टम।
3. जी. वॉट – दि इकोनोमिक प्रोडक्ट्स ऑफ इण्डिया।
4. कनिंघम – कॉइन्स ऑफ मेडिवल इण्डिया।
5. मैरी – दि इकोनोमिक लाइफ ऑफ नॉर्दर्न इण्डिया।
6. एलन – अर्ली इण्डियन कॉइन्स एण्ड दि करेन्सी सिस्टम।
7. वैप्सन – इंडियन कॉइन्स।

❑❑❑

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

7.

समतामूलक समाज की अवधारणा और गाँधी

डॉ. चित्रा माली,
सहायक प्रोफेसर,
गाँधी एवम शांति अध्ययन
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

"ओरियंटलिज्म" एडवर्ड सईद की अत्यंत महत्वपूर्ण किताब है,जो 1978 में प्रकाशित हुई थी। इसमें पश्चिम के लोग पूर्व को किस तरह से देखते है,समझते हैं,उसका अध्ययन किया गया है,खासकर इस्लामिक देशों और वहां की धारणाओं को लेकर काफी चिंतन किया गया है।सईद कहते है कि पश्चिमी जगत में प्राच्य जगत की ये छवियाँ एक 'अन्य' की अवधारणा को रचती है,एक ऐसा 'अन्य'(Other) जो पश्चिम से अलग है,इसीलिए पश्चिम के लिए वह अजूबा है।'प्राच्यवाद' की इस अवधारणा के द्वारा 'पश्चिम',पूरब की सभ्यताओं, भाषाओं, संस्कृतियों, और ज्ञान परम्पराओं से एक खास तरह से पेश आता है।वह 'पूरब' को अपने से अलग कर देता है।'पश्चिम' अपनी सभ्यता, संस्कृति, भाषा,और ज्ञान परम्परा को श्रेष्ठ मानता है और इसी क्रम में वह एक 'अन्य' का निर्माण करता है जो उससे निम्न है जो पश्चिम को देखकर सभ्य सुसंस्कृत हो रहा है। जैसे ही 'अन्य' की बात होती है वहीँ से 'अस्मिता (पहचान) विमर्श' प्रारम्भ हो जाता है,अस्मिता विमर्श में अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए 'अन्य' का निर्माण किया जाता है और उसकी तुलना की जाती है अपनी संस्कृति, सभ्यता और ज्ञान से,जब वह 'अन्य' को गढ़ रहा होता है,तो इस क्रम में विभेदक मानसिकता जन्म लेती है,जो समतामूलक समाज के लिए खतरनाक है। अब अगर हम खासकर भारत की बात करें तो उसे नट और सपेरों का देश कहा जाता है,जो अंधविश्वासों और जादू टोने से ग्रसित है। प्राच्यवाद यह एक दृष्टि है 'पूरब' को देखने की,'पश्चिम' की,वह इसी दृष्टि से वहां के वासियों का भी अध्ययन करता है।यह बात हुई 'प्राच्यवाद' की, लेकिन ऐसी ही विभेदक दृष्टि हम हमारे समाज में भी देखते है,जो हमें विभिन्न धर्मों, संप्रदायों, जातियों,और वर्गों में विभाजित करती है और एक अलगाव या पृथकता के सिद्धांत को विकसित करती है।जिसमें हर व्यक्ति अपने को श्रेष्ठ और अन्य को हीन समझता है।कास्ट,क्लास,और जेंडर के आधार पर हमारा सामान्य व्यवहार भी परिवर्तित हो जाता है।इसी के बाद हिंसा के उग्र रूप हमारे सामने नजर आते है।हम रोज अखबारों और सोशल मीडिया पर कोई न कोई अमानवीय व्यवहार की घटना जो एक खास वर्ग के साथ लगातार किसी न किसी रूप में की जा रही है,उनकी खबरें पढ़ते,देखतेऔर सुनते रहते हैं।अभी हाल ही में एक मुस्लिम बच्चे ने मंदिर में जाकर पानी पी लिया।उसका जुर्म बस इतना था कि उसे प्यास लगती है और वह पानी पी लेता है, फिर उसे सजा के स्वरूप खूब पीटा जाता है, जिसका जिक्र सोशल मीडिया से लेकर हर कहीं है।यह घटना सामान्य नहीं लग सकती है, यह हमारे अवचेतन मन की हिंसा और घृणा को प्रकट करती है चाहे वह किसी भी व्यक्ति के द्वारा की जा रही हो। एक खास तबके के साथ हमारा व्यवहार कुछ वर्षो से अधिक परिवर्तित हो गया है, न जाने कौन सा भय हमसें यह सब करवा रहा है।क्योंकि व्यक्ति जब डरा हुआ होता है तो वह अधिक हिंसक हो जाता है।इस तरह की घटनाएं लगभग सभी राज्यों में घटित हो रही है,कुछ वर्ष पूर्व एक व्यक्ति के रसोई घर में जाकर लोग फ्रिज चेक करते है और उसे मार डालते हैं। और यह सब भीड़ कर रही होती है जिसका उसे कोई मलाल भी नहीं। मध्यप्रदेश में भी ऐसी ही घटनाएं अभी हाल ही के समय में लगातार घटित हुई है,जिसमें मस्जिद के सामने अपने ही लोगों के बीच बैंड बाजे बजाये गए और ऐसे नारे लगाए गए जिससे भय का माहौल उत्पन्न हो। बस फर्क यही है कि वह दूसरे धर्म के अनुयायी है सिर्फ इस आधार पर उनके साथ यह व्यवहार किया

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

जा रहा है।इन्ही सब घटनाओं की पड़ताल अलग अलग पेशों से जुड़े प्रगतिशील लोगों के द्वारा श्री विभूति नारायण राय जी की अध्यक्षता में गठित एक समिति के द्वारा की गई।जिसकी रिपोर्ट सभी को अवश्य पढ़ना चाहिए।जिसमे यह स्पष्ट किया गया कि एक खास विचारधारा से प्रेरित लोगों ने दंगों को भड़काने की पूरी कोशिश की और पुलिस बेबसी से यह सब होते देख रही थी।1947 के विभाजन की त्रासदी दोनों मजहब के लोगों ने बराबरी से झेली है,उन घावों को भरने में काफी समय भी लगा है,इस तरह की घटनाएं लगातार उन जख्मों को याद दिलाने का काम करती है। राजनीतिक दल अपने वोट बैंक के लिए इन अलग अलग अस्मिताओं को उभारते हैं और इनका इस्तेमाल अपने पक्ष में करते हैं। हर सामान्य व्यक्ति इन अस्मिताओं में अपने आप को सुरक्षित समझता है और वह 'अन्य' के प्रति असहिष्णु होता जाता है।सोशल मीडिया के जरिए इस तरह के वीडियो का प्रचार प्रसार किया जाता है जिससे लोगों की मानसिकता को लगातार कुंठित कर हिंसा करने के लिए प्रेरित किया जा सके। शांति के दूत महात्मा गांधी जी की प्रतिमाओं को भी तोड़ा जा रहा है, तोड़ने वालों को तो यह भी नहीं पता कि गांधी जी खुद इन मूर्तियों,प्रतिमाओं के खिलाफ थे और कई महापुरुषों की प्रतिमाओं के साथ भी ये घिनौनी हरकते की गई है। व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी के पढ़े लिखे लोगों से उम्मीद भी क्या की जा सकती है,यहां व्यक्ति को मारा जा सकता है उसके विचारों को नहीं,इसीलिए आज भी गांधी प्रासंगिक है और रहेगें।जब इस तरह की घटनाओं के वीडियो सामने आते हैं तो लगता है कि वहां मौजूद लोग ये सब तमाशे की तरह देख रहे हैं,ऐसा होने से रोकने का प्रयास क्यों नहीं कर रहे हैं,ये सवाल आपके जहन में भी उठते होंगे। अगर आज सद्भावना के प्रयास नहीं किए गए तो सांप्रदायिकता का यह जहर आने वाली पीढ़ियों को भी निगलने वाला है। सांप्रदायिक हिंसा की इन घटनाओं और हिंदू मुस्लिम अलगाव को देखकर ही गांधी जी ने 1922 में 'शांति सेना' का निर्माण करने का निर्णय लिया था,साथ ही गांधी जी ने अपने 18 रचनात्मक कार्यक्रमों में सांप्रदायिक सद्भाव को सबसे पहले रखा था।1947 के विभाजन के बाद हो रहे सांप्रदायिक तनाव को कम करने के लिए गांधी जी ने पंजाब,कलकत्ता, नोआखाली,और बिहार की यात्राएं की जिससे तनाव को कम किया जा सके और सौहार्द का माहौल तैयार किया जा सके।गांधी इसमें सफल भी हुए लेकिन कुछ विरोधियों के द्वारा उस समय,उनकी राह में कांटे,कंकड़,शीशे के टुकड़े और गंदगी तक बिछाई गयी जिन्हें गांधी ने ताड़ के बढ़े पत्ते से बुहारते हुए आगे का मार्ग तय किया,बिना किसी शिकायत के 'एकला चलो रे' को गुनगुनाते हुए।गांधी जी कहते है "मेरी यह लालसा है कि यदि आवश्यक हो तो मैं आपने रक्त से हिंदू और मुसलमानों के बीच सम्बन्धों को दृढ़ कर सकूं।" हिंदू मुस्लिम एकता का अर्थ यह है कि हमारा समान प्रयोजन हो,समान ध्येय हो और समान गम हों।हम एक दूसरे के गमों में साझा होकर और परस्पर सहिष्णुता की भावना रखकर एक दूसरे के साथ सहयोग करते हुए अपने सामान्य लक्ष्य की ओर बढ़ेंगे तो यह हिंदू मुस्लिम एकता की दशा में सबसे मजबूत कदम होगा।हिंदू-मुस्लिम एकता का अर्थ केवल हिंदू मुसलमानों के बीच एकता नहीं है, बल्कि उन सब लोगों के बीच एकता है जो भारत को अपना देश समझते हैं, उनका धर्म चाहे जो हो।वैश्विक शांति, समतामूलक समाज, शांतिपूर्ण समाज, की दृष्टि को विकसित करने का प्रयत्न गांधी जी के द्वारा लगातार किया गया।जो विभेदकारी दृष्टि (ओरियंटलिज्म)और भारतीयों द्वारा ही भारतीयों को अलग अलग धर्म,संप्रदाय, जातियों, नस्लों,वर्गों में विभाजत कर देखने की दृष्टि (ऑक्सिडेंटलिस्म) जिसमें वे एक दूसरे को पृथकता से देखते और समझते हैं। खासकर हम और वे या कहे 'अन्य' की आवश्यकता को समाप्त करने का प्रयास गांधी जी के द्वारा किया गया। जिसमें कई अलग अलग अस्मिताओं को संतुलित करने का काम भी गांधी जी के द्वारा किया गया।इस दृष्टि को विकसित करने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि मानव को सिर्फ मानव समझा जाए उसे धर्म,संप्रदाय, जातियों, वर्गों, नस्लों से परे रख एक माना जाए। जो सिर्फ अलग अलग रंगों के अलग अलग भाषाओं को बोलने वाले अलग अलग धर्मों को मानने वाली एक इकाई है।जो हमारी विविधता में एकता का प्रमाण है।इस साझी संस्कृति और विरासत को बचाए और बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है| इसके लिए व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी के लिखे पढ़े ज्ञान से बाहर आकर जमीनी हकीकत से रूबरू होना आवश्यक है,जो परस्पर सहयोग सहिष्णुता ओर प्रेम के सार्वभौमिक नियम से संचालित होती है। हमारे यहां ही महाभारत की पटकथा राही मासूम रजा द्वारा लिखी जाती है।इस तरह की विभेदक दृष्टि सामान्य जीवन में लोगों के पास नहीं है इसका निर्माण कुछ लोगों के द्वारा

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

अपने हित के लिए किया जाता है उसे पहचानना आवश्यक है।बाकी सभी जन चाहे वह किसी भी धर्म,जाति,संप्रदाय के हों वह भी उन्ही सवालों से रूबरू हो रहे है जिनसे आप ग़रीबी, भुखमरी,मंहगाई, बेरोजगारी और वही पूरे माह की जोड़ तोड़। कुछ खास फर्क नहीं है,इसे पहचानने की आवश्यकता है।जिससे कुछ लोगों के हाथों की कठपुतली बनने से रोका जा सके। यह एक कदम होगा शांतिपूर्ण सौहार्दपूर्ण समाज की ओर,जिसकी कल्पना गांधी जी ने की थी और आज भी कई अमन पसंद लोगों के द्वारा समाज में शांति संस्कृति को विकसित करने की कोशिशें लगातार जारी है,जिसमें विभिन्न कार्यशालाओं के माध्यम से हिंसा और अहिंसा की समझ को विमर्शों के जरिए समझाने का प्रयास किया जा रहा है,साथ ही फिल्मों,नाटकों और कला के विभिन्न साधनों का इस्तेमाल किया जा रहा है।

संदर्भ सूची

1. वारनॉक मैरी(1970),ऐग्जिस्टेंशियलिज्म, ऑक्सफ़र्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,ऑक्सफ़र्ड.
2. स्टुअर्ट हाल(1994),'दि क्वेश्चन ऑफ कल्चरल आइडेंटिटी द पालिटी रीडर इन कल्चरल थियरी,पालिटी प्रेस,केम्ब्रिज.
3. स्टुअर्ट हाल(1992),'न्यू ऐथनिसिटीस,'आइडेंटिटी:द रियल मी,इंस्टिट्यूट फ़ॉर कंटेम्परेरी आर्ट्स डॉक्यूमेंट 6,लंदन
4. प्रभु,आर.के.,राव ,यू.आर.,(1985) 'महात्मा गांधी के विचार' नेशन बुक ट्रस्ट ,नयी दिल्ली इंडिया.

❑❑❑

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

8.

महामारियों का मनोविज्ञान

डॉ.अमित राय,
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा

स्लावोज जिजेक एक स्लोवेनियाई दार्शनिक हैं और जुब्लजाना विश्वविद्यालय में कला संकाय के दर्शन विभाग में एक शोधकर्ता और लंदन विश्वविद्यालय के मानविकी के लिए बर्कबेक संस्थान के अंतरराष्ट्रीय निदेशक भी हैं। उन्होंने हाल ही में प्रसिद्द मनोवैज्ञानिक एलिजाबेथ कुबलर-रॉस की किताब 'ऑन डेथ एंड डाइंग' के सन्दर्भ से बताया कि किसी भी महामारी के आने पर हमारी प्रतिक्रिया पांच चरणों में होती है,इससे कोरोना वायरस महामारी के प्रति हम हमारी प्रतिक्रियाओं के बारे में कुछ सीख सकते हैं,किसी मरणान्तक बीमारी के होने पर सबसे पहली प्रतिक्रिया होती है,बीमारी से इंकार (सामान्य तौर पर सबसे पहले हम इस तथ्य को स्वीकार करने से इंकार करते हैं: "यह नहीं हो सकता,यह मेरे लिए नहीं है"); उसके बाद का चरण है क्रोध, (क्रोध का विस्फोट तब होता है जब हम तथ्य को नकार नहीं पाते : "यह मेरे ही साथ कैसे हो सकता है?"); तीसरा चरण है एक तरह की सौदेबाजी का (आशा है कि हम किसी भी तरह से बीमारी के तथ्य को स्थगित या कम कर सकते हैं: "बस मुझे अपने बच्चों को स्नातक होते देखने तक जीवित रहना है"); इसके बाद का चरण है,अवसाद (लिबिडिनल डिसइन्वेस्टमेंट: "मैं मरनेवाला हूं, तो किसी भी चीज से क्यों परेशान रहूँ ?"); और अंत में स्वीकृति ("मैं इससे नहीं लड़ सकता,लेकिन इसके लिए ठीक से अपने को तैयार कर सकता हूँ")। बाद में, कुबलर-रॉस ने इन सभी प्रतिक्रियाओं को भयावह व्यक्तिगत नुकसान (बेरोजगारी, प्रिय की मृत्यु, तलाक, नशीली दवाओं की लत) के किसी भी रूप पर लागू किया और इस बात पर जोर भी दिया है कि प्रत्येक मामले में जरूरी नहीं कि ये चरण एक ही क्रम में आयें या सभी रोगियों द्वारा पाँचों चरणों का अनुभव हो।

ठीक यही हमारे जीवन पर डिजिटल नियंत्रण के बढ़ते खतरे पर भी लागू होता है : पहले हम इसके खतरे से इंकार करते है (यह मानते हैं कि यह एक अतिशयोक्ति है,वामपंथी व्यामोह है, कोई भी एजेंसी हमारी दैनिक गतिविधि को नियंत्रित नहीं कर सकती है); तब बड़ी कंपनियों और राज्य की गुप्त एजेंसियों पर, हमारे गुस्से का विस्फोट होता है जिन्हें आपके बारे में आपसे ज्यादा जानकारी होती है और इस ज्ञान का उपयोग वे हम पर नियंत्रण रखने और हेरफेर करने के लिए करतीं हैं; इसके बाद सौदेबाजी (अधिकारियों को आतंकवादियों की खोज करने का अधिकार है, लेकिन हमारी निजता के उल्लंघन का नहीं... ।); इसके बाद अवसाद (अब बहुत देर हो चुकी है, हमारी निजता खत्म हो चुकी है और अब व्यक्तिगत स्वतंत्रता का समय खत्म हो गया है); और अंत में स्वीकृति (डिजिटल नियंत्रण हमारी स्वतंत्रता के लिए खतरा है, हमें इसके सभी आयामों को लेकर जनता को सजग करना चाहिए और इससे लड़ने के लिए सबको एकजुट होना चाहिए !)।

क्या यह भी वैसा ही नहीं है जैसा हमने 2019 के अंत में हुए कोरोना वायरस के कारण हुई महामारी के विस्फोट से निपटने के लिए किया? सबसे पहले हमने इंकार किया (कुछ भी गंभीर नहीं है, केवल कुछ गैर जिम्मेदार व्यक्ति दहशत फैला रहे हैं); तब क्रोध (ज्यादातर नस्लीय या राज्य विरोधी रूप में: यह कहकर कि चीनी दोषी हैं, हमारा राज्य कुशल नहीं है..); अगली बारी सौदेबाजी की आई (ठीक है,कुछ ही लोग इसके शिकार हो रहे हैं, लेकिन यह सार्स से कम गंभीर है और हम इसके नुकसान को सीमित कर सकते है..); यदि यह तर्क भी काम नहीं करता है,तब अवसाद उठता है (यह कोई बचपना नहीं है, सब बर्बाद हो रहा है) . . . लेकिन स्वीकृति का अंतिम चरण कैसा होगा यह देखना होगा?

कोरोना के बारे में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को महत्त्व नहीं देने के फलस्वरूप इस महामारी का प्रसार हुआ,याद कीजिए ली वेनलियांग,चीन के एक डॉक्टर को,जिसने कोरोना वायरस महामारी की सबसे पहले खोज की और चीनी अधिकारियों ने इस तथ्य को बाहर आने नहीं दिया और संदिग्ध हालत में उसकी मृत्यु हो गयी,चीनी राज्य किस तरह इस कोरोना महामारी से निबटेगा इसकी उम्मीद के मुताबिक सबसे अच्छी प्रतिक्रिया हांगकांग के पत्रकार वेरना यू की टिप्पणी में मिलती है, "यदि चीन अभिव्यक्ति की

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

स्वतंत्रता को महत्त्व देता तो वहां कोई कोरोना वायरस संकट नहीं आता। जब तक चीनी नागरिकों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और अन्य बुनियादी अधिकारों का सम्मान नहीं किया जाएगा, तब तक ऐसे संकट बार बार आते रहेंगे...... चीन में मानव अधिकारों के लिए काम करने की जगह बाकी दुनिया से कम है,लेकिन जैसा कि हमने इस संकट में देखा,आपदा तब आई,जब चीन ने अपने नागरिकों की स्वतंत्रता को ख़त्म किया। निश्चित रूप से यह समय अंतरराष्ट्रीय समुदाय को इस मुद्दे को और अधिक गंभीरता से लेने का समय है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हाल के वर्षों में चीन के अधिकतर हिस्सों की सरकारों कई माओवादी वेबसाइटों को बंद कर दिया और विश्वविद्यालयों में मार्क्सवादी वाद-विवाद समूहों को निषिद्ध कर दिया। चीन में आज सबसे खतरनाक काम यह है कि राज्य की अपनी आधिकारिक विचारधारा में गंभीरता से विश्वास किया जाए। चीन अब इस तरह के एक रुख के लिए कीमत चुका रहा है: हांगकांग के प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य महामारी विज्ञानी गेब्रियल लेंग के अनुसार, अगर इसे नियंत्रित नहीं किया जा सका तो कोरोना वायरस महामारी दुनिया की आबादी के लगभग दो तिहाई तक फैल सकती है। उन्होंने कहा, "लोगों को अपनी सरकार पर विश्वास रखने की जरूरत थी,जब तक कि वैज्ञानिक समुदाय द्वारा नए प्रकोप की अनिश्चितताओं पर कार्य नहीं कर लिया जाता",वह कहते हैं और निश्चित रूप से जब आपके पास सोशल मीडिया और फर्जी समाचार और असली खबरें हैं तो सभी एक दूसरे में मिल जातीं हैं,तब विश्वास खत्म हो जाता है तब ऐसे में आप महामारी से कैसे लड़ सकते हैं? आपको अतिरिक्त भरोसे की जरूरत है,एकजुटता की अतिरिक्त भावना की, अतिरिक्त सद्भावना की।

एक स्वस्थ समाज में एक से अधिक आवाज होनी चाहिए, डॉक्टर ली ने अपनी मौत से ठीक पहले अपने अस्पताल के बिस्तर से कहा, लेकिन अन्य आवाजें जो आना चाहिए उनकी तत्काल जरूरत है, इसका मतलब अनिवार्य रूप से यह नहीं है कि पश्चिमी शैली का बहुदलीय लोकतंत्र हो,यह केवल इतनी मांग करता है कि नागरिकों के लिए अपनी महत्वपूर्ण प्रतिक्रियाओं को प्रसारित करने के लिए एक खुली जगह हो। इस विचार के खिलाफ राज्य का मुख्य तर्क होता है कि राज्य को दहशत को रोकने के लिए अफवाहों को नियंत्रित करना है लेकिन यह नियंत्रण ही अविश्वास फैलाता है और इसलिए और भी षड्यंत्र सिद्धांतों (कांस्पिरेसी थियोरी) को फैलाता है। केवल आम लोगों और राज्य के बीच आपसी विश्वास ही ऐसा होने से रोक सकता है।

जो चीजें और बदतर बनातीं हैं वह हैं कि "अच्छी" अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को "बुरी" अफवाहों से अलग करने का कोई आसान तरीका नहीं है। जब महत्वपूर्ण आवाजें शिकायत करतीं हैं कि चीनी अधिकारियों द्वारा "सत्य को हमेशा ही अफवाह की तरह माना जाएगा"। इसमें किसी को भी यह जोड़ना चाहिए कि सरकारी मीडिया और डिजिटल समाचारों के विशाल डोमेन पहले ही अफवाहों से पूरे भरे हुए हैं।

इसके साथ हमें यह समझना चाहिए कि जनता को पूरी सच्चाई नहीं बताने से कभी कभी प्रभावी रूप से दहशत की लहर को रोका जा सकता है जो और अधिक पीड़ितों का कारण बन सकती है। इस स्तर पर, समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता – इससे बाहर निकलने का एक ही रास्ता है वह है जनता और राज्य तंत्र के बीच आपसी विश्वास। जैसे विश्वव्यापी महामारी विकसित होती है, हम इस बात पर सजग होने की जरुरत है कि बाजार तंत्र अराजकता और भुखमरी को रोकने के लिए पर्याप्त नहीं होगा। आज हममें से अधिकांश को "कम्युनिस्ट" के रूप में दिखाई देने वाले उपायों पर वैश्विक स्तर पर विचार करना होगा: उत्पादन और वितरण का समन्वय बाजार के निर्देशांक के बाहर होना चाहिए। हमें यहां 1840 के दशक में हुए आयरिश आलू अकाल को याद करना चाहिए जिसने आयरलैंड को तबाह कर दिया,लाखों लोग मारे गए या कहीं अन्य जगह बसने के लिए मजबूर हो गए। ब्रिटिश राज्य ने बाजार तंत्र में अपना भरोसा बनाए रखा, आयरलैंड से भोजन का निर्यात जारी रखा जबकि बड़ी संख्या में लोग पीड़ित थे। हमें आशा करनी चाहिए कि इसी तरह का क्रूर समाधान आज स्वीकार्य नहीं होगा।

हमें निश्चित रूप से विस्तार से कोरोना वायरस द्वारा संभव बनाई गयीं सामाजिक स्थितियों का विश्लेषण करना चाहिए। आज की परस्पर जुड़ी हुई दुनिया में, हम सब एक ही नाव में सवार हैं,एक ब्रिटिश व्यक्ति सिंगापुर में किसी से मिलता है, फिर इंग्लैंड लौटता है और फिर फ्रांस में स्कीइंग के लिए जाता है, वहां चार अन्य लोगों को संक्रमित कर रहा है....। हमारा विश्व एक दूसरे से जुड़ा हुआ है और एक स्थानीय आपदा पूरे विश्व में भय और अंततः एक तबाही को शुरू कर सकती है। याद कीजिए 2010 के वसंत में,आइसलैंड में एक मामूली ज्वालामुखी विस्फोट से निकले एक धूल बादल ने, पृथ्वी पर जीवन के जटिल तंत्र में एक छोटी सी अशांति ला दी थी, यूरोप

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

के अधिकांश हवाई यातायात पर ठहराव ला दिया था। यह एक साफ़ चेतावनी थी कि प्रकृति को बदलने की समस्त जबरदस्त गतिविधियों के बावजूद पृथ्वी पर उपस्थित कई जीवित प्रजातियों में से सिर्फ मानव जाति बचती है।

इस तरह का एक मामूली विस्फोट का बहुत ही भयावह सामाजिक आर्थिक प्रभाव हमारे तकनीकी विकास की कमजोरी के कारण हुआ, इस मामले में हवाई यात्रा बाधित हुई। एक सदी पहले, इस तरह के एक विस्फोट पर किसी का ध्यान नहीं गया। तकनीकी विकास हमें प्रकृति से अधिक स्वतंत्र बनाता है और साथ ही एक अलग स्तर पर, प्रकृति की सनक पर भी अधिक निर्भर करता है। और ठीक इसी तरह का प्रभाव कोरोना वायरस का प्रसार हुआ। हालांकि, इस भयानक दृष्टि में एक अप्रत्याशित मुक्ति संभावना छिपी हुई है। पूंजीवादी उपभोक्तावादी विश्व में पिछले दिनों वुहान को याद करने की जरुरत है। एक मेगालोपोलिस में परित्यक्त सड़कें-आम तौर पर हलचल वाले शहरी केंद्र भूतिया कस्बों की तरह लग रहे हैं,बिना ग्राहकों की दुकानों के खुले दरवाजे,एकाध अकेला पैदल चलने वाला या यहाँ वहां एकाध कार, यह एक उपभोक्तावादी दुनिया किस तरह दिखेगी की एक झलक देता है। कहीं ऐसा न हो कि यह वुहान हमारे हर शहर का भविष्य हो। इसलिए जरुरत है राज्य और नागरिकों के बीच आपसी विश्वास को कायम करने की और एक ऐसे मीडिया की जो इस विश्वास में वृद्धि करे न कि अफवाह फैलाए।

एक बात तो निश्चित है किअकेले अलगाव, नई दीवारों का निर्माण और फिर क्वारेन्ताइन से काम नहीं चलेगा। बिना शर्त पूर्ण एकजुटता और वैश्विक सहयोग की जरूरत है। यदि हम अपने प्रयासों को इस दिशा में उन्मुख नहीं करते,तो वुहान हमारे हर शहर का भविष्य होगा। जो हमें स्वयं को स्वीकार करना चाहिए और सामंजस्य करना चाहिए,वह है कि जीवन की एक दूसरी सतह भी है जो ख़त्म नहीं हुई है। मूर्खताओं का दोहराव, वायरस का पुनर्प्रजनन जीवन, हमेशा ही होता रहेगा और एक गहरी छाया की तरह हमेशा हमारे साथ होगा, यह हमेशा ही हमारे अस्तित्व के लिए खतरा पैदा करता रहेगा, जितनी हम उम्मीद करते हैं यह उससे भी अधिक विस्फोटक हो सकता है।

संदर्भ

1. Žižek Slavoj,(2002),*Welcome to the Desert of the Real*: Five Essays on September, London and New York: Verso.
2. Žižek Slavoj,(2020),*Pandemic,covid-19 Shake The World,*OR Boosk New York,London.
3. John Maynard Keynes,(1926), *The End of Laissez-faire,*The Hogarth Press,London.
4. Sigmund Freud and Josef Breuer,(1974) *Studies on Hysteria*, translated by James and Alix Strachey,vol.3, Harmondsworth: Penguin.

❑❑❑

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

9

भारतीय आधुनिक चित्रकलेतील व्यक्तिचित्रण

जाधव अंबादास नारायण,
शासकीय कला व अभिकल्प महाविदयालय,
औरंगाबाद

व्यक्तिचित्रणाच्या गाभ्याच्या प्रवासाचा हा जिना सुरु होती. भौतिक, मानसिक, अंतरमनातून, त्यातून स्फुरणाऱ्या दैवी ज्ञानातुन पण अंतिमत: तो परमानंदात विरुन जातो. एका स्त्रिपासून सुरु झाला असला तरी त्याची समाप्ती होते ती आदी मायने. आपल्या अस्तित्वातील लिंगजन्य शक्तीचा निचरा करण्यासाठी मानवाला स्त्रीला समजून घ्यावे लागते आणि पुन्हा पुन्हा खोलवर शोध सुरुठेवावा लागतो. तो प्रयत्न सातत्याने करावा लागतो.

स्त्रीचे चरित्र आणि पुरुषाचे भाग्य देवांनाही कळले नाही. तिथे मानवाचे काय. स्त्रीत विलीन होत होतच पुरुष परमानंदाची प्राप्ती करु शकतो . ही दैवी आनंदमय अनुभूती तिच्यात पूर्णपणे मिसळून जाण्यातून प्रेमानुभूती देत असते आणि प्रेम हे तर सृजनाचे आदीम सूत्रच आहे. परिणामत: स्त्री विषयक जाण ही प्रेमातून उदभवायला हवी, ती प्रेमयुक्त घडामोडींतून आजमावयाला हवी आणि त्या मधून प्रेमाचाच उदभत व्हायला हवा. सुंदर, सुयोग्य पत्नी, उत्तम आई, पति-निष्ट, मनमिळाऊ, सहनशील, थोडीशी अज्ञानी मोहक व लहरी असते. हे गुण तिच्या ठायी स्त्री म्हणून असतात.

व्यक्तिचित्रण म्हणजे नेमके काय

मानवी मनातून उत्स्फूर्त पणे घडणाऱ्या भावनिक क्रियाप्रकिया यांचे सौंदर्य हे प्रतीक आहे. त्यामुळे ते वेळोवेळी वैयक्तिक पातळीवर येत असते. पण कायम वैयक्तिकतेच्या पठडीत बंदिस्त न होणारी ती एक अनुभूती आहे. एकीकडे वैयक्तिकतेशी जुळलेली तर त्याच्या कचाटयात न मावणारी अशी सौंदर्य ही गुंतागुंतीची गोष्ट आहे. म्हणून एकदा वैयक्तिक तर अनेकदा वैश्विक आयामांशी जुळणारी अशी ही अमूर्त संकल्पना आहे. भारतीयांनी सौंदर्याची सत्याशी युती केली. त्रिकाल बाधीत पावित्र्याशी तिची नाळ सत्यं शिवं सुंदरम या कल्पनेव्दारे गुंफुन टाकली आहे. सत्य हेच सुंदर आणि तेच पावित्रही मानले गेले.

भारतीय सौंदर्य व लावण्य या दोन गोष्टी वेगवेगळया मानतात. शरीरावयांची सुयोग्य प्रमाणबध्दता सौंदर्य उभारते. पण त्यातून लावण्य (Grace) हे आंतरिक सौंदर्याशी जुळविले असते, तर बाहय शरीर बांधा हे सौंदर्याशी म्हणजे शारीरिक ते पेक्षा सखोल आत्म तत्वातील पावित्र्य व प्रकाशमयतेशी लावण्याचा संबंध आहे. भारतीय चित्रकारांच्या अच्युत्तम व्यक्तिचित्रण मधून हीच गोष्ट घडली आहे.

मानवी शरीर भारतीय चित्रकार कल्पनेच्या पलिकडे जाणारे स्वविभ्रम प्रदान करतात. मानव जिवंत करणाऱ्या शरीरातूनच मुक्त आत्म्याच्या अभिलाषेची आस भारतीय चित्रातुन आढळुन येते. ज्यातून मुक्ती व आनंद हया दोन्ही आयतत्वांची सांगड घातली जाते. ही गोष्ट व्यक्तीची ढब उभे व बसण्याची. शरीराची ठेवण व हालचाल या तीन गोष्टि शरीरावयांची गोलाई व भरीव पणा या सर्वातून एक भाव निर्मित सौंदर्य उभारले जाते.

भारतीयांना अभिप्रेत नग्नता

भारतीय संदर्भात नग्न मानवी स्त्री शरीर ही फारशी दुर्मिळ गोष्ट नाही. पुरातन काळापासून भारतात झरे, तलाव व नदयांमध्ये स्नानाची परंपरा आहे. त्यावेळी स्त्रिया काठावर वस्त्रे काढून नग्नावस्थेत स्नान करत (श्रीकृष्णाचे गोपी वस्त्र हरण) पुरातन काळी व आजही या पध्दतीला समाज बाहय ठरविलेले नाही. भारतीय कला विश्वाने विषय वासना उदिदपित करण्याच्या उददेशाने प्रयत्न केलेले नाहीत, तर फक्त वास्तवाचे अनुकरण केले आहे आणि कधी ही योनी भाग अनावृत्त न दाखविता केवळ कचप्रदेश वस्त्रहीन रंगविला आहे.

स्त्रीचे सौंदर्य दर्शविण्यापेक्षा त्यांना मातृत्वाचे प्रतीक व सृष्टीचे आदीकरण म्हणजे मातृत्व स्त्रीत्व व उपजाऊ Motherhood-Womanhood-Fertility या सुत्राने अभिप्रेत प्रक्रीयेशी जोडले आहे. त्यामुळे भारतात नग्नतेबददल कुठलाही विकृत भाव नव्हता. प्रत्येक व्यक्ती ही त्या त्या कालखंडातील राष्ट्रीय रचना व सामाजिक संस्कार आणि स्वत: व्यक्तीचा दृष्टीकोन व त्याचा स्वत:चा अनुभव यातून आपापली सौंदर्य संकल्पना घडवीत असते.

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

आधुनिक भारतीय चित्रकार

एखादया चित्रकाराला जेव्हा साक्षात सौंदर्यानुभूती कलेतून साकार करायची असते,

तेव्हा तो अगदी सहजपणे मानव शरीराच्या आकृती बंधाचा आसरा घेतो. ही गोष्ट भारतातील जुन्या मुर्तीकलेतून, तसेच मध्ययुगीन चित्रे यातुन स्पष्ट होते. स्त्री शरीरातील उठाव, त्याला दिलेली खास प्रकारची वळणे, यातून काही ठराविक स्पर्शजन्य व डोळयांना लोभवून मनात विषयवासना जागृत करणे सहजपणे घडले आहे. जणुकाही सुंदर मानवाकृती व त्याचे भावविभ्रम यापेक्षाही, त्याचे देहिक चढउतार ही कलाकारांना याबाबतची गुरुकिल्लीच सापडली. त्याचा उपयोग करुन भारतीय कलाकारांनी आपली कला अतीउच्च शिखरावर पोचविली. एकूणच स्त्रीदेह व त्यातील कमनीय वळणे ही जुन्यात जुनी व एकदम नवीन अशी सार्वकालीन आकृतीबंधे मानायला हवीत, नव्हे ती आहेतच. तशी विलोभनीय ही गोष्ट केवळ भारतीय कलाकारांनी लागू पडते असे नव्हे, तर सर्व जगभरासाठी ठराविक प्रकारच्या भावनिर्मितीचे मानवशरीर व त्याचे वळणे हे एक कायमचे ऐवज झालेले आहे. त्यात भारतीय कलाकार आघाडीवर आहेत. कलावंताना मानवशरीराबाबतचे ज्ञान व ते कलात्मकतेने प्रस्तुत करण्याचे कसबअ अवगत होते.

मानवदेहाचा आकार हया खरे तर मानवदेहाच्या वैश्विक अभिव्यक्तीशी जुळणाऱ्या आहेत. त्यामुळे मानवचे रुप त्यातुन उभारुन आलेले दिसते. त्यात करमणुक करणारे ही काही तरी आहे किंवा सच्चेपणा व लोभावणे या दोहोंचे दरम्यानचा भाव त्यातून उभारला जातो. भरतीय वाङ:मय किंवा चित्र वा शिल्पकला यातून नग्नतेतून केवळ स्त्रीपुरुष लैंगिक संबंधाचा आशय अभिव्यक्त होत नाही. त्यामुळे ती नग्नता लाज वाटावी अशी नसते किंवा जगात नरमादी हेच एकमेव सत्य असलेले नाते आहे हा भावही उभारला जात नाही. याउलट दोन शरीरांपेक्षा दोन जीवांचे ते एक अव्दैत असे नाते म्हणून प्रकट होते.

जगातील कुठलीही कला असो, तीमध्ये नेहमीच अनेक कलांचे मिश्रण असते. कारण ही कला अशी आहे की जीत तत्कालिन अभिरुची व परंपरागत कला सुत्रे यांचे एकजीव मिश्रण असते. भारतात तर शेकडो वर्षांच्या परंपरा ज्यात शरीराबाबतची आसक्ती मग ती सूप्त असो वा उघडपणे व्यक्त होणारी, शरीराभिलाषा उभारुन आणली गेली आहे. आधुनिक भारतीय चित्रकाराने शरीराकर्षणाला गौण ठरवून मुक्तीकडे आगेकुच करणाऱ्या वृत्ती उभारणे हे ध्येय आहे.

संदर्भ ग्रंथसूची

१) कला इतिहास : भारतीय और पाश्चात्य : रमेशचंद्र नारायण पाटकर
२) Indian Painting and Sculpture : by Havell
३) Introduction to Indian Art : by Dr. A. K. Kumarswamy
४) प्राचीन भारतीय कला : डॉ. म. श्री. माटे
५) Easy on Mughal Painting : by Principal g. Soloman

❑❑❑

10.

The Discourse of Identity in Amitav Ghosh's *The Glass Palace & The Circle of Reason*

Usha Sahu,
Research Scholar, Jiwaji University, Gwalior

Dr. Ravikant Dwivedi,
Assistant Professor, Govt. Degree College Mau, Bhind.

Abstract: Amitav Ghosh portrays a society at the crossroads especially in the novels *The Glass Palace* and *The Circle of Reason*. It examines the conflict within the individuals attempting to study how these differences shape human fortune directly and culture indirectly. The coming of British in India questioned every piece of Indian belief system and way of life, at the same time thrusting western ideals without any examination and analysis into the Indian national fabric. This new thought process uprooted the Indian from their own cultural roots as they were now no more able to practise their own culture nor did they completely adopt the Western ideals. Thus came into being a hybrid culture in direct clash with both the old and the new.

Keywords: Culture, Hybridity, Identity, subaltern, Marginalisation, Uprootedness.

Ghosh, in *The Glass Palace*, scrutinises the colonisation of Burma and its consequences which led to migration of thousands of people and fostered tensions tension between Indians and Burmese. The novel also sets in an exploration studying the identity crisis faced by many characters, which include the king and the queen of Burma and other commoners like Rajkumar, Saya John, Dolly and Uma Dey. Displacement instigated by the colonialization is what binds these characters irrespective of their social and cultural background. The Burmese royal family has been shifted to Ratnagiri where the King and the queen spend time with their daughters and other family members in an attempt to assimilate the new culture and customs, thereby exposing them to Indian conditions. This accommodation of new culture forces a partial separation from their indigenous culture and customs. This adaptation ultimately leads to blend both the indigenous and foreign culture creating a new kind of cultural hybridity and Dolly turns out to be the first exponent of this hybridity as she inherits the crus of both Burmese and Indian culture in her.

She appears to be an Indian but her inner characteristics are that of a Burmese. Despite being away from Burma for a considerable long time she does not subscribe to the Indian caste system and other class divisions. A glimpse of this is witnessed in digesting the news of an affair between Mohan Sawant, a low cast coachman, and the princess of Burma, which shocks whereas Dolly overlooks at the relationship. The duality of identity has is to be noticed in context of the argument. Ghosh explicitly narrates the tension

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

and anxiety faced by the people having forced to imbibe more than one culture and ethnicity at the same time. With the outbreak of war in Burma, the commoners like Rajkumar are thrown out. Their pitiful state of homelessness is echoed by Rajkumar: "Just that it doesn't matter whether I think of Burma as home or not… This is the reality, and I have to acknowledge it. (GP 269) The lines reveal the homelessness of migrants. They are being acted upon by external forces that compel them to move out of their homeland and from place to place in search of home. Despite being from India Rajkumar feels at home only in Burma. Ghosh here dwells on another point and seeks to define native land and homeland. The comfort that an Indian draws in Burma where he is at comfort and feels at home Ghosh opens the transnational reality in the novel. Rajkumar says, "I don't think I could ever love another place in the same way. But if there's one thing I've learned in my life, Dolly, it is that there is no certainty about these things" (GP 269). This clarifies that he refers to Burma as his homeland and not India. Whereas, Dolly, his wife, a Burmese considers India as her home after she moves from Burma.

The case of Saya John is an interesting reference in the novel. John and Alison present a pathetic insight into the state of homeless migrants and their predicaments. Their characterisation narrate the cultural assimilation of identity of the migrants. Saya John has been brought up by catholic priests in Malacca and his name was altered as John Martins, as he was an orphan. It was later changed to Joao before being finally changed to John and ultimately being known as Saya John once again. The bouncing of his name marks the converging identity of an individual vis-à-vis his travels. His appearance from his clothes portrays an image of his quite in correspondence to someone who is transcultural in appearance. Both Saya John and Beni Prasad Dey were bent to assimilating the western cultural practices and fail to realise the vast gap betwixt their native culture and the western culture. The intermingling of two culture give rise to hybridity which is drifted away from both. This portrayal corresponds with Ghosh's idea of the dynamic nature of life, where nothing is permanent and convergence of religion, culture and language is bound to transform the identity of an individual and a race complete with the passage of time. This makes him analyse and study the diasporic communities and examine how marginalisation of people give rise to such a state of affairs.

The Circle of Reason narrates almost a journey into the lives of travellers. Ghosh here freely links the past to the present and sometimes probes into the root of the present into the past. The entire narrative freely bounces back and forth producing a dramatic narrative for the readers. The events are narrated woven into the fabric of memories and characters. Alu, and the frequent reversal of fortunes in his life is the focal point of interest throughout the novel, which revolves around his journey from Lalpukur to al-Ghazira, al-Ghazira to El Oued and then El Oued to India. Ghosh draws the title of the novel from this circle of uncertainty and restlessness.

The circle encompasses journeys and experiences of many other men and women owing to their migration. The protagonist of the story is continuously on the move driven by his insatiable thirst for finding a better life. Ghosh narrates the torments faced by migrants and his zeal to study the same. Ghosh persistently strives to narrate the after-effects of migration which he records in the opening pages of the novel collects from the remanences of people who experienced the Bangladesh liberation war. Ghosh, here penetrates deep into the psychology of the victimised subjects driven off their native land: "…the people of Lalpukur were too melancholy… Their only passion was memory; a longing for a land where

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

the green was greener, the rice whiter, the fish bigger than boats; where rivers' name sang like Megh Malhar." (CR 63)

The first part of *The Circle of Reason,* accounts for the Bangladesh liberation war and speaks of the psyche of the people driven from their native land. The second part limits the narrative to portray the lives and sufferings of migrants specially that of Alu, Zindi, Kulfi, Mrs Verma, and Dr Mishra. This unification of many diasporic individuals allows Ghosh to distort geographical and cultural other boundaries.

The individuals portrayed in the novel are poor middle class people who have crossed borders in hope of a better future for their children and family. One thing that Ghosh highlights of this new community is their high hopes and aspirations from a standpoint in history that has nothing to offer them. The exodus of refugees from Bangladesh soon turned into migration of people to India. Ghosh weaves in several petty incidences into the plot of his novel. For example, Balaram brings Alu to Shombhu Debnath's house to have him as an apprentice revealing his intentions to train Alu as a specialist in weaving. Ghosh here mingles his vision of borderless world and loom industry into one.

Ghosh peeps into the diasporic consciousness of the Indian emigrants in El Oued examining the impact of modernism on the migrant community. He portrays Dr Mishra as a man who values modernism more than tradition. He envisages to move away from the traditional Indian notions governed by myth and religion and turns to be true representative of fast emerging modern societies of migrants, one that is progressing faster than the native society. This introduces the readers to a newly created sense of modernism in the Indian people and something that initiates the creations of a new culture and tradition—hybridity.

The characters Ghosh encapsulates in the novel fall in two sets. One who are unable to converge themselves to new culture and setup post migration and two that complete let themselves be absorbed in the new culture and turn their backs to their native land. Characters like Dr. Mishra fall in the latter category and turns his back to his native land and heads to acclimatise him with the culture and tradition of the migrated land. Contrarily to him Mrs Verma can never forget her past and was always nostalgic towards it and assigns a high value to her native land. These two categories construct of Ghosh's diasporic consciousness as he analyses two different categories of migrants and their psyche in this novel.

Ghosh's diasporic consciousness has been rooted in Indian culture, tradition, and social setup. Through this far-sight Ghosh observes the Hindu philosophy and Indianness which is central to the novel. The element of Indianness intricately woven with the fabric of the novel does leave ample ground for the notion of diasporic consciousness throughout the narrative. The employment of myth, ideologies, and social discord present an authentic portrayal of Indian social setup and dichotomy.

Ghosh enumerates the richness of the Indian social fabric and simultaneously exposes the dark sides of the rituals and customary practices that hamper growth effecting lives of millions of Indians. Ghosh aspires to create an image of India through the employment of social and cultural traditions of the sub-continent which are bound to construct the consciousness of India in the novels of Amitav Ghosh. *The Circle of Reason* narrates the interlacing of Indian myths, cultural features and the Indian ideologies strong enough to create an image of India.

 ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

Ghosh uses the story of Chitrangada from the *Mahabharata* in *The Circle of Reason* to achieve his aim of projecting the greatness and follies of the Indian civilisation at the same time. The employment of this story from myth speaks of Amitav Ghosh's zeal for the spirit of her homeland. Mrs Verma gives Kulfi the character of Chitrangada and of Arjuna to Mr Das. The emigrants perform the drama in El Oued dressed up in accordance to native customs, traditions, ideas, and religion. Mrs. Verma sticks to her cultural roots despite being in a foreign land. The motif of hers in playing a part of the *Mahabharata* was to make her Algerian colleagues consciousness of her culture.

Mrs Verma not only attempts to introduce to Algerians concepts of Hinduism but she was a stern follower of Hindu practices. The same is apparent in the way she carries out the cremation rites of Kulfi in El Oued. Ghosh incorporates a duality in portrayal of Dr. Mishra as Ghosh seeks to present modernity as well as a bent towards in native customs and traditions. The portrayal of him performing Hindu rites serves this of the objective of author. It is the diasporic insight with Ghosh narrates the story of the novel. Ghosh has dwells upon this aspect in *The Hungry Tide*, by depicting the local legends and folklore to create an authentic India picture.

He chose to write about the partition of Bangladesh in *The Circle of Reason* so as to surface the sufferings and trauma faced by the common people owing to division of the country. He gives a voice to millions of common people who have been forgotten by the larger masses and assimilated in the national fabric as migrants in the course of time. Ghosh merges the regional history into world history through his novels focusing on migration of people. His inclusion of the colonialism of Burma and the history of Opium Wars converge the national issues of one nation with that of the history of the world as it effected millions so did it displaced millions. *The Glass Palace* he describes the colonisation of Burma and its consequent migration. Ghosh judges the colonialization of Burma as the root cause of tension between Burma and India.

Ghosh is successful in achieving his aims by articulating the history of migrants and merging the same with world history as he dissolves the issues of borders and cultural distinctions by transporting an individual from India to China and *vicé-versa*. This indirectly serves to reach a state of transculturation of society. Ghosh finds this state of the past to be the root of globalisation, something that advocates the feeling of oneness amidst people. *The Hungry Tide* advocates the concept of oneness quite openly while the same has been addressed to directly and indirectly in all other novels. Ghosh seems to enumerate that this apparent cultural collaboration seek to unite mankind and sustains the dreams and vision of an Utopian society–which will be an offshoot of migration or the ultimate result of transculturation.

Every migration and migrant has its root in some or the other historical event and goes through three phases. The first where he has to shed his nostalgic feeling towards his homeland and begin to accept the new land as his home. The second where he to go through the phase of transculturation of the merger of the native tradition with the local ones. Third to bring about a definitive change in the new culture and to the migrated region thereby leading to the state of a transformed identity which plays a pivotal role in creation of a diasporic community. Ghosh's novels and study add a new dimension to the literary and cultural history of India as it serves to speak about the untold and hidden aspects and happenings of India and its people. Ghosh as a humanist seeks to acknowledge a world with no borders and an internationals

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

community and culture to be replaced by local customs and culture, albeit rooted in the very tenets of Hinduism.

The Glass Palace opens in 1885 when British have dethroned of the Burmese monarchy after colonializing Burma. The novel revolves around the life of the protagonist Rajkumar, portrayed as a subaltern. The narrative starts in in 1885, the year British annexed Burma and the year the Indian National Congress was set up which is the initiation of the end of British rule in India. *The Glass Palace* encompasses disillusionments and frustration of characters who struggle for their identity, like Rajkumar, Uma, Arjun, Harry and others.

Rajkumar was popularly known as Kalaa and represents a section of people who overcome their subaltern status owing to their strong will power and determination. He does not know much of Western knowledge but rises in social status due to his hard work and the knowledge of the indigenous culture and people. His movement up in social ladder has come unacceptable to the elite sections of the society who dub him "a true or pure other." Whereas, Uma's uncle describes him as rough and uncouth.

After being deported to India the royal family of Burma faced new social and cultural complexities. The social conditions of Burma were so that rising up in the social ladder was no difficult whereas in India inheritance and birth fixed a person's identity and the social status that a person enjoys is unchangeable. British favoured this system as they found it convenient to their system of governance and exercising control over a colonised territory.

The very first thing that Rajkumar has to adopt is the western style of dressing as it helped him to carry out his business and was more in accordance with working with his mentor Saya John. Ghosh employs dress as symbolic of acceptance of the supremacy of colonial power. Rajkumar too has accepted the notion of western dressing style as it was in served the purpose of posing as an exploiter as Saya observes that "he was looking at someone he had never seen before, a reinvented being, formidably imposing and of commanding presence" (GP 132). Rajkumar seeks to extract maximum benefit of the colonial environment he was his attempt to imitate attire, manners and even language was like imitating a ruler and imposing on the colonial subjects. Contrarily to this the King and Queen of Burma do not conform to the British style of dressing and opt to use dress as a symbol of resistance and rebellion against the British regime. They retain their traditional attire even in exile where Rajkumar's transformation is instrumental in projecting him as an exploiter of the marginalised subjects of British rule.

Homi Bhabha opines that the problem of identity influenced by Jacques Lacan's ideas of "mimicry" and argues that the colonial subject is compelled to show off an "excess" of mimicry with regard to cultural imitation. This ultimately leads to the formation of a hybrid identity of the marginalised producing a discourse that is colonial. He adds, "colonial mimicry is the desire for a reformed, recognizable Other, as a subject of a difference that is almost the same, but not quite." (Bhabha 126)

Ghosh pertinently draws our attention to this transformation that ultimately leads to becoming "Other" not only in *The Glass Palace* but also in *The Shadow Lines*. The former typifies Rajkumar, Arjun, and the Collector behind following west and the latter typifies Ila in western philosophy. They fail to find contentment in their life styles and are betrayed by their western counterparts they have put their trust in, like Raja Neel Rattan in *Sea of Poppies* is betrayed by his European friends.

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

The Collector and Arjun in *The Glass Palace* is devotee of the British mannerisms and behaviour and have mimicked their dress, food habits, demeanour, and language. Ghosh portrays them as shadows of the British. Franz Fanon observes in *Black Skin, White Masks* that, "The colonized is elevated above his jungle status in proportion to his adoption of the mother country's cultural standards. He becomes whiter as he renounces his blackness, his jungle" (9). The two have completely discarded their traditional culture in an attempt to win the faith of British, but they face racial discrimination at the hands of British which accelerates their fate bringing their downfall. Collector's wife, Uma rightly finds that his position:

> …had brought him nothing but unease and uncertainty; she recalled the nervous, ironic way in which he had played the part of Collector; she remembered how he'd watched over her at table, the intolerable minuteness of his supervision, the effort he had invested in molding her into a reflection of what he himself aspired to be. (GP 186)

Both the Collector's and Rajkumar's life is unsettled by mere mimicry of colonial powers. This leads to alienation and self-destruction of Collector as he has turned into a mere puppet of British, the same is evident by narrator's reference to him as Collector and not by his name Beni Prasad Dey.

Ghosh marvellously narrates the dilemma in the lives of soldiers through his portrayal of soldiers in two categories—one who joined British army owing to poverty and the second joined out of their ambition. Ghosh finds their position no better than "dockyard coolie" (GP 29) as their salaries were too small in comparison to their counterpart British soldiers. He says about their poverty that, "a few coins they would allow their masters to use them as they wished, to destroy every trace of resistance to the power of the English" (GP 29). On the other hand there are characters like Arjun who are driven by their ambition to be like British and thought to raise them in class and political status. Ghosh says, despite being promoted to the post of officers they remained inferior to British rankers and were looked down owing to their race. This also led to the creation of a subaltern group who have separated from their class and are neither acceptable nor in reality absorbed by the "other"—whom they look up to. Arjun's rise in Colonial Army brings in more contradiction in his life and Ghosh examines another interesting fact—how Indian soldiers in the army disliked taking commands from an Indian. This speaks of inferiority complex Indians had internalized and something that on ground helped the British to strengthen their foothold in India. Fanon reflects on the same ideology in *The Wretched of the Earth*:

> Whereas the colonist or police officer can beat the colonized subject day in and day out, insult him and shove him to his knees, it is not uncommon to see the colonized subject draw his knife at the slightest hostile or aggressive look from another colonized subject. (17)

This earns for Indians in British services dual hatred and discrimination, the first from their fellows and the latter form their new lords. The moral dilemma has been presented in *The Glass Palace* through the voice of soldiers like Arjun who are trapped between their country and British Raj, they are employed in. Ghosh studies the metal state of confusion amidst the Indian soldiers on one hand and the hegemony of British imposed through the notion of colonialism on their subjects. Ghosh writes in his essay "India's Untold War of Independence" that men like Arjun joined the Indian National Army considering it to be a way to serve their country but were traumatised by the very realisation of the rift between the British and the Indians that tore them apart. Indians employed in the British Army faced discrimination that permanently distanced the two creating fractures that can never heal. These soldiers were "…disillusioned

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

them with their immediate superiors, but it did not make them hostile to Western institutions." (Mondal 120).

The Glass Palace bears witness to the creation and breaking of nations simply to meet the colonisers' expectations and to their profit. The exodus of people from Burma to India resulted in increased panic and fear amidst the Indian citizens. Similar were the conditions when India was partitioned in 1947. Rajkumar initially refuses to leave Burma during the tumultuous times:

> I've lived here all my life; everything I have is here. I'm not such a coward as to give up everything I've worked for at the first sign of trouble. And anyway, what makes you think that we'll be any more welcome in India than we are here? There are riots in India all the time—how do you know that the same thing wouldn't happen to us there? (GP 245)

Ghosh in *The Glass Palace* enumerates the state of numerous uprooted people who have to leave their land due to vivid social and political factors as indentured labourers called "girmitiyas" or "coolies." The initial marginalisation of people started when labourers from the Northeast, especially plains of Ganges, were recruited to work for British sugar plantations in Trinidad, Guyana, Fiji and Mauritius. The abolition of slavery in 1830 paved way for the second batch of migratory workers who were to be transported as indentured labourers and were required to sign a bond, 'girmit', for a period of fifteen to twenty years expecting them to replace former slaves. These labourers were subjected to inhuman conditions and were made to live in a pitiable environment causing widespread disease and death, those lucky to survive were allowed to be transported back or renew their bonds. The bulk of these labourers renewed their bonds as they have no relations back home or were simply expelled and no more welcomed to their home country owing to cultural and religious orthodoxies which despised men who have travelled on seas. Ghosh has narrated at length about these *girmitiyas* in his Ibis trilogy where British at the peak of their power even employed thee labourers in cotton and rubber plantation in Southeast Asia and other overseas territories.

The political history of India or Britain does not record the perils and toils of these labourers and inhumane oppression that was meted to them at the hands of colonial masters. Ghosh's narrative is an attempt to give voice to these voiceless individuals who gave a part of their life to sustain the British Raj and have been denied of any recognition and respect. The references mentioned by Ghosh present only a surface narration of the lives of these people and it on the whole impossible to pay them true tribute. Gayatri Spivak writes in his essay *Can the Subaltern Speak?* it is impossible for a subaltern to speak because they do not have anyone to hear. She adds that they live in a state of perpetual marginality and it is impossible for the middle-class academic to bring out the voices of the subaltern with authenticity, attempts can be made in tracing these silenced or lost voices. Amitav Ghosh attempts to assimilate the lives of these people in his books through intensive research and fieldwork. His narration presents a reliable picture of the torments that these people underwent during the heyday of British Colonial rule. Huddled like animals they were made to travel and live in life-threatening conditions from the day they board the ship, a state that comes to rest only with them coming to rest. Vijay Mishra points out that "men outnumbered women almost ten to one at the beginning (improving to ten to six towards the end)" (83).

Works Cited:

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

Ashcroft Bill. *The Empire Writes Back.* 2nd Edition. London: Routledge, 2002.

Bhabha, Homi. "Of Mimicry and Man: The Ambivaalence of Colonial Discourse." Discipleship: A Special Issue on Psychoanalysis 28(Spring 1984): 125-133. JSTOR. Web. 24 May 2016.

Dewnarain, Nandini Bhautoo. "The Glass Palace: Reconnecting Two Diasporas." *History, Narrative, and Testimony in Amitav Ghosh's Fiction*. Ed. Chitra Sankaran. Albany: Sunny Press, 2012. 33-46.

Dhawan, R.K. *The Novels of Amitav Ghosh."* New Delhi: Prestige Books, 1999.

Dixon, Robert. "Travelling in the West: The Writing of Amitav Ghosh." *The Journal of Commonwealth Literature.* Vol.31, Issue No.1, New Delhi: Sage Publications, 1996.

Fanon, Frantz. Black Skin, White Masks. Trans. Charles Lam Markmann. UK: Pluto Press, 1986.

Ghosh, Amitav. "The Diaspora in Indian Culture". *The Imam and the Indians: Prose Pieces*. New Delhi: Ravi Dayal Publisher, 2002.

______. *River of Smoke*. India: Hamish Hamilton by Penguin Books, 2011.

______. *Sea of Poppies.* New Delhi: Penguin Books, 2008.

______. *In An Antique Land*. 1992. New York: Vintage, 1994.

______. *The Calcutta Chromosome*. 1996. London: Picador, 2004.

______. *The Glass Palace*. London: Harper Collins, 2018.

______. *The Hungry Tide*. London: Harper Collins, 2018.

______. *The Shadow Lines*. 1988. New Delhi: Ravi Dayal, 2018.

Ghosh, Bishnupriya. "When Speaking with Ghosts: Spectral Ethics in The Calcutta Chromosome." *Amitav Ghosh: Critical Perspectives. Ed. Brinda Bose.* Delhi: Pencraft International, 2005. pp 117-138.

Mondal, Anshuman A. *Amitav Ghosh: Contemporary World Writers.* New Delhi: Viva Books, 2010.

❑❑❑

11.

A Study of Quantum Computing and Its Applications in Modern Technology

Dr. Upendra Singh
Department of Physics
Smt. Indira Gandhi Government P.G. College,
Lalganj, Mirzapur (U.P.) – 231211

Abstract

Quantum computing has emerged as a revolutionary paradigm that challenges the inherent limitations of classical computational systems. This study investigates the foundational concepts of quantum computing and analyzes its potential applications across key domains of modern technology. Drawing upon a systematic review of secondary data from scholarly articles and institutional reports, the research emphasizes how core quantum principles—such as superposition and entanglement—enhance computational efficiency and enable complex problem-solving.

The analysis indicates that quantum computing holds considerable promise in fields such as cryptography, optimization, artificial intelligence, and drug discovery, although many of its applications are still in the early stages of development. At the same time, the study highlights significant challenges, including decoherence, high error rates, and limitations in current hardware, which hinder large-scale implementation. The findings suggest that quantum computing is presently in a transitional phase, marked by substantial theoretical potential but limited practical deployment. Despite these constraints, the study concludes that quantum computing has the capacity to transform technological progress and is likely to play a crucial role in shaping the future of computational and scientific innovation.

Keywords: Quantum Computing, Qubits, Superposition, Entanglement, Quantum Algorithms, Cryptography, Artificial Intelligence, Optimization Techniques, NISQ (Noisy Intermediate-Scale Quantum) Era, Computational Complexity

1. Introduction

The development of computation has entered a new and transformative stage with the rise of quantum computing, a paradigm that seeks to overcome the inherent limitations of classical information processing. Traditional computing systems operate on binary logic, where information is represented through bits in the form of 0s and 1s. While highly effective for a wide range of applications, these systems face significant challenges when dealing with problems characterized by vast combinatorial complexity, including molecular modelling, cryptographic analysis, and large-scale optimization tasks (Nielsen &

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

Chuang, 2010). With the rapid expansion of data and the growing influence of artificial intelligence, the need for more advanced computational approaches has become increasingly evident, leading researchers to explore models based on the principles of quantum mechanics. Quantum computing introduces a fundamentally different approach to information processing by utilizing key quantum phenomena such as superposition and entanglement. Unlike classical bits, quantum bits—or qubits—can exist in multiple states at the same time, allowing quantum systems to perform many calculations simultaneously. This capability provides a level of parallelism that can dramatically enhance computational efficiency (Preskill, 2018). In addition, entanglement enables strong correlations between qubits, making it possible to process complex relationships in ways that classical systems cannot replicate. Together, these features allow quantum computers to address specific types of problems more efficiently than traditional machines.

The conceptual basis of quantum computing can be traced back to early theoretical work suggesting that quantum systems could simulate physical processes more effectively than classical computers (Deutsch, 1985). This idea gained momentum with the introduction of powerful quantum algorithms. For example, Shor's algorithm demonstrated that quantum computers could perform integer factorization at a speed that challenges existing cryptographic systems (Shor, 1995). Likewise, Grover's algorithm showed how quantum methods could significantly improve the efficiency of search operations within large datasets (Grover, 1996). These developments marked a shift in the field, positioning quantum computing as a promising area with practical relevance rather than a purely theoretical concept.

In recent years, technological advancements have brought quantum computing closer to practical realization. Experimental demonstrations, such as the achievement of quantum supremacy using programmable superconducting processors, have provided evidence of quantum systems outperforming classical computers in specific tasks (Arute et al., 2019). At the same time, major technology organizations and research institutions have intensified their efforts to develop scalable quantum architectures and explore real-world applications (IBM Quantum). In cryptofigurey, it poses both a challenge and an opportunity by threatening existing encryption methods while enabling the development of quantum-secure communication systems (Bennett & Brassard, 1984; Ekert, 1991). In artificial intelligence and machine learning, quantum approaches offer the potential to process large datasets more efficiently and uncover complex patterns (Biamonte et al., 2017). Additionally, in fields such as drug discovery and material science, quantum computing can simulate molecular interactions with unprecedented accuracy, accelerating innovation and scientific discovery (Cao et al., 2019). Although quantum computing shows considerable promise, it is still in an early stage of development and faces several critical technical barriers. Issues such as maintaining quantum coherence, managing error correction, and achieving scalable hardware systems continue to limit its practical implementation. Addressing these challenges requires sustained research efforts and collaboration across multiple scientific and technological disciplines (National Academies of Sciences, 2019).

Against this backdrop, the present study aims to explore the fundamental concepts underlying quantum computing and to examine its applications within contemporary technological domains. By reviewing and integrating insights from existing literature and highlighting current developments, the study seeks to offer a clearer and more comprehensive understanding of this rapidly advancing field.

Review of Literature

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

The body of literature on quantum computing reflects a gradual shift from theoretical foundations to experimental realization and practical applications. Early scholarly work primarily focused on establishing the conceptual and mathematical basis of quantum computation. One of the most influential contributions in this regard is the comprehensive framework provided by Nielsen and Chuang (2010), who systematically explained quantum gates, circuits, and algorithms, laying the groundwork for subsequent research. Their work remains central to understanding how quantum systems differ fundamentally from classical computational models.

The theoretical basis of quantum computation was first presented by David Deutsch (1985), who introduced the idea of a universal quantum computer. This concept proposed that quantum systems could model physical processes more efficiently than classical machines, thereby expanding the boundaries of computational theory. Building on this foundation, Shor (1995) developed a quantum algorithm for integer factorization that operates in polynomial time, showing a clear advantage over classical methods. This advancement carried significant implications for cryptography, as it questioned the reliability of commonly used encryption systems. In a similar context, Grover (1996) introduced a quantum search algorithm that reduces the time required to find an element in an unsorted database, further highlighting the effectiveness of quantum approaches in particular computational tasks. As the field progressed, researchers began to explore the broader capabilities and limitations of quantum algorithms. Montanaro (2016) provided a comprehensive overview of quantum algorithms, highlighting their efficiency in solving optimization, simulation, and search problems. This work emphasized that while quantum speedup is not universal, it is highly impactful in certain classes of computational tasks. Preskill (2018) introduced the concept of the Noisy Intermediate-Scale Quantum (NISQ) era, acknowledging the current limitations of quantum hardware while also identifying near-term opportunities for practical applications. His analysis underscored the importance of developing algorithms that can operate effectively within the constraints of existing quantum devices.

In the field of cryptography, existing studies point to both the potential benefits and challenges introduced by quantum computing. Bennett and Brassard (1984) were among the first to propose quantum key distribution, showing how principles of quantum mechanics can be applied to achieve secure communication. Ekert (1991) later extended this approach by integrating quantum entanglement into cryptographic methods, thereby strengthening security through the laws of physics. Together, these contributions demonstrate that quantum computing can act both as a disruptive influence and as a means to enhance cybersecurity. Biamonte et al. (2017) explored the integration of quantum computing with machine learning, suggesting that quantum algorithms could enhance data analysis and pattern recognition capabilities. In the field of chemistry and material science, Cao et al. (2019) examined how quantum systems can simulate molecular interactions with high precision, potentially revolutionizing drug discovery and material design. Similarly, Peruzzo et al. (2014) introduced variational quantum algorithms that enable practical problem-solving on near-term quantum devices, bridging the gap between theory and application.

Industrial and institutional reports have also enriched the literature by presenting practical applications and future possibilities. The National Academies of Sciences (2019) offered a detailed evaluation of advancements and ongoing challenges in quantum computing, stressing the importance of continuous investment and collaboration across disciplines. Reports from organizations such as IBM, Google, and

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

McKinsey have further demonstrated the potential of quantum computing in areas like finance, logistics, and optimization, highlighting its applicability across multiple sectors.

Despite this progress, the literature repeatedly points to several constraints. Quantum systems are extremely sensitive to external disturbances, which result in decoherence and operational errors. The absence of stable and scalable hardware continues to be a key obstacle to broader implementation. In addition, the high cost and technical complexity associated with quantum technologies create further difficulties for both researchers and industry (Preskill, 2018; National Academies of Sciences, 2019).

Overall, the review indicates that quantum computing has progressed from a theoretical idea to an emerging technological reality with wide-ranging interdisciplinary relevance. However, it remains in a transitional stage, requiring continued research to address existing limitations and unlock its full transformative potential.

Objectives of the Study

The present study aims to examine the evolving field of quantum computing through a systematic and analytical approach. The specific objectives are as follows:

- To explore the core principles of quantum computing, with special focus on quantum phenomena such as superposition and entanglement.
- To compare classical and quantum computing systems in terms of their processing mechanisms and efficiency.
- To study the applications of quantum computing in key areas, including cryptography, artificial intelligence, healthcare, and optimization.
- To assess the advantages and potential contributions of quantum computing in addressing complex real-world challenges.
- To identify the major challenges and limitations in the development and practical implementation of quantum technologies.
- To examine future directions and emerging trends in quantum computing research and innovation.

Research Questions

In alignment with the above objectives, the study seeks to address the following research questions:

- What are the core principles that define quantum computing, and how do they differ from classical computational models?
- In what ways does quantum computing enhance computational efficiency and problem-solving capabilities?
- What are the major areas in modern technology where quantum computing is currently being applied or has potential applications?
- What technical and practical challenges hinder the large-scale adoption of quantum computing?

- How can quantum computing shape the future of technological development and scientific advancement?

Research Methodology

The study follows a descriptive and analytical research design, as it focuses on a systematic examination of the concepts, applications, and implications of quantum computing without involving experimental methods or primary data collection.

5.1 Nature of Data

The research relies entirely on secondary data gathered from a variety of reliable and academic sources. These sources include peer-reviewed journal articles, scholarly books, conference papers, and reports issued by recognized institutions and technology organizations.

5.2 Sources of Data

The data has been gathered from:

- International research journals and publications in the field of quantum computing
- Books authored by subject experts
- Online academic databases and digital repositories
- Reports and white papers from organizations such as IBM, Google, and global research institutions

5.3 Method of Analysis

The collected data were examined using thematic and content analysis techniques. Through this approach, relevant information from various secondary sources was carefully reviewed and grouped into major themes such as fundamental concepts, algorithmic developments, technological applications, and the challenges associated with quantum computing. Each theme was analyzed in depth to identify patterns, connections, and emerging trends within the field. The analysis also involved integrating different viewpoints from the literature to build a clear and comprehensive understanding of the topic. This method ensures that the study offers a well-organized and balanced interpretation of quantum computing and its role in contemporary technological advancement.

5.4 Scope of the Study

The study is limited to a conceptual and application-based analysis of quantum computing. It does not involve experimental validation or technical implementation. The focus remains on understanding theoretical foundations and exploring practical implications in modern technology.

6. Conceptual Framework of Quantum Computing

Quantum computing is based on the principles of quantum mechanics, which explain how physical systems behave at atomic and subatomic levels. In contrast to classical computing, which relies on deterministic logic, quantum computing functions within a probabilistic framework supported by linear algebra. The power of quantum computing arises from its core elements—qubits, superposition,

entanglement, and quantum gates—which collectively enable a new model of information processing (Nielsen & Chuang, 2010; Preskill, 2018).

6.1 Quantum Bits (Qubits): The Fundamental Unit of Information

The fundamental unit of quantum information is the quantum bit, commonly known as a qubit. Unlike a classical bit, which can exist only in one of two definite states (0 or 1), a qubit can occupy a range of states simultaneously because of its quantum properties. This is mathematically expressed as a linear combination of basis states:

$$|\psi\rangle = \alpha|0\rangle + \beta|1\rangle$$

where α and β are complex probability amplitudes that satisfy the normalization condition:

$$|\alpha|^2 + |\beta|^2 = 1$$

This representation shows that a qubit carries probabilistic information rather than fixed values. When a measurement is made, the qubit collapses into one of the basis states, with the outcome determined by the corresponding probabilities. This concept marks a clear shift from classical binary representation and serves as the mathematical foundation of quantum computation (Nielsen & Chuang, 2010). From a practical standpoint, qubits can be realized using physical systems such as superconducting circuits, trapped ions, and photons. However, preserving their quantum state over time is difficult, as they are highly sensitive to environmental disturbances, leading to loss of coherence (Preskill, 2018).

6.2 Superposition: The Principle of Parallelism

Superposition is a key characteristic of quantum systems that enables a qubit to exist in more than one state at the same time. This property allows quantum computers to evaluate multiple possibilities simultaneously, creating a level of parallel processing that cannot be achieved by classical computing systems (Deutsch, 1985). Geometrically, the state of a qubit can be visualized using the Bloch Sphere representation:

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

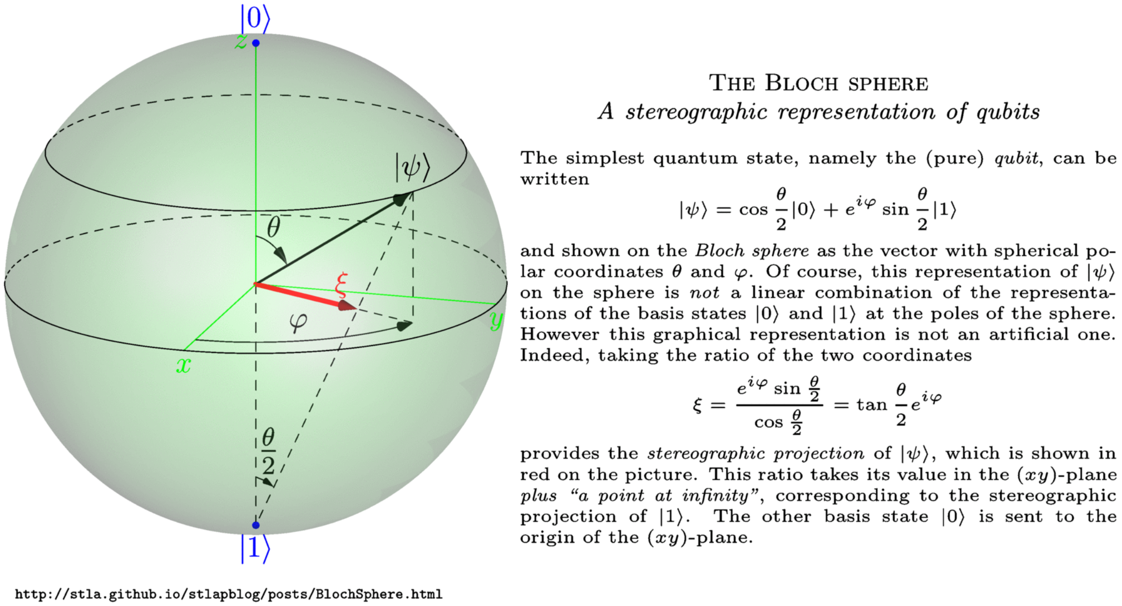

Figure 1:http://stla.github.io/stlapblog/posts/BlochSphere.html

In this model, the north and south poles represent the classical states |0⟩ and |1⟩, while every other point on the surface corresponds to a superposition state. The location of the state vector on the sphere is defined by angular parameters, offering an intuitive way to visualize how quantum states evolve over time. From a computational perspective, superposition allows quantum algorithms to process multiple inputs at once. This feature forms the basis of the efficiency observed in various quantum algorithms, particularly those used for search and optimization (Grover, 1996).

6.3 Entanglement: Non-Classical Correlation

Entanglement is a distinctive quantum phenomenon in which two or more qubits become linked in such a way that the state of each qubit cannot be described independently of the others. This correlation remains intact even when the qubits are separated by large distances, making entanglement one of the most fascinating features of quantum mechanics (Ekert, 1991).

A well-known example of an entangled system is the Bell state:

$$|\Phi^{+}\rangle = \frac{1}{\sqrt{2}}(|00\rangle + |11\rangle)$$

In this present state, measurement of one qubit instantaneously determines the state of the other. Such correlations cannot be explained using classical physics and form the basis for applications in quantum communication and cryptography (Bennett & Brassard, 1984). Entanglement enhances computational power by enabling coordinated operations across multiple qubits, thereby facilitating efficient problem-solving in complex domains such as optimization and simulation.

6.4 Quantum Gates and Circuits: Operational Framework

Quantum gates are unitary transformations that act on qubits to modify their states. In contrast to classical logic gates, which operate on definite binary values, quantum gates work with probability amplitudes while preserving the overall quantum state. One of the most commonly used gates is the Hadamard gate, expressed as:

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

$$H = 21[111 - 1]$$

The Hadamard gate converts a definite quantum state into a superposition state, thereby facilitating quantum parallelism. When it is applied to a qubit initially in the state $|0\rangle$, it generates an equal superposition of $|0\rangle$ and $|1\rangle$ (Nielsen & Chuang, 2010). Quantum circuits are formed by arranging a sequence of quantum gates to carry out specific computational operations. The effectiveness of these circuits is essential for the performance of quantum algorithms, particularly in conditions affected by noise and decoherence (Montanaro, 2016).

6.5 Conceptual Integration and Significance

The integrated operation of qubits, superposition, entanglement, and quantum gates creates a computational model that goes beyond the limits of classical systems. Rather than relying on sequential processing, quantum computing utilizes probabilistic behavior and parallelism to solve complex problems with greater efficiency.

This conceptual structure serves as the theoretical basis of quantum computing while also supporting its practical use across various fields. A clear understanding of these underlying principles is crucial for assessing the transformative role of quantum technologies in contemporary scientific and industrial applications.

7. Applications of Quantum Computing in Modern Technology

The application of quantum computing in modern technology is fundamentally driven by its ability to achieve **computational efficiency beyond classical limits**. In general terms, this advantage can be expressed as:

$$Tquantum(n) \ll Tclassical(n)$$

This inequality signifies that, for certain classes of problems, quantum algorithms can solve tasks in significantly less time than classical algorithms, thereby enabling breakthroughs in fields characterized by high computational complexity (Montanaro, 2016).

7.1 Quantum Computing in Cryptography and Cybersecurity

Quantum computing has major implications for cryptography, particularly in relation to data security. Traditional cryptographic systems depend on the computational difficulty of mathematical problems such as integer factorization. However, quantum algorithms—most notably Shor's algorithm—can solve such problems efficiently, posing a challenge to widely used encryption methods (Shor, 1995).

At the same time, principles of quantum mechanics make it possible to develop highly secure communication techniques. Quantum Key Distribution (QKD) ensures that any attempt to intercept information disturbs the quantum state, thereby revealing the presence of eavesdropping (Bennett & Brassard, 1984). Protocols based on entanglement further enhance this security by establishing non-classical correlations between particles (Ekert, 1991).

Thus, quantum computing presents both a threat and an opportunity for cybersecurity, as it undermines conventional encryption while also enabling more advanced and secure communication systems.

7.2 Applications in Artificial Intelligence and Machine Learning

Quantum computing offers a novel approach to handling large-scale data and complex learning tasks. In quantum machine learning, classical data can be encoded into quantum states as:

$$|\psi(x)\rangle = \sum_i x_i \,|\, i\rangle$$

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

This approach enables quantum systems to handle high-dimensional data with greater efficiency. In contrast to classical methods that operate sequentially, quantum systems can examine multiple configurations at the same time, improving capabilities in pattern detection and predictive analysis (Biamonte et al., 2017). These advantages are especially valuable in areas such as image recognition, natural language processing, and large-scale data analysis. In addition, hybrid quantum-classical models are increasingly being explored as practical solutions within the current technological environment (Preskill, 2018).

7.3 Quantum Computing in Drug Discovery and Healthcare

The healthcare sector is expected to gain considerable advantages from quantum computing, especially in areas such as molecular simulation and drug discovery. Simulating molecular systems using classical methods is highly demanding because the number of variables grows exponentially. In contrast, quantum systems are better suited to represent and analyze these interactions more efficiently.

The probabilistic nature of quantum systems can be represented as:

$$P(0) = |\alpha|2, P(1) = |\beta|2$$

This probabilistic framework enables accurate prediction of molecular behaviors and interactions. As a result, quantum computing can accelerate the identification of drug candidates, optimize chemical reactions, and contribute to personalized medicine (Cao et al., 2019). Variational quantum algorithms further enable practical implementation on near-term devices, making this application increasingly viable (Peruzzo et al., 2014).

7.4 Financial Modeling and Risk Analysis

Financial systems involve complex optimization and probabilistic modeling, making them ideal candidates for quantum computing applications. Problems such as portfolio optimization and risk assessment can be expressed mathematically as:

$$minf(x)$$

where the objective is to minimize risk or maximize returns under given constraints. Quantum algorithms can explore multiple financial scenarios simultaneously, enabling more accurate and efficient decision-making. This capability enhances portfolio management, fraud detection, and market prediction, providing a competitive advantage in financial analytics.

7.5 Optimization and Logistics

Optimization problems are central to industries such as transportation, supply chain management, and manufacturing. Classical algorithms often struggle with large datasets due to combinatorial complexity. Quantum computing addresses this challenge by reducing computational effort.

For example, in search-related optimization problems, classical algorithms require linear time complexity:

$$O(N)$$

whereas quantum algorithms such as Grover's algorithm reduce this to:

$$O(\sqrt{N})$$

This reduction significantly improves efficiency in large-scale systems. Applications include route optimization, traffic management, and resource allocation, where quantum algorithms can identify optimal solutions more effectively (Grover, 1996; Farhi et al., 2014).

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

7.6 Climate Modeling and Environmental Science

Climate modeling involves analyzing highly complex and interdependent systems. Quantum computing enhances this process by enabling more accurate simulations of environmental dynamics. The ability to process multiple variables simultaneously allows for improved modeling of atmospheric and oceanic processes. This leads to more reliable climate predictions and supports the development of sustainable technologies. Quantum approaches can also optimize energy systems and resource utilization, contributing to environmental sustainability (Cao, Y. et al., 2019).

7.7 Industrial and Technological Innovations

Quantum computing is increasingly being integrated into industrial and technological ecosystems. Organizations are leveraging quantum platforms to address complex simulation problems, optimize manufacturing processes, and enhance system design.

The concept of **quantum computational advantage**, expressed earlier as:

$$Tquantum(n) \ll Tclassical(n)$$

is particularly relevant in industrial applications where time efficiency directly impacts productivity and innovation. Cloud-based quantum services are also enabling broader access to quantum technologies, fostering experimentation and research across sectors (Cao, Y., et al. (2019)).

7.8 Critical Perspective on Applications

Despite its transformative promise, the practical realization of quantum computing is still constrained by technological limitations. Present-day quantum devices operate within the Noisy Intermediate-Scale Quantum (NISQ) era, where issues such as high error rates and system instability limit large-scale applications (Preskill, 2018). In addition, moving from theoretical concepts to real-world implementation demands further progress in hardware development, error correction techniques, and algorithm design. As a result, although the potential applications are significant, they remain in a stage of ongoing development.

7.9 Synthesis of Applications

The combination of mathematical models, probabilistic approaches, and quantum principles highlights the potential of quantum computing to reshape modern technology. Its impact is especially evident in areas that demand high computational power and the ability to solve complex problems. However, achieving this potential requires addressing current limitations and strengthening the technological infrastructure needed for scalable quantum systems.

8. Advantages of Quantum Computing

Quantum computing represents a fundamentally different approach to computation, offering notable advantages over classical systems, particularly when addressing complex and large-scale problems.

- **Exponential Computational Power**
  A major advantage of quantum computing is its potential to solve certain categories of problems at an exponentially faster pace. By leveraging superposition and entanglement, quantum systems can consider multiple possibilities simultaneously, which leads to a substantial reduction in computational time (Montanaro, 2016).

- Enhanced Problem-Solving Capability
  Quantum computers are particularly effective in solving optimization, simulation, and search problems that are otherwise computationally intensive. This makes them highly suitable for applications in logistics, crypto figure, and scientific research.
- Improved Data Processing Efficiency
  Quantum systems can handle large datasets more efficiently by exploiting parallel computation. This is especially beneficial in fields such as artificial intelligence and machine learning, where data complexity is high (Biamonte et al., 2017).
- Breakthroughs in Scientific Research
  Quantum computing enables accurate simulation of molecular and atomic interactions, which is difficult for classical computers. This capability accelerates advancements in drug discovery, material science, and environmental modeling (Cao et al., 2019).
- Innovation in Secure Communication
  Quantum cryptography introduces fundamentally secure communication methods, ensuring data protection through the laws of quantum physics rather than computational complexity (Bennett & Brassard, 1984).

Challenges and Limitations of Quantum Computing

Despite its transformative potential, quantum computing continues to face several major challenges that restrict its current use.

• **Decoherence and Noise:** Quantum systems are highly sensitive to their surroundings. Even minimal interaction with the external environment can cause decoherence, leading to the loss of quantum information and resulting in computational inaccuracies (Preskill, 2018).

• **High Error Rates:** Quantum operations are vulnerable to errors due to the fragile nature of qubits. Although error correction methods are being developed, they demand substantial computational resources and are not yet fully efficient.

• **Hardware Limitations:** Building stable and scalable quantum hardware remains a significant obstacle. Existing quantum devices are limited in the number of qubits they can support, which restricts their overall processing capability.

• **High Cost and Technical Complexity:** Quantum computing systems require highly controlled conditions, such as extremely low temperatures, making them costly and technically challenging to maintain.

• **Limited Practical Implementation:** Most quantum applications are still in the experimental phase. The shift from theoretical concepts to practical use is gradual due to ongoing technological limitations (National Academies of Sciences, 2019

Table 1. Comparative Analysis: Classical vs Quantum Computing

Aspect	***Classical Computing***	***Quantum Computing***
Basic Unit	Bit (0 or 1)	Qubit (0, 1, or both simultaneously)
Processing Style	Sequential	Parallel (via superposition)
Computational Power	Limited for complex problems	Exponential for specific problems
Data Handling	Linear	Multi-dimensional

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

Error Sensitivity	Low	High (due to decoherence)
Security	Based on mathematical complexity	Based on quantum physics
Practical Use	Widely implemented	Still emerging

Analysis and Discussion

The analysis of quantum computing reveals a clear paradigm shift in computational science. Unlike classical systems, which rely on deterministic logic and sequential processing, quantum computing introduces probabilistic computation and parallelism. This shift enables the efficient handling of problems that are otherwise computationally infeasible. The applications discussed in the previous section demonstrate that quantum computing has the potential to revolutionize diverse fields, including cybersecurity, healthcare, finance, and environmental science. The integration of mathematical models and quantum principles further highlights its capability to address real-world challenges.

However, the discussion also indicates that the current state of quantum technology is transitional. While theoretical advancements are substantial, practical implementation is hindered by technical limitations such as noise, error rates, and hardware constraints. The NISQ era represents a phase where quantum systems are powerful yet not fully reliable (Preskill, 2018). Thus, quantum computing should be viewed as a promising yet evolving technology, requiring sustained research and interdisciplinary collaboration.

12. Major Findings of the Study

The present study offers a critical and layered understanding of quantum computing, revealing patterns that extend beyond theoretical explanation into measurable technological impact. The findings indicate not only the strengths and limitations of quantum systems but also the emerging trajectory of their practical relevance. These findings are interpreted below both qualitatively and in terms of comparative intensity, making them suitable for figureical representation.

1. Structural Transformation of Computational Logic

The study identifies a clear transition from classical binary logic to a probabilistic computational framework. This transformation is not superficial but structural in nature, altering how information is encoded, processed, and interpreted. Quantum computing introduces a state-space model where multiple possibilities coexist, thereby expanding computational depth rather than merely increasing speed.

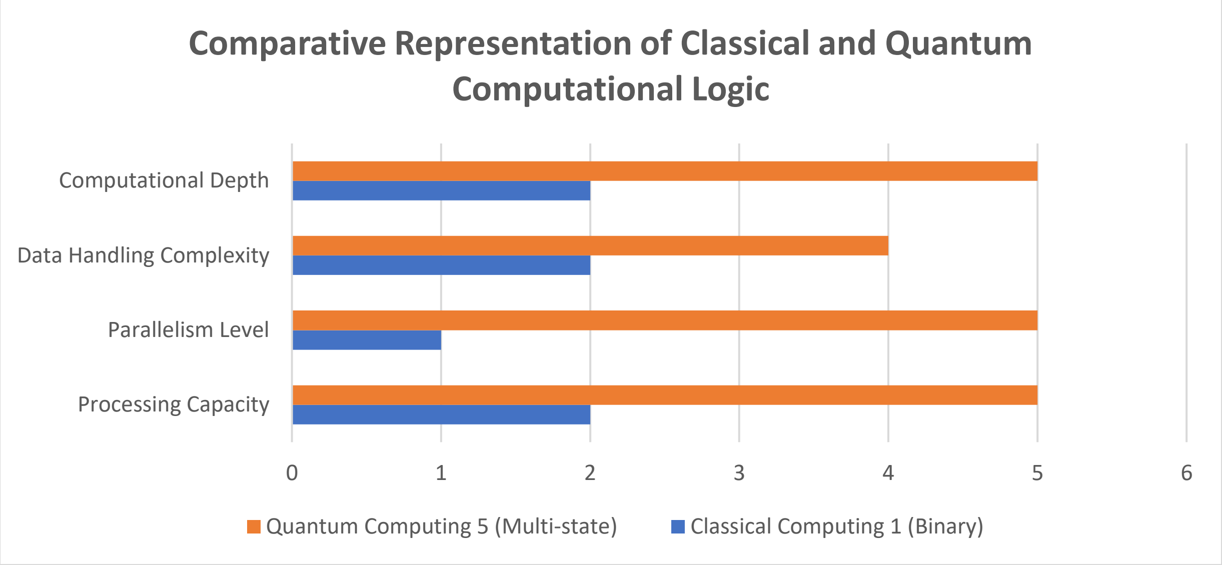

Figure 2: Comparative Representation of Classical and Quantum Computational Logic

This figure clearly illustrates that quantum computing outperforms classical computing across all key parameters. While classical systems operate on limited binary states with sequential processing, quantum systems demonstrate significantly higher levels of parallelism and computational depth due to their multi-state capability.

2. Differential Nature of Quantum Advantage

The findings reveal that quantum advantage is not uniform across all problem types. Instead, it exhibits **domain-specific intensity**, with maximum effectiveness observed in problems involving large-scale optimization, cryptofigureic computation, and simulation of complex systems.

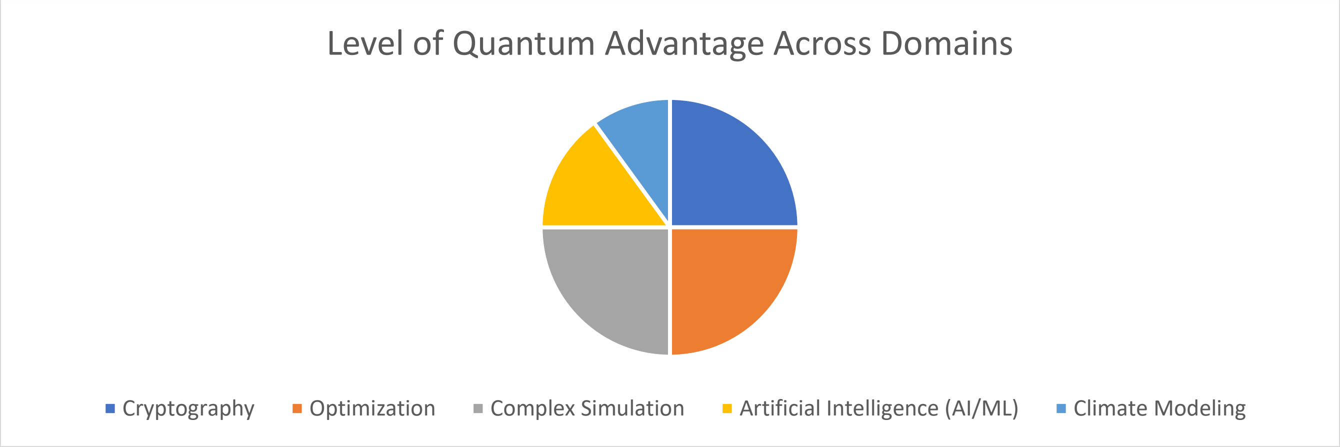

Figure 3: Domain-wise Variation in Quantum Computational Advantage

This figure indicates that quantum computing demonstrates the highest level of advantage in cryptofigurey, optimization, and complex simulations. In contrast, its effectiveness in artificial intelligence is moderate, while applications in climate modeling are still emerging. This variation highlights the domain-specific nature of quantum advantage.

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

3. Multidisciplinary Expansion and Technological Integration

Quantum computing demonstrates a strong tendency toward interdisciplinary integration. Its applications are not isolated but interconnected, influencing multiple sectors simultaneously. This indicates a shift toward **technological convergence**, where a single innovation drives progress across diverse domains.

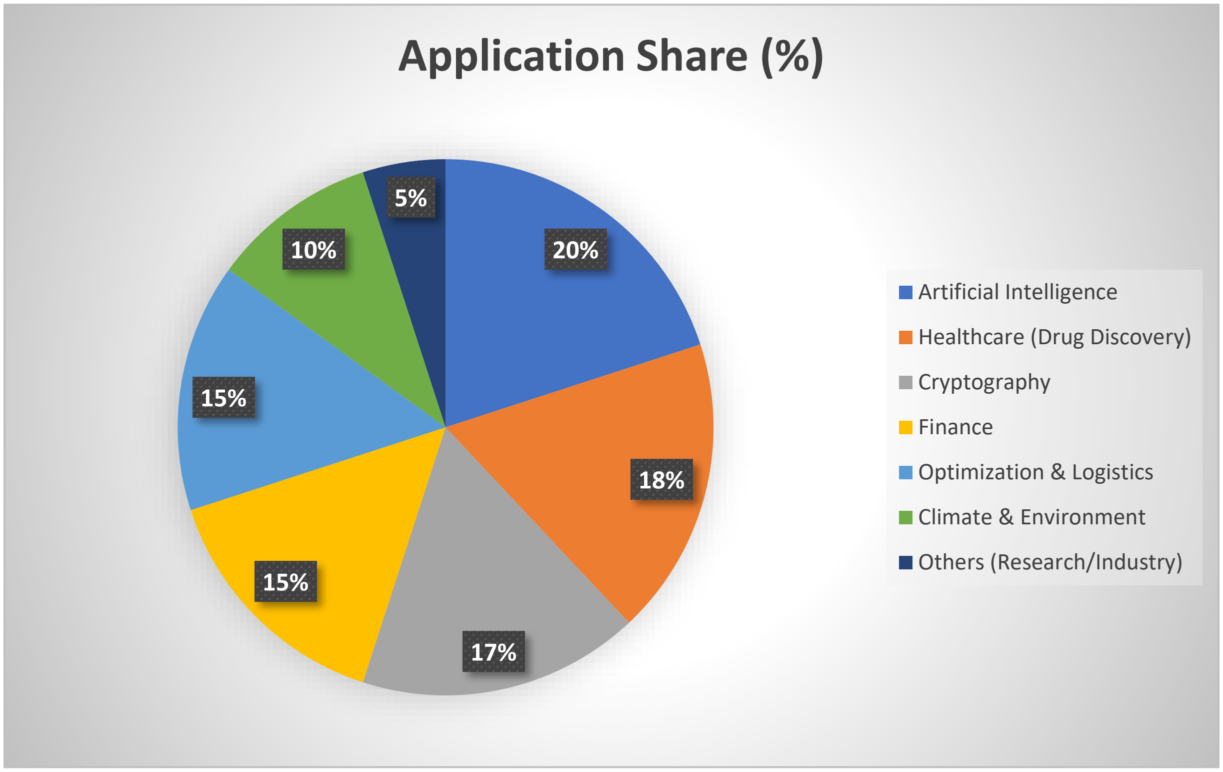

Figure 4: Sector-wise Distribution of Quantum Computing Applications

The pie chart illustrates that quantum computing applications are widely distributed across multiple sectors, with artificial intelligence and healthcare representing the largest shares. Cryptofigurey and finance also show significant contributions, while areas such as climate science and industrial applications are emerging. This distribution reflects the interdisciplinary and integrative nature of quantum computing.

4. Enhancement of Data Processing Efficiency

The study highlights a significant improvement in handling complex datasets. Quantum systems enable simultaneous evaluation of multiple data states, thereby increasing analytical efficiency. This is particularly evident in machine learning and predictive analytics.

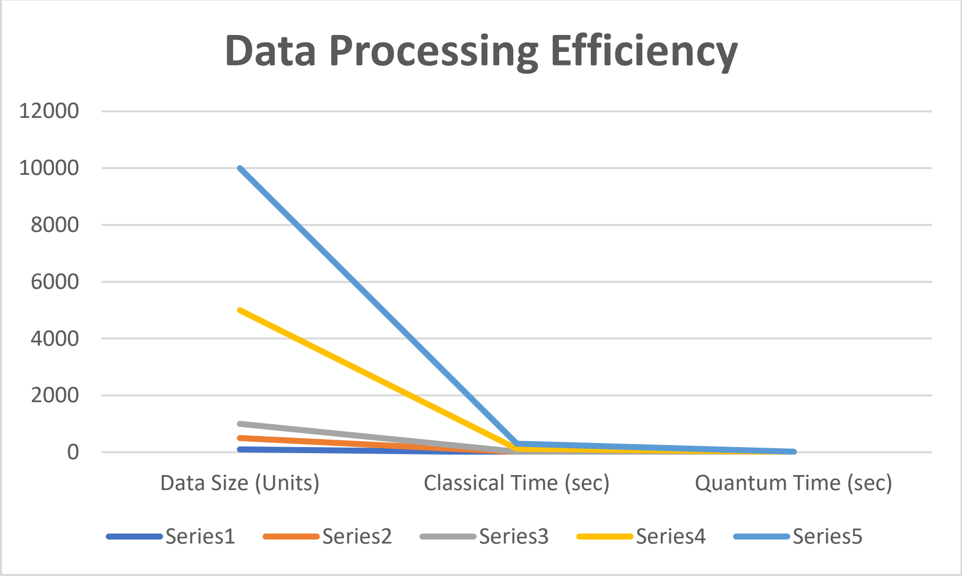

Figure 5: Enhancement of Data Processing Efficiency

The figure illustrates that as the size of data increases, the processing time required by classical computing grows rapidly, while the increase is comparatively gradual in the case of quantum computing. This suggests that quantum systems are more efficient in managing large and complex datasets, making them well-suited for data-intensive tasks such as machine learning and predictive analytics.

5. Acceleration of Scientific and Industrial Innovation

Quantum computing acts as a driver of innovation, especially in research-focused fields. Its capacity to model molecular interactions and enhance industrial optimization supports faster discovery processes and more efficient system design.

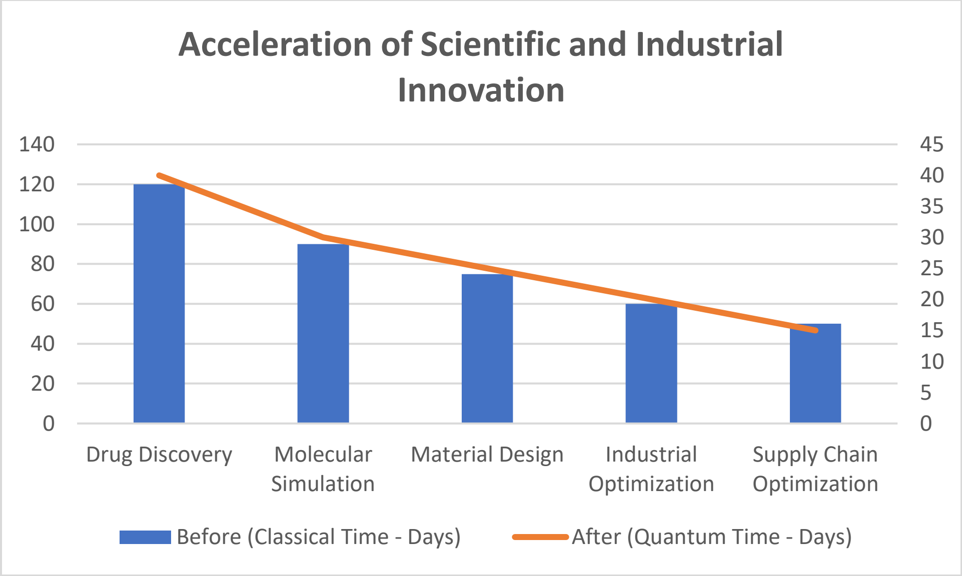

Figure 6: Acceleration of Scientific and Industrial Innovation

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

This figure demonstrates a significant reduction in time required for scientific and industrial processes when quantum computing is applied. Tasks such as drug discovery and molecular simulation show substantial improvements, indicating that quantum computing accelerates innovation and enhances efficiency in research and industrial applications.

6. Persistence of Technological Constraints

Despite its promise, the study highlights several significant limitations. Factors such as decoherence, sensitivity to noise, and the absence of scalable hardware have a substantial impact on performance. These challenges are not minor concerns but lie at the core of the present limitations of quantum computing.

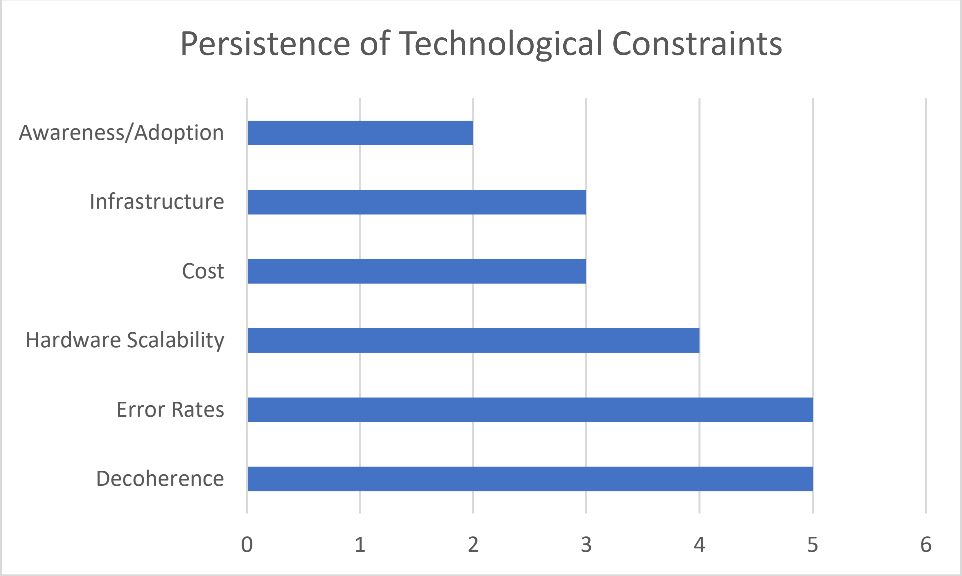

Figure 7: Persistence of Technological Constraints

This figure clearly indicates that decoherence and error rates are the most critical constraints affecting quantum computing systems. Hardware scalability also presents a significant challenge, while cost and infrastructure have moderate impact. Awareness and adoption remain comparatively lower constraints, suggesting that technical limitations are the primary barriers to advancement.

7. Transitional Nature of the NISQ Era

The findings position current quantum development within a transitional phase, where systems demonstrate capability but lack stability. This dual nature—potential combined with limitation—defines the present stage of quantum evolution.

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

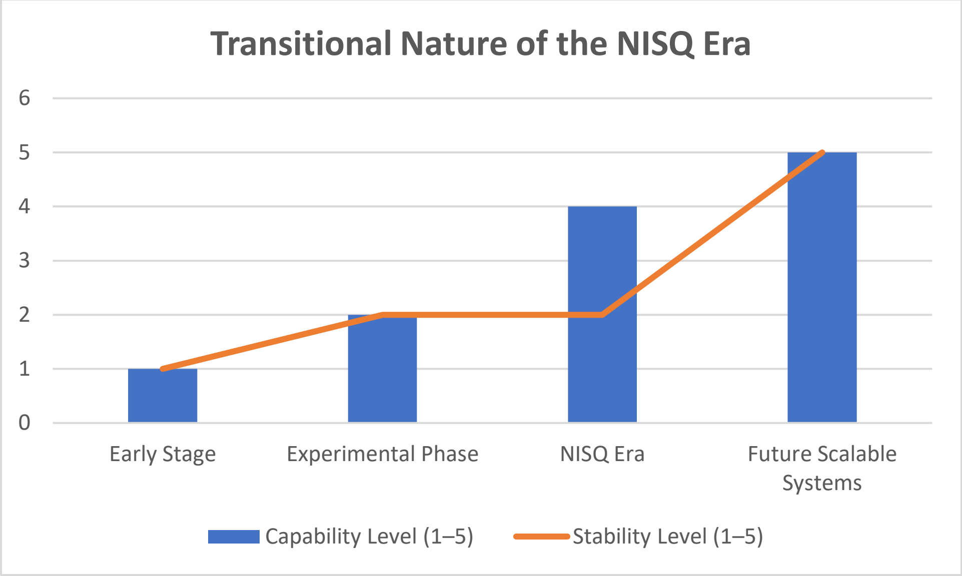

Figure 8: Transitional Nature of the NISQ Era

This figure illustrates that while the capability of quantum computing increases significantly from the experimental phase to the NISQ era, stability does not improve at the same rate. This gap highlights the transitional nature of the NISQ era, where systems exhibit high computational potential but limited reliability. In future scalable systems, both capability and stability are expected to reach optimal levels.

Conclusion

The present study has critically explored the concept of quantum computing and its increasing importance in contemporary technological advancement. The analysis indicates that quantum computing represents a fundamental shift in computation, moving beyond the constraints of classical systems toward a more flexible and probabilistic framework. By utilizing principles such as superposition and entanglement, it offers a level of computational efficiency that has the potential to transform problem-solving across various domains. The study further shows that the most significant impact of quantum computing is observed in areas involving high computational complexity, particularly in cryptography, optimization, and scientific simulation. Its growing applications in fields such as artificial intelligence, healthcare, finance, and environmental science highlight its interdisciplinary scope. However, this influence is not evenly distributed, as many applications are still in experimental or early developmental stages. At the same time, the findings emphasize several critical challenges that limit its practical implementation. Factors such as decoherence, high error rates, hardware constraints, and high operational costs continue to hinder scalability and broader adoption. These limitations suggest that, despite its strong theoretical foundation, quantum computing remains in a transitional stage of development.

The results of the study establish a balanced perspective: while quantum computing holds immense transformative potential, its present capabilities are constrained by technological and infrastructural limitations. This dual nature reflects a technology that is both promising and evolving, requiring sustained

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

research and innovation for its full realization. Quantum computing is not merely an extension of classical computing but a revolutionary paradigm that has the capacity to reshape the future of modern technology.

Ethical Considerations: This study is based on reliable secondary sources and follows proper citation practices to ensure academic integrity. The analysis has been conducted objectively without bias or data manipulation. No human participants were involved, and all information is presented responsibly and accurately.

References

Arute, F., et al. (2019). Quantum supremacy using a programmable superconducting processor. *Nature, 574*(7779), 505–510. https://www.nature.com/articles/s41586-019-1666-5

Bennett, C. H., & Brassard, G. (1984). Quantum cryptography: Public key distribution and coin tossing. https://arxiv.org/abs/2003.06557

Biamonte, J., et al. (2017). Quantum machine learning. *Nature, 549*(7671), 195–202. https://www.nature.com/articles/nature23474

Cao, Y., et al. (2019). Quantum chemistry in the age of quantum computing. *Chemical Reviews, 119*(19), 10856–10915. https://doi.org/10.1021/acs.chemrev.8b00803

Deutsch, D. (1985). Quantum theory, the Church–Turing principle and the universal quantum computer. *Proceedings of the Royal Society A, 400*(1818), 97–117. https://royalsocietypublishing.org/doi/10.1098/rspa.1985.0070

Ekert, A. K. (1991). Quantum cryptography based on Bell's theorem. *Physical Review Letters, 67*(6), 661–663. https://doi.org/10.1103/PhysRevLett.67.661

Farhi, E., et al. (2014). A quantum approximate optimization algorithm. https://arxiv.org/abs/1411.4028

Google. (2019). *Quantum AI and quantum supremacy*. https://ai.google/research/teams/applied-science/quantum-ai/

Grover, L. K. (1996). A fast quantum mechanical algorithm for database search. https://arxiv.org/abs/quant-ph/9605043

Montanaro, A. (2016). Quantum algorithms: An overview. *NPJ Quantum Information, 2*, 15023. https://www.nature.com/articles/npjqi201523

National Academies of Sciences, Engineering, and Medicine. (2019). *Quantum computing: Progress and prospects*. National Academies Press. https://nap.nationalacademies.org/catalog/25196

Nielsen, M. A., & Chuang, I. L. (2010). *Quantum computation and quantum information*. Cambridge University Press. https://doi.org/10.1017/CBO9780511976667

Peruzzo, A., et al. (2014). A variational eigenvalue solver on a quantum processor. *Nature Communications, 5*, 4213. https://www.nature.com/articles/ncomms5213

Preskill, J. (2018). Quantum computing in the NISQ era and beyond. *Quantum, 2*, 79. https://doi.org/10.22331/q-2018-08-06-79

Shor, P. W. (1995). Algorithms for quantum computation: Discrete logarithms and factoring. https://arxiv.org/abs/quant-ph/9508027

❑❑❑

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

12.

A Study of World Economic Crisis and its Impact on India

Dr. Sachin Prakash Pawar,
Assistant Professor,
PG Department of Commerce, Management and Research,
People's College, Nanded

Introduction:

The economic recession which started in US soon became global. Every economy across the globe was affected in one way or other. India was not an exception. The increased integration of the Indian economy with the rest of world assured that India will face the effects of recession sooner or later. The international developments were leaving some downside marks on the Indian economy. The growth rates during the periods reveal the fact that there was a decrease in the GDP. The details are given in the following table

Table 1.2: Growth Rate (in %)

Sector	**2007-08**	**2008-09**	**2009-10**	**2010-11**	**2011-12**	Apr-Dec 2011-12	Apr-Dec 2012-13
Coal	6.3	8.0	8.1	-0.2	1.2	-2.7	5.7
Crude Oil	0.4	-1.8	0.5	11.9	1.0	1.9	-0.4
Natural Gas	2.1	1.3	44.6	10.0	-8.9	-8.8	-13.3
Refinery Products	6.5	3.0	-0.4	3.0	3.1	4.0	6.9
Fertilizers	-7.9	-3.9	12.7	0.0	0.4	-0.5	-3.4
Steel	6.8	1.9	6.0	13.2	7.0	9.1	3.6
Cement	8.1	7.2	10.5	4.5	6.7	5.8	6.1
Electricity	6.3	2.7	6.2	5.6	8.1	9.3	4.6
Overall Index	5.2	2.8	6.6	6.6	4.4	4.8	3.3

Source: PIB, Ministry of Commerce and Industry, Index of Eight Core Industries, dated 31.1.2013

The biggest threat was of reversal of capital. The increased integration of Indian financial markets with the rest of the world projected a slowdown of economy for a medium term. The worst effect of recession was on the share markets. The reversal of foreign equity capital affected the liquidity position and the share market crashed to their lowest. The sector wise impact of recession on Indian economy is discussed below

Impact on Capital Account

As seen in all cases around the world, the main impact of recession was on the capital account in India. The net capital flows from US witnessed a fall from US$17.3 billion in April-June 2007 to US$13.2 billion in April_June 2008. The portfolio investment by Foreign Institutional Investors (FII's) also witnessed a outflow of US$6.4 billion in April-September 2008 as compared with net inflow of US$ 15.5 billion in April-September 2007. The external commercial borrowings of the corporate sector declined from US$ 7.0 billion in April-June 2007 to US$ 1.6 billion in April-June 2008.

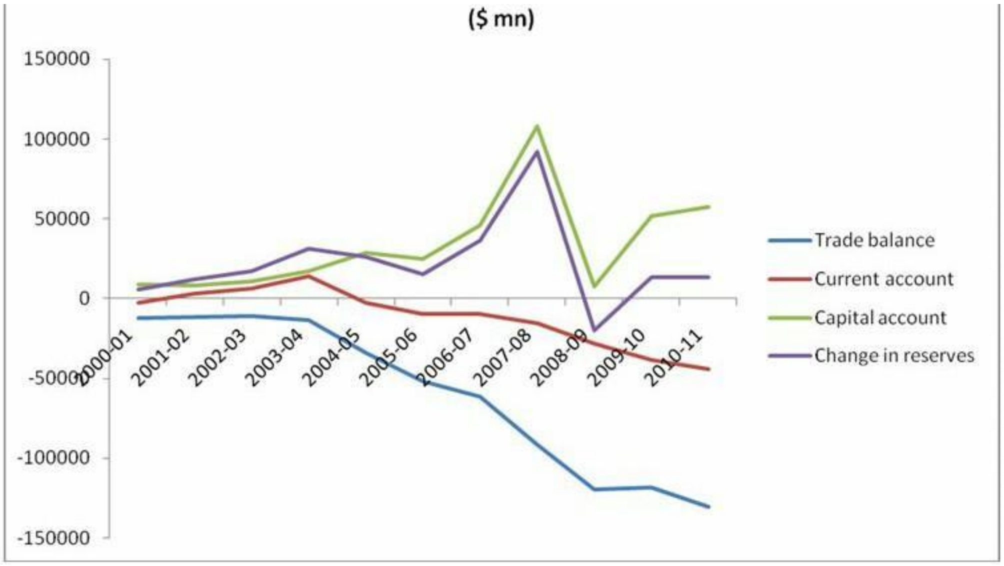

Graph 1.4: Impact on Capital Account in India

Impact on Stock Market

The financial turmoil caused by foreign institutional investors (FII's) left its mark on the Indian share market. The stock market prices fall severely on account of the withdrawals by FII's. The FII's had invested over Rs. 10,00,000 crores during January 2006 to 2008. This huge inflow of capital boosted the markets and the share market increased beyod 20,000 points. But the period of January 2008 to January 2009 witnessed huge capital outflows resulting into a sharp dip in the share markets below 9,000 points in just one year. The liquidity of stock markets was largely affected. The stock prices fell by more than 70 percent to 90 percent of their value. The situation is so worse that corporate are

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

finding it difficult to raise funds from fresh issues even after fixing offer prices below market quotations. The weakening of rupee against US dollar was also a big concern. Investors were seen to be shifting from equity stocks to mutual funds or fixed deposits.

Graph 1.5: Impact of Recession on Indian Stock Market

Impact on Indian Banking System

The strong fundamentals in Indian banking system prevented it from the global recession. Another important factor that prevented Indian banking sector from recession is that Indian banking system is not directly exposed to the sub-prime mortgages. It has very limited exposure to the US mortgage markets. Indian banks, whether public or private are financially sound, well regulated and well capitalized. The most important highlight of Indian banking system was its capital to risk-weighted assets ratio (CRAR). As per the Basel norms the CRAR should be around 8 percent whereas the CRAR of Indian banking system as on March 2008 was 12.6 percent. The detailed study undertaken by Reserve Bank of India (RBI) revealed that none of the Indian banks had any direct exposure to the sub-prime markets in the US or other markets. The RBI took a series of measures to facilitate efficient operations of financial markets and to ensure financial stability. Additional liquidity support was also extended to banks by RBI.

ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

Impact on Industrial Sector

Economic recession slows down the economic growth by reduction in industrial production. The Indian industrial sector projected a decline of 3.28 percent from8.1 percent in 2007 to 4.82 percent in 2008. Service sector, which contributes more than 50 percent in GDP and is assumed to be the major engine of growth, is slowing down. Towards the end of 2008, the industrial growth came down to 4 percent as compared to 9.8 percent in 2007 year end. Recession has also affected the export sector. The export driven sectors like gems, jewellery, leather, fabrics, agro produce were adversely affected. The export figures were the lowest during the last seven years. Exports contribute upto 20 percent to the GDP of India. The adverse effect on exports is alarming and is pressurizing global demand. The export growth has been negative and the government had scaled down the export target for 2008 to US$175 billion as

compared to US$ 200 billion for 2007.

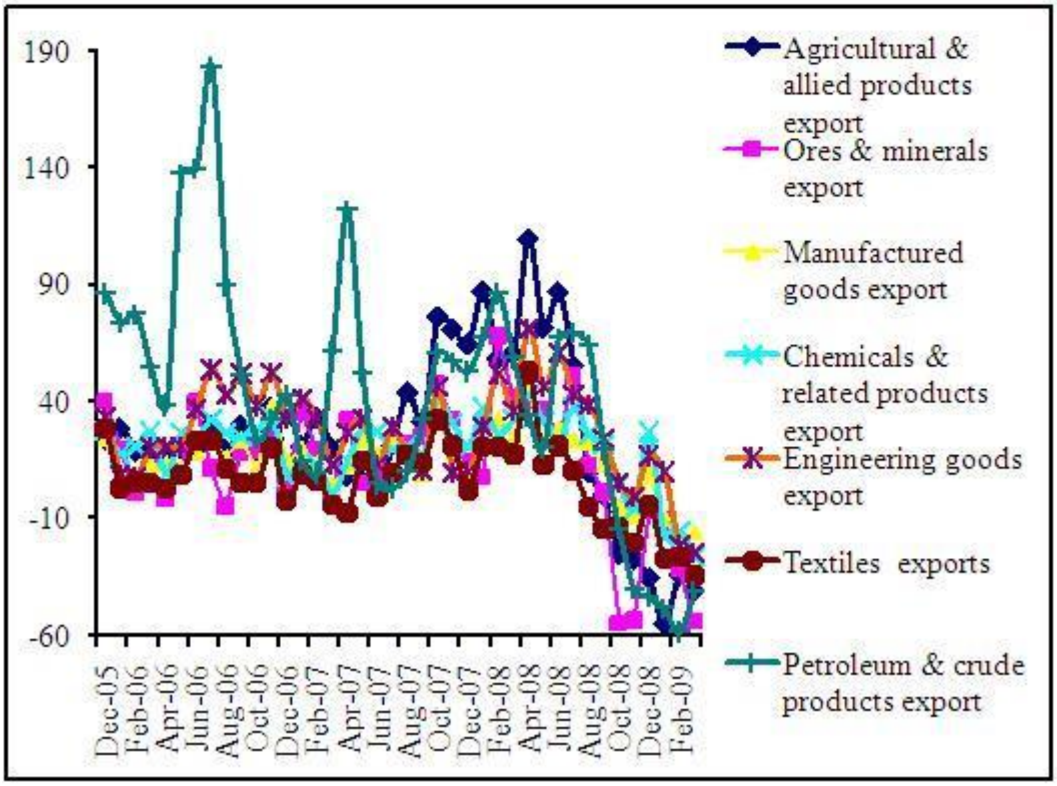

Graph 1.6: Impact of Recession of Various Sectors in India

Impact on Employment

Service sector and manufacturing sector generates large employment in India. If the manufacture sector and service sector is adversely affected by recession, it will also have a cascading effect on employment. The decrease in the number of foreign tourists has affected the hotel and tourism industry. Real estate, construction are also affected. The survey of Ministry and Employment reveals that five lakhs workers have lost jobs in 2008. The employment in service and manufacturing sector fell to 15.7 million as on December 2008 from 16.2 million as on September 2008. The employment in Automobile and transport sector declined by 12.45 percent and 10.18 percent respectively.

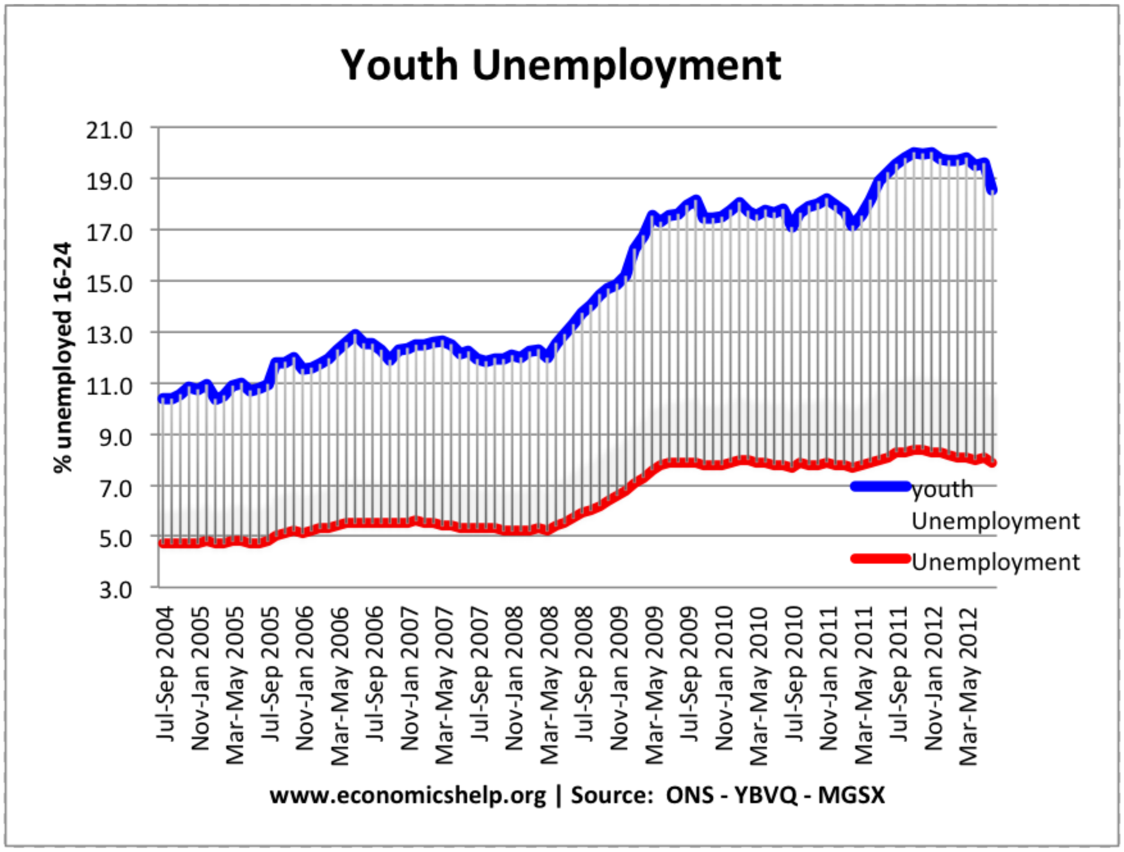

Graph 1.7: Impact of Recession on Employment

Impact on Poverty

The decrease in industrial production and increased number of job losses resulted in increase in poverty. The World Bank served a warning regarding high exposure to increased risk of poverty due to the economic recession. The Food and Agriculture Organization said that the economic recession has contributed towards the growth of hunger at global level. The situation in India is much worse. There will be 230 million undernourished people in India- the highest for any country in the world.

The developing countries, especially India, exhibited relative resilience to the recession. There was a fall in the share market prices and a pressure was seen in exchange rate. But the overall Investment sentiment was positive reflecting strong economic performance and favorable investment opportunities. The strong economic fundamentals, credit policy reforms better structuring of banking debt, large foreign exchange reserves, smaller presence of foreign banks etc, played key role in protecting Indian economy from the ill effects of recession.

But the recessionary economic situation has left its mark in the form of higher funding costs, large amount of current account deficits, decreased value of currency etc. it should be noted that Indian economy do not have direct exposure to troubled financial institutions, they are not immune to the adverse effects of financial crisis.

References:

1. Blanchard O, Dell'Ariccia G and Mauro P, 2010, Rethinking macroeconomic policy. IMF Staff Proposition Note, SPN/10/03. Washington, DC.
2. Fabozzi, Frank J., "Investment Management", Prentice Hall Ltd., 1995
3. G-20, 2009, Leaders' Statement, the Pittsburgh Summit.
4. Global Financial Crisis and the Indian Economy, S.Ashokkumar (Book), New Century Publications
5. Global Recession and Indian Economic Development (Book), S.Ashokkumar, New Century Publications
6. Global Recession in Historical and Recent Perspectives, D.Sambandhan and M.B. Mohandas, New Century Publications
7. Handle, Tim, "Pocket Finance", Economist Books, First South Asian Edition, 2001
8. IMF, 2009, World Economic Outlook. Washington, DC, October.
9. IMF, 2010, World Economic Outlook. Washington, DC, July (update).
10. Jan Priewe, 2010, What went wrong? Alternative interpretations of the global financial crisis, Berlin Working Papers on Money, Finance, Trade and Development.
12. Kuruvilla, Thomas, "Glossary of the Capital Market", Securities and Exchange Board of India, 1989 stment Company Institute, 38th Edition
13. Mutual Funds in India – Fact Book, UTI Institute of Capital Market, New Bombay, First Edition, 1995
14. Ostry JD, Gosh AR, Habermeier K, Chamon,M, Quereshi MS and Reinhardt DBS, 2010. Capital Inflows: The role of controls. IMF Staff Position Notes, SPN/10/04. Washington, DC.
15. Panitchpakdi S, 2010, Reconstructing economic governance: an agenda for sustainable growth and development. Mumbai, Export-Import Bank of India
16. Ryland, Philip, "Pocket Investor", Economist Books, First South Asian Edition, 2001
17. Shroff, Praveen, "The Stock Markey Dictionary – Guide to Dalal Street Money- Talk", Vision Books, Third Edition, 1997
18. The Financial and Economic Crisis of 2008-2009 and Developing Countries, UNCTAD/GDS/MDP/2010/1, ISBN 978-92-1-112818-5
19. UNCTAD, 2009, Trade and Development Report 2009: Responding to the Global Crisis; Climate Change Mitigation and Development. New York and Geneva, United Nations

❑❑❑